COMPLETE NOTES

ON

BY

A. R. SHASTRI

KRISHNA BOOK DEPOT

AMBALA CITY

Price Rs. 1/8/-

Cooperative Press Ltd.; Ambala City.
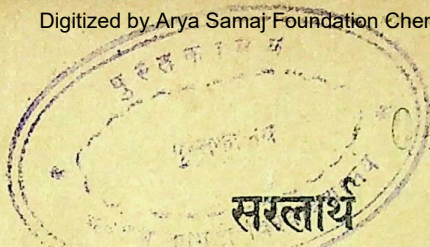
सरलार्थ

१—जिसके मस्तक पर गंगा की रेखा के समान भाग की चन्द्रमा की कला है। उस शिवकी कृपा से सज्जनों के मनोरथ में सफलता हो ॥

गंगा के तट पर पाटली पुत्र नाम का शहर था। वहां स्वामी के जो सारे गुण होते हैं उनसे युक्त सुदर्शन नाम का राजा था। उस राजा ने एक बार किसी से पढ़े हुए दो श्लोकों को सुना।

२—बहुत शंकाओं को दूर करने वाला, आंखों से परे की बात को दिखाने वाला, शास्त्र ही सब की आंख है। जिस के पास शास्त्र नहीं है वह अन्धा है ॥

(२) यौवन (जवानी), धन, अधिकार, मूर्खता इन में से यदि एक भी किसी में हो तो वह अनर्थ का कारण बनता है। यहां यह चारों ही हों, वहां तो कहना ही क्या। यह सुनकर शास्त्रों को न जानने वाला, नित्य बुरे मार्ग पर चलने वाले निज पुत्रों को शास्त्र को न जानने वालों को देखकर, वह दुःखी राजा सोचने लगा :—

(३) ऐसे पुत्र के पैदा होने से क्या लाभ ? जो न विद्वान् हो, न धर्मात्मा। काणी आंख से क्या लाभ ? वह केवल आंख की वेदना के लिए ही है ॥

(४) वास्तव में वही पैदा हुआ है, जिससे वंश उन्नति को प्राप्त हो। इस बदलने वाले संसार में कौन मर कर पैदा नहीं होता।

(५) गुणी एक पुत्र अच्छा है, और सौ मूर्ख पुत्र अच्छे नहीं हैं। एक चांद अन्धकार को दूर करता है, किन्तु तारों का समूह भी दूर नहीं कर सकता।

(६) जिसने किसी भी पवित्र तीर्थ में अति कठिन तपस्या की है, उस का पुत्र आज्ञाकारी, धर्मात्मा और बुद्धिमान होता है।

सो अब कैसे मेरे पुत्र गुणवान् बनाएं जाएं। तब उस भूपति ने ब्राह्मणों (पण्डितों) की सभा बुलवाई।

राजा बोला; ऐ पण्डितो, सुनो।

कोई ऐसा विद्वान् है, जो सदा उल्टे मार्ग पर जाने वाले, जिन्हों ने शास्त्र को नहीं पढ़ा, ऐसे मेरे पुत्रों को नीति शास्त्र के उपदेश से सुधार सकता है? क्योंकि—

(७) सोने के मेल से कांच मरकत मणि की शोभा को धारण कर लेता है, ऐसे ही अच्छे मिलाप (सत्सङ्गति) से चतुरता को प्राप्त कर लेता है॥

इतने में बृहस्पति की तरह सारे नीति शास्त्र के तत्व को जानने वाला विष्णु शर्मा नाम का पण्डित बोला। हे देव! यह राजपुत्र बड़े कुल में उत्पन्न हुए हैं। सो मुझ से नीति नहीं सिखाए जा सकते हैं। क्योंकि:—

(८) कुपात्र में क्रिया लगाई हुई फलदायक नहीं होती सैकड़ों व्यापारों से भी बगुला तोते की प्रकार नहीं पढ़ाया जा सकता।

(९) इस गोत्र (खानदान) में गुणों से अयुक्त सन्तान उत्पन्न नहीं होती। पद्मराग मणियों की खान में काचमणि का जन्म कैसे हो सकता है॥

(१०) कीड़ा भी पुष्प की सङ्गति (मेल) से श्रेष्ठ लोगों के सिर पर चढ़ता है। बड़ों से प्रतिष्ठित किया हुआ पत्थर भी देवता पन को ग्रहण (धारण) कर लेता है।

(११) जैसे उदयाचल पर्वत की चीज़ सूर्य के समीप होने के कारण चमकती है, ऐसे सत्सङ्गति से मूर्ख भी चतुराई को पा लेता है। सो इन मेरे पुत्रों को नीति शास्त्र का उपदेश देने के लिए आप प्रमाण हैं। यह कहकर उस पण्डित विष्णु शर्मा की सेवा में सम्मान पूर्वक पुत्रों को हवाले कर दिया।

इसके बाद राजभवन के उपर सुख से बैठे हुए राजपुत्रों को प्रसङ्ग के क्रम से वह पण्डित बोला।

(१२) बुद्धिमानों का समय काव्य शास्त्र के विनोद से व्यतीत होता है। और मूर्खों का समय नींद या लड़ाई झगड़ों में गुज़रता है॥

सो आपकी प्रसन्नता के लिए कव्वे तथा कछवे आदि की अजीब कहानी कहता हूँ।

राजपुत्रों ने कहा—आर्य कहो।

विष्णु शर्मा बोला—सुनो, अब मित्र लाभ आरम्भ होता है जिस मित्रलाभ का यह पहला श्लोक है—

(१३) उपाय हीन, धन से हीन बुद्धिमान आपस में यदि पक्के मित्र हों तो कव्वे, कछवे, हरिण, और चूहे की तरह अपने काम को सिद्धकर लेते हैं॥

राज पुत्रों ने कहा—यह कैसे ?

विष्णु शर्मा ने कहा।

———

कव्वे, कछवे, हरिण और चूहे की कहानी।

गोदावरी नदी के तट पर एक बड़ा भारी शाल्मली का वृक्ष था, वहां कई दिशाओं से आकर रात में पक्षी निवास किया करते थे।

एक बार रात के खत्म होने पर कुमुदिनियों के स्वामी भगवान् चांद के छिप जाने पर, जागते हुए लघुपतनक नाम वाले कागे (कव्वे) ने मौत के समान आते हुए व्याध को देखा।

उस को देख सोचा—आज तो प्रातः काल ही अशुभ दर्शन हुआ। न मालूम यह अशुभ दर्शन क्या बुरा फल लाएगा, यह कह कर उसी का पीछा करता हुआ दुःखी हो कर चल पड़ा।

इस के बाद उस व्याध ने चावलों के दानों को फैला कर जाल डाल दिया और वह शिकारी छुप कर बैठ गया।

उसी समय चित्रग्रीव नाम वाले कबूतरों के राजा ने कुटुम्ब के साथ आकाश में घूमते हुए, चावल के दानों को देखा।

इसके बाद कबूतरों के स्वामी ने चावल के दानों के लोभी कबूतरों को कहा।

इस निर्जन बन में चावलों के दानों का कैसे होना हुआ है? पहिले अच्छी प्रकार ध्यान से देखिए, मैं तो इस में भलाई नहीं देख रहा हूँ। इन चावलों के दानों के लोभ से हमारी भी वही दशा हो जाएगी जैसे:—

(१४) कङ्कण के लोभ से, लांघने के अयोग्य कीचड़ में डूबा हुआ वह पथिक वृद्ध व्याघ्र से पकड़ा गया और मारा गया।

कबूतरों ने पूछा—यह कैसे ?

चित्रग्रीव ने कहा।

———

कङ्कण के लोभी पथिक की कहानी।

मैं ने एक समय दक्षिण के बन में घूमते हुए देखा—सरोवर के तट पर स्नान किए हुए और कुशा हाथ में लिए हुए एक वृद्ध व्याघ्र ने कहा।

ऐ मुसाफिरो। यह स्वर्ण का कङ्कन है। इसे लो। पुनः लोभ से खिंचे हुए किसी पथिक ने कहा—कङ्कन की प्राप्ति भाग्य से हो सकती है पर इस खतरे वाले कर्म में मन का झुकाव ठीक नहीं है।

(१५) किसी बुरी वस्तु से मन चाही इच्छा के पूरा हो जाने पर भी शुभ फल नहीं निकलता। जिस अमृत में विष की मिलावट हो, वह अमृत भी मौत का कारण बनता है॥

किन्तु सब जगह धन इकट्ठा करने में लगना सन्देह ही है।

(१६) मनुष्य शंका आरूढ़ न हो कर भलाइयों को नहीं देखता फिर सशयों में पड़ कर यदि जीता है तो भलाई को देखता॥

सो पहले मैं ध्यान से देखता हूँ।

पथिक बोला। तेरा कङ्कण कहां है ?

व्याघ्र ने हाथ फैला कर दिखाया।

पथिक बोला, मुझे मारने वाले पर कैसे विश्वास हो।

व्याघ्र बोला। ऐ पथिक, सुन, पहले मैं ही जवानी की दशा में अति दुराचारी था।

अनेक गौओं और मनुष्यों को मारने से मेरे पुत्र, और स्त्री मर गई थी। और मैं वंश हीन हो गया, फिर मैं धर्मात्माओं

से आज्ञा किया गया, कि आप दान धर्म आदि का आचरण करो।

उस के उपदेश से अब मैं स्नानशील, दानी, वृद्ध और नख दंत हीन होने पर भी कैसे विश्वास का पात्र नहीं हूँ ? क्योंकि—

(१७) यज्ञ करना, वेद पढ़ना, दान देना, तप करना, सत्य बोलना, धर्म, क्षमा, लोभ न करना, यह धर्म का ८ प्रकार का मार्ग बताया गया है ॥

(१८) इन ८ प्रकार के मार्गों से पहले चार यज्ञ, वेद पठन, दान तप, पाखण्ड के लिए भी सेवन किए जाते हैं। पिछले चार। सत्य, धैर्य, क्षमा, लोभ, तो महात्मा में ही रहते हैं।

और मेरी इतनी लोभ से विरक्ति है, जिस के कारण मैं अपने हाथ में पड़े हुए सोने के कङ्कण को भी जिस किसी को देना चाहता हूँ। तो भी "व्याघ्र मनुष्य को खा लेता है" यह लोगों का कहना मुश्किल से दूर किया जा सकता है।

और मैं ने धर्म शास्त्र पढ़े हैं।

१६ ऐ पाण्डु नन्दन, जैसे निर्जन प्रदेश में वर्षा और भूख से पीड़ित मनुष्य में भोजन सफल होता है, वैसे ही दरिद्र को जो दान दिया जाता है, वह सफल होता है ॥

(२०) जैसे हमें अपने प्राण प्यारे हैं, वैसे ही और जीवों को भी। साधु लोग अपनी समता से जीवों पर दया करते हैं ॥

(२१) मनुष्य निरादर में, दान में, दुःख सुख में, प्रिय में अपनी सामनता से ही प्रमाण को प्राप्त करता है ॥

और तु तो बहुत ही बुरी दशा में है। इस लिए यह कङ्कण

में तुझे देने के लिए यत्नशील हूँ। वैसे कहा भी है।

(२२) हे कुन्ती पुत्र, तू निर्धनों का पालन कर। धनी को धन मत दे। बीमार को दवाई हितकर है। बीमारी से रहित को दवाई का क्या लाभ ?

(२३) देने योग्य जो दान देश; काल और पात्र का विचार रखते हुए ऐसे मनुष्य को दिया जाए, जिस से अपना कोई प्रयोजन नहीं। उस दान को दान कहते हैं।

सो सरोवर में स्नान कर सोने के कङ्गन को ले।

फिर जब तक वह मुसाफिर उस व्याघ्र के वचन पर विश्वास किए हुए लोभ के कारण सरोवर में स्नान करने की इच्छा वाला त्यों ही कीचड़ में फसं गया और भाग नहीं सका।

कीचड़ में फंसे उसको देखकर व्याघ्र ने कहा ओ कीचड़ में गिर गया है, इस लिए मैं तुझे उठाता हूँ। यह कहकर, अहिस्ता २ समीप जाकर उस व्याघ्र से पकड़े उस मुसाफिर ने सोचा।

(२४) दुष्ट धर्म शास्त्र पढता है, यह कारण नहीं है और न ही वेद का पढ़ना बुरी आत्मा वाले के परिवर्तन में कारण है। इस विषय में स्वभाव बली है। जैसे स्वभाव से गौ का दूध मीठा होता है।

सो मैं ने अच्छा नहीं किया जो इस मारने वाले पर विश्वास कर लिया।

जैसे कहा है।

(२५) नदियों का, शास्त्रधारियों का, नाखूण वालों का, सिंगधारियों का, स्त्रियों का और राजकुल का विश्वास नहीं करना चाहिए॥

(२६) सब के स्वभाव ही परीक्षा किए जाते है, उनके दूसरे गुण नहीं परीक्षा किए जाते है। सब गुणों को छोड़ कर स्वभाव ही शिर पर है। अर्थात् स्वभाव ही सब में प्रधान है ॥

(२७) वह आकाश में घूमने वाला' अन्धकार का विनाशक हजार किरणों को धारण करने वाला, तारों के बीच में विचरण करने वाला चांद भी प्रारब्ध के वश में राहु से ग्रास लिया जाता है। माथे पर लिखे हुए को मिटाने में कौन समर्थ है ॥

ऐसे सोचता हुआ वह व्याघ्र से मारा गया और खा लिया गया।

इस लिए मैं कहता हूं-कङ्कण के लोभ से इत्यादि। इसलिए सर्वथा बिना विचारे काम नहीं करना चाहिए, क्योंकि—

(२८) पचा हुआ अन्न, वश में की हुई स्त्री, अच्छी तरह सेवन किया हुआ राजा, सोचकर कहा हुआ वचन और विचार कर जो किया गया हो वह काम कभी विकार को प्राप्त नहीं होता है। खराबी का कारण नहीं बनता ॥

उसका बचन सुनकर कोई कबूतर घमंड से बोला।

ओ! ऐसे क्यों कर रहे हो।

(२९) विपत्तिकाल के प्राप्त होने पर ही बड़ों का वचन ग्रहण करना चाहिए पर सर्वत्र ऐसा करने से भोजन में भी प्रवृत्ति नहीं हो सकती अर्थात भोजन भी नहीं मिल सकता ॥

(३०) ससांर में खाने पीने की सब चीजें सन्देह से घिरी हुई हैं। फिर प्रवृत्ति कहां की जाए? और किस प्रकार जीवित रहा जाए ॥

(३१) ईर्ष्या करने वाला, घृणा करने वाला, असन्तोषी, क्रोधी, सदा शंकित रहने वाला और दूसरे के भाग्य पर जीने वाला, ये छः दुःख को भोगने वाले हैं। इन्हें सदा दुःख रहता है ॥

यह सुनकर सभी कबूतर वहां बैठ गए।

क्योंकि—

(३२) सोने के मृग का जन्म असम्भव है, तो भी राम मृग के लिए ललचा गए। अर्थात्- राम ने मृग के लिए लोभ किया।

प्राय: विपत्ति काल के प्राप्त होने पर पुरुषों की बुद्धियां भी मलीन हो जाती हैं ॥

इसके बाद सभी जाल में पकड़े गए। इसके बाद जिसके वचन से जाल में पकड़े गए थे, सब उसका तिरस्कार करने लगे, क्योंकि—

(३३) समूह के आगे न जाए, क्योंकि काम के सफल होने पर बराबर फल होता है। यदि काम बिगड़ जाए तो पहले बोलने वाला (मुखिया) ही मारा जाता है ॥

उसका तिरस्कार हुआ सुनकर चित्रग्रीव बोला। यह इसका दोष नहीं है। विपत्ति के समय घबरा जाना कायर पुरुष की निशानी है। सो अब धैर्य का सहारा लेकर सोचो। क्योंकि—

(३४) विपत्ति में धैर्य, ऐश्वर्य में क्षमा, सभा में बोलने की चतुरता, युद्ध में पराक्रम, यश में रूचि, वेद पढ़ने में लगन, महात्माओं में स्वभाव से ही सिद्ध हैं। अर्थात ये गुण महात्माओं में स्वाभाविक रूप में ही विद्यमान हैं ॥

(३५) सम्पत्ति में जिसे खुशी न हो, विपत्ति में जिसे विषाद न हो, रण में भीरुता न हो ऐसे तीनों भुवनों में तिलक अर्थात-शिरोमणि किसी विरले पुत्र को माता जन्म देती है ॥

(३६) इस संसार में ऐश्वर्य चाहने वाले पुरुष को छः दोष छोड़ देने चाहियें। नींद, सुस्ती, भय, क्रोध, आलस्य और देर में काम करने का स्वभाव ॥

अब भी ऐसा ही करो, सभी एक दिल होकर जाल को ले उड़ो। क्यों कि—

(३७) छोटी २ चीजों का समूह भी काम सफल करने वाला होता है। रस्सी के रूप में आए हुए तिनकों से मतवाले हाथी बान्ध लिए जाते हैं ॥

यह सोच कर सभी पक्षी जाल ले उड़े।

इसके बाद वह व्याध उन जाल के हरने वालों को दूर से देखकर इनके पीछे दौड़ता हुआ सोचने लगा।

(३८) ये मिले हुए पक्षी मेरे जाल को हर कर ले जा रहे हैं। जब यह गिरेंगे मेरे वश में हो जाएंगे।

इस के पीछे उन पक्षियों के आखों से ओझल हो जाने पर वह व्याध लौट गया।

व्याध को लौटा हुआ देखकर कबूतरों ने कहा कि अब क्या करना चाहिए। चित्रग्रीव बोला।

(३९) माता, मित्र, पिता ये तीनों स्वभाव से हित करने वाले हैं। किन्तु, और लोग किसी कार्यवश हित की बुद्धि वाले होते हैं ॥

सो हमारा मित्र हिरण्यक नाम वाला चूहों का राजा गण्डकी नदी के तट पर चित्रवन में रहता है। वह हमारे बन्धनों को काटेगा। यह सोच कर सब पक्षी हिरण्यक के बिल के पास गए। हिरण्यक सदा हानि के डर से सौ द्वार वाला बिल बनाकर रहता था।

तब हिरण्यक कबूतरों के गिरने के भय से घबराया हुआ चुप हो रहा।

चित्रग्रीव बोला। मित्र हिरण्यक! हम से क्यों नहीं बोलते॥

तब हिरण्यक उसके बचन को पहचान कर, शीघ्रता से बाहर निकल कर बोला। अहो! पुण्यात्मा हूँ। मेरा प्यारा मित्र चित्रग्रीव आया है।

जाल में बन्धे हुए उन कबूतरों को देखकर आश्चर्य समेत ठहर कर बोला, मित्र, यह क्या ?

चित्रग्रीव बोला—मित्र! यह हमारा पूर्व जन्म के कर्मों का फल है।

(४०) रोग, शोक, संताप, बन्धन और बुरी आदतें यह प्राणियों के अपने अपराध रूपी वृक्षों के फल हैं॥

यह सुनकर हिरण्यक चित्रग्रीव के बन्धन को काटने के लिए शीघ्र पास आ गया।

चित्रग्रीव बोला—ऐसा मत कर, हमारे आश्रितों के फन्दे पहले काटो, तब मेरा फन्दा काटना।

हिरण्यक ने भी कहा— मैं थोड़ी शक्ति वाला हूँ। दांत मेरे कोमल हैं। इस लिए इन सब के बन्धन को काटने के लिए

मैं कैसे समर्थ हूँ। सो जब तक मेरे दांत नही टूटते तब तक मैं तुम्हारे जाल को काटता हूँ। इसके बाद जहां तक हो सका इनके जाल को काटूंगा।

चित्रीग्रीव बोला—ऐसा ही सही। फिर भी शक्ति के अनुसार इनके बन्धन को काटो।

हिरण्यक ने कहा—"अपने शरीर के त्याग से नौकरों की रक्षा करना" नीति के विद्वानों की सम्मति नहीं है।

(४१) मुसीबत के लिए धन की रक्षा करे, और धन से स्त्री की रक्षा करे, परन्तु स्त्री और धन से भी अपनी रक्षा करे। क्योंकि सब से बढ़कर शरीर की रक्षा जरूरी है॥

(४२) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनकी स्थिति के कारण प्राण ही हैं। उसको नाश करने वाले ने क्या नष्ट नहीं किया है, और उनकी रक्षा करते हुए ने क्या नहीं बचा लिया॥

चित्रग्रीव बोला—हे मित्र नीति ऐसी है, पर मैं अपने सेवकों के दुख को सहने के सर्वथा असमर्थ हूँ। इसलिये मैं ऐसा कहता हूँ।

(४३) जाति, धन, और गुणों के विचार से इनकी मेरे साथ समता है, पर मेरी प्रभुता का बल कब और क्या होगा। बोल॥

(४४) बिना वेतन भी यह मेरा साथ नहीं छोड़ते। अतः मेरे जीवन दान से भी इन मेरे सेवकों को जीवित करो।

यह सुनकर हिरण्यक प्रसन्न मन एवं रोमाँचित हुआ बोला—शाबाश मित्र! शाबाश। इन सेवकों पर प्यार करने के भाव से त्रिलोकी की प्रभुता भी तुम्हारे लिए उपयुक्त हो।

यूं कह कर उस ने सब के बन्धन काट दिए।

तब हिरण्यक सब को पूज कर बोला। मित्र चित्रग्रीव! जाल बंधन के विषय में दोष समझ कर चित्त में बिलकुल अपना तिरस्कार नहीं करना क्योंकि—

(४५) जो पक्षी सौ योजन से भी अधिक दूर से पृथ्वी पर पड़े हुए मांस के टुकड़े को देखता है। दुःख का समय आने पर वही पक्षी जाल के बन्धन को नहीं देख सकता॥

(४६) चन्द्रमा और सूर्य का राहु से ग्रासा जाना, हाथी और सांप का भी बंधन में आना, और बुद्धिमान् पुरुषों की कंगाली को देखकर "प्रारब्ध ही बल वाली है" यह मेरी राय है॥

(४७) नभ में एकान्त में फिरने वाले पंछी भी आपत्ति में पड़ जाते हैं। बुद्धिमान पुरुष गहरे पानी वाले समुद्र से भी मछलियां पकड़ लेते हैं। इस संसार में, बुरा कर्म क्या है, और भला काम क्या है, और अच्छा स्थान लेने में क्या लाभ है॥

ऐसा समझ कर, अतिथी संस्कार कर के, और मिल कर चित्रग्रीव उस से बिदा किया हुआ परिवारर के साथ मन पसंद देश को गया।

हिरण्यक भी अपने बिल में दाखिल हो गया।

इसके पश्चात् लघुपतनक नामक कव्वा जो पहिले सब वृतान्त देख चुका था—आश्चर्य से बोला—ऐ हिरण्यक! तू प्रशंसा के योग्य है, इसलिये मैं भी तुम्हारे साथ मैत्री चाहता हूँ। इसलिये मुझ पर मित्रता द्वारा अनुग्रह करो।

यह सुनकर हिरण्यक भी अन्दर ही से बोला—तू कौन है?

वह बोला—मैं लघुपतनक नामक कव्वा हूँ।

हिरण्यक हंसकर बोला—तेरे साथ दोस्ती कैसी? यतः—

(४८) संसार में जो जिस के साथ मिल सकता हैं बुद्धिमान उस को उसी के साथ जोड़े। मैं अन्न हूँ, तू खाने वाला है। हम दोनों की कैसी प्रीति होगी॥

(४९) खुराक और खाने वाले की प्रीति दुःख का कारण है। गीदड़ से जाल में फंसाया हुआ वह मृग कव्वे द्वारा रक्षा किया गया॥

कव्वा बोला—यह कैसे? हिरण्यक कहने लगा।

कव्वे से रक्षा किए गये मृग की कथा।

मगध देश में चम्पकवती नाम का बड़ा भारी वन था। उसमें बहुत देर से बड़े प्रेम के साथ एक हिरण और कव्वा रहते थे। एक दिन मोटे अङ्गों वाला वह मृग अपनी इच्छा से फिरता हुआ किसी गीदड़ से देखा गया।

उसे देख कर गीदड़ सोचने लगा—ओह! किस प्रकार मैं इस स्वादु मांस को खाऊं। अच्छा पहिले मैं विश्वास पैदा करता हूं।

यह सोच कर पास जा कर बोला—मित्र, तू खुश तो है?

मृग ने कहा—तू कौन है?

वह बोला—मैं क्षुद्र बुद्धि नाम वाला गीदड़ हूँ। यहां वन में बन्धुओं से हीन मुरदे की तरह रहता हूँ।

अब तुझ मित्र को पा कर बन्धु वाला मैं जीव लोक में फिर से दाखिल हुआ हूँ।

अब मैं हर प्रकार तेरा दास बनकर रहूँगा।

मृग ने कहा—ऐसा ही हो।

इसके बाद किरणों की माला वाले सूर्य-भगवान के अस्त हो जाने पर वे दोनों मृग के स्थान पर गए।

वहां चम्पक वृक्ष की शाखा पर सुबुद्धि नाम का कव्वा पुराना मित्र रहता था।

उन दोनो को देखकर कव्वा बोला—हे मित्र चित्राङ्ग। यह दूसरा कौन है ?

मृग ने कहा—यह गीदड़ है, हमारे साथ मित्रता की इच्छा से यहां आया है।

कव्वा बोला—ऐ मित्र! अकस्मात आए हुए के साथ मित्रता करना उचित नहीं।

और वैसे कहा है।

(५०) जिसके कुल और स्वभाव का पता नहीं, उसे कभी रहने का स्थान नहीं देना चाहिए। क्योंकिः—

बिल्ले के दोष से जरद्गव गिद्ध मारा गया॥

जरद्गव गिद की कहानी

गंगा के किनारे गृध्रकूट नामक पहाड़ पर एक बड़ा भारी पाकर का वृक्ष था। उसके खोल में मन्दभाग्य से गले हुए नाखुन और नेत्रों वाला जरद्गव नाम का गिद्ध रहता था उस पर दया कर के उसके जीवन के लिए उस वृक्ष पर रहने वाले पक्षी अपनी खुराक में से कुछ निकाल कर देते थे। उस से वह जीता था, और पक्षियों के बच्चों की रक्षा करता था।

इसके बाद कभी दीर्घकर्ण नाम का बिलाव पक्षियों के बच्चों को खाने के लिए वहां आ गया। तब उसे आता हुआ देख कर भय से घबराये हुये पक्षियों के बच्चों ने शोर मचाया।

यह सुनकर जरद् गाव बोला—यह कौन आता है ?

दीर्घ करण के गिद्ध को देखकर डर स कहा—हाय !

मैं मारा गया। अब इसके सामने से दौड़ना कठिन है। सो जैसा होना होना है, वह हो। पहले विश्वास जमाकर इस के पास जाता हूँ। क्योंकि—

(५१) तब तक भय से डरना चाहिये जब तक कि वह भय सामने न आया हो। सामने आए हुए भय को देख कर पुरुष को जैसा उचित हो वैसा उपाय करना चाहिये॥

यह सोच कर पास जा कर बोला—आर्य ! मैं आप को नमस्कार करता हूँ।

गीध बोला—तू कौन है ?

वह बोला—मैं बिलाव हूं।

वहबोला—दूर हट, नहीं तो मुझ से मारा जाए गा।

बिलाव बोला—हमारी बात तो सुनिए। तब यदि मैं मारने योग्य हूँ, तो मार दें। क्योंकि—

(५२) क्या कोई केवल जाति के कारण कहीं मारा जाता है या पूजा जाता है। काम को जान कर मारने या पूजने योग्य पुरुष होता है॥

गीध बोला—बोल तू यहां किस लिए आया है ?

वह बोला मैं यहां गाँव के किनारे पर सदा स्नान करने वाला, ब्रह्मचारी, मांस न खाने वाला, चान्द्रायण व्रत करता हूँ।

'तुम धर्म के ज्ञान में लगे हुए हो' इस तरह विश्वास पात्र सब पक्षी सदा मेरे आगे तारीफ़ करते हैं। अतः विद्या और आयु में बड़े आप से मैं धर्म सुनने के लिए यहां आया हूँ। और आप ऐसे धर्मात्मा हैं कि मुझ अतिथि को भी मारने के लिए तैयार हो गये हैं। गृहस्थ का धर्म तो यह है।

(५३) घर में आए शत्रु का भी उचित आदर करना चाहिए। जैसे—वृक्ष अपने काटने वाले के समीप गई हुई छाया को नहीं हटाता ॥

यदि अन्न नहीं है, तो प्रीति वचन से भी अतिथि का आदर करना चाहिए। क्योंकि :—

(५४) तिनकों का बना हुआ आसन, भूमि (बैठने का स्थान) जल और चौथी मीठी बाणी—ये चीजें भले पुरुषों के घर से कभी समाप्त नहीं होतीं ॥

(५५) अतिथि जिसके घर से नाराज़ होकर वापस चला जाए, वह समझो, उसको अपने पाप दे कर और उस के पुण्य लेकर जाता है ॥

(५६) ऊंची जाति वाले के घर नीच जाति का भी मनुष्य आजाय, तो उसकी उचित रीति से पूजा करनी चाहिए। क्योंकि अतिथि सब देवताओं का रूप होता है ॥

गिध बोला—क्योंकि ' बिलाव मांस खाने वाला होता है ' और यहां पक्षियों के बच्चे रहते हैं। इस लिए मैं ऐसा कहता हूँ।

वह सुनकर बिलाव भूमि को छूकर, कानों को छूकर यानी शिव २ करता हुआ बोला—धर्म शास्त्र सुनकर, विरक्त हुए हुए मैं ने कठिन कठोर चान्द्रायन व्रत आरम्भ किया है।

क्योंकि आपस में झगड़ते हुए धर्म शास्त्रों में अहिंसा ही परमोधर्म है। इसके बारे में सब की एक मति है क्योंकि—

(५७) जो मनुष्य सब प्रकार की हिंसाओं से रहित हैं, जो सब प्रकार की बातों को सहने वाले हैं और जो सब के आश्रय बसे हुए हैं, वे मनुष्य स्वर्ग में जाने वाले होते हैं॥

(५८) जो मनुष्य जब, जिसका मांस खाता है उन दोनों का फरक देखो। एक की तो क्षण भर की प्रीति होती है, और दूसरे के प्राण चले जाते हैं।

(५९) जो पेट अपने आप वन में पैदा हुए शाक से भी भर जाता है तो इस जलते हुए पेट के लिए कौन इतना बड़ा पाप करे?

इस तरह विश्वास जमा कर वह बिलाव वृक्ष की खोह में रहने लगा।

फिर कुछ दिनों के बाद वह बिलाव उन पक्षियों के बच्चों को पकड़ २ कर बिल में लाकर प्रतिदिन खाने लगा।

जिन के बच्चे खाए गए थे, उन्होंने शोक से घबराकर और विलाप करते हुए इतस्ततः (इधर उधर) ढूंढना शुरु किया।

यह जान कर वह बिलाव खोल से निकल कर बाहिर भाग गया।

इसके बाद इधर उधर खोजते हुए पक्षियों ने वहां वृक्ष की खोल में बच्चों की हड्डियां पाईं। फिर इसी जरद्गव ने ही हमारे बच्चे खाये हैं। ऐसा सब ने निश्चय कर के गीध को मार दिया।

इस लिए मैं कहता हूँ—जिसका कुलशील न जाना हो ऐसे किसी आदमी को भी निवास नहीं देना चाहिए-इत्यादि ।

यह सुन कर वह गीदड़ क्रोध से बोला—मृग के पहले दर्शन के दिन आप भी अपरिचित कुलशील वाले ही थे, तो कैसे आपके साथ इसकी प्रेम की लगन दिनों दिन बढ़ रही है।

(६०) यह अपना है, और यह पराया यह थोड़े दिल वालों की गिनती है। पर ऊंचे विचार वालों की तो सारी पृथ्वी ही अपना परिवार है॥

अतः जैसे यह हिरण मेरा मित्र है वैसे तू भी है।

मृग बोला—इसे विवाद से क्या लाभ, हम सब को एक ही स्थान पर विश्वास की बातों से सुख पूर्वक रहना चाहिए। क्योंकि—

(६१) न कोई किसी का मित्र है, और न किसी का शत्रु है। काम होने पर मित्र और शत्रु बन जाते हैं॥

कव्वे ने कहा—ऐसा ही हो।

एक दिन चुप चाप गीदड़ बोला—मित्र मृग! इस बन के एक देश में हरियावल से भरा हुआ खेत है। वह मैं तुझे ले जाकर दिखा सकता हूँ।

वैसा करने पर मृग प्रति दिन वहां जाकर घास खाता था फिर खेत के स्वामी ने देखकर वहां जाल लगा दिया। इस के बाद दूसरी बार मृग आया और जाल में बन्धकर सोचने लगा कि बिना मित्र के कौन मुझे इस काल के बन्धन के समान शिकारी के बन्धन से बचाने के लिए समर्थ है। उसी समय गीदड़ वहीं आकर उपस्थित हुआ और सोचने लगा कि छल के कारण हमारे मन की इच्छा पूरी हो गई है।

काटे जा रहे इस मांस और रक्त से भरी हुई हड्डियों को मैं अवश्य प्राप्त कर सकूंगा। वह मेरा अधिक समय तक भोजन बनेंगी। मृग उसे देखकर प्रसन्न हो कर कहने लगा—

मित्र गीदड़ ! मेरे बन्धन को काटो। मुझे जल्दी बचाओ।

(६२) विपत्ति में मित्र को परखना चाहिए। युद्ध में बलवान् को, कर्ज में दयानतदार को, धन के न होने पर स्त्री को, दुःख में सम्बन्धियों को परखना चाहिए॥

गीदड़ बार २ जाल को देखकर सोचने लगा, यह बन्धन बड़ा सख्त है। और बोला—मित्र, यह पाश तन्दी से बने हुए हैं। आज रविवार के दिन इन्हे दान्तों से कैसे छुऊं? हे मित्र यदि तू दिल में बुरा न समझे तो सवेरे जो तू कहेगा, मैं जरूर ही करूंगा-यह कहकर उस के समीप ही अपने आप छिप कर बैठ गया।

इसके बाद वह कव्वा सायंकाल मग को आया हुआ न देखकर इधर उधर ढूंढने लगा, और उसे इस अवस्था में पड़ा हुआ देखकर बोला—मित्र ! यह क्या है ?

मृग ने कहा—मित्र का कहना न मानने का यह फल है। वैसे कहा है—

(६३) जो मनुष्य हित चाहने वाले मित्रों का वचन नहीं सुनता, उसके समीप विपत्ति रहती है। वह मनुष्य शत्रुओं को प्रसन्न करने वाला होता है॥

कव्वा बोला—वह ठग कहां है ?

मृग ने कहा—मेरे मांस की इच्छा वाला यहां ही बैठा है।

कव्वा बोला—मैं ने पहिले ही कहा था।

तब कव्वा लम्बी सांस भर कर बोला हे ठग ! तुझ पापी

ने क्या किया। क्योंकि—

(६४) संसार में मीठे २ वचनों से बातचीत करके फुसलाए हुए, झूठी २ सेवाओं से वश में लाए हुए, आशा रखने वाले, विश्वास रखने वाले, और मांगने वाले लोगों को ठगना कौन सी कठिन बात है।

(६५) दुष्ट मनुष्य के साथ वैर तथा प्रीति दोनों नहीं करनी चाहिएं। यदि अंगारा गर्म हो तो जला देता है, यदि ठंडा हो तो (हाथ को) काला कर देता है॥

अथवा यह बुरे लोगों का स्वभाव है।

(६६) पहले पैरों पर गिरता है। फिर पीठ के मांस को खाता है, फिर कान में मीठी और अजीब धीमी २ आवाज करता है, तदनन्तर कोई दोष देखकर निर्भय हुआ २ सहसा गुस्से में दाखिल हो जाता है। इस तरह मच्छर भी दुष्ट मनुष्य का सारा काम (चरित्र) करता है।

और भी।

(६७) दुष्ट मनुष्य मीठा बोलने वाला है इस से वह विश्वास का कारण नहीं, क्यों कि उसकी ज़बान के आगे तो मिठास रहती है और हृदय में विष भरा रहता है॥

फिर प्रातः काल खेत का स्वामी हाथ म लाठी लेकर उस स्थान पर आता हुआ कव्वे से देखा गया।

उसको देखकर कव्वे ने कहा—हे मित्र हिरण! तू अपने आप को मरे हुए के समान दिखा कर हवा से पेट भर कर पैरों को अकड़ा कर लेट जाना जब मैं शब्द करूँ तब उठकर जल्दी भाग जाना।

मृग कव्वे के कहने से वैसे ही लेट गया तब खुशी से

खिली हुई आंखों वाले खेत के स्वामी ने मृग को उस हालत में देखा। और देखकर (बोला)-ऐ! अपने आप मर गए हो, क्या? यह कहकर मृग को फन्दे से छुड़ा कर जाल लेने के लिये यत्न करने लगा।

इसके बाद कव्वे ने कांय कांय करनी अरम्भ की।

तब कव्वे के शब्द को सुनकर हिरण शीघ्र उठकर दौड़ गया। मृग को निशाना बान्ध कर फैंके हुए डंडे से गीदड़ मारा गया। जैसा कहा भी है—

(६८) मनुष्य अपने भारी पापों और अधिक पुणों का फल तीन वर्ष, तीन मास, तीन पक्ष और तीन दिनों के बाद ही इस ससांर में भोग लेता है॥

इसी लिए मैं कहता हूँ भक्ष्य भक्ष क्यों प्रीति इत्यदि।

कव्वा फिर बोला।

(६९) आप (चूहे) को भी खा लेने पर मेरा काफी भोजन न होगा। किन्तु हे निष्कपट मैं भी चित्रग्रीव के समान तेरे जीवित रहने पर ही जीवित रहूँगा॥

(७०) केवल पुण्य कर्म करने वाले पशु पक्षियों का भी विवशास देखा गया है। सज्जनता के कारण सज्जन पुरुषों का स्वभाव नहीं पलटता॥

हिरण्यक ने कहा—तू चंचल है। चंचल के साथ स्नेह बिल्कुल नहीं करना चाहिए। जैसे कहा भी है—

(७१) बिल्ला, भैंसा, भेड़िया, कव्वा तथा नीच पुरुषों में विश्वास कर लेने पर ये प्रभुता जमा लेते हैं, इस लिए इन पर इतबार नहीं करना चाहिए॥

और क्या कहूँ, आप मेरे शत्रु पक्ष के हैं, शत्रु के साथ मेल नहीं करना चाहिए। कहा भी है—

(७२) मेल से अच्छी भांति जुड़े हुए भी शत्रु से मेल नहीं करना चाहिए, यतः अच्छी तरह गर्म हुआ हुआ पानी अग्नि को बुझा देता है॥

(७३) बड़ा भारी काम (मतलब) पड़ने पर भी जो शत्रुओं पर, और व्यभिचारिणी स्त्रियों पर विश्वास करता है। उसका जीवन उसी समय खत्म हो जाता है॥

लघुपतनक बोला—"मैं ने सब सुन लिया है, फिर भी यह मेरा पक्का निश्चय है कि तुम्हारे साथ मित्रता अवश्य करनी चाहिए नहीं तो, भूखा रहकर तेरे द्वार पर अपने को खत्म कर दूंगा, जैसेकि—

(७४) दुर्जन मिट्टी के घड़े की तरह बहुत आसानी से फोड़ा जा सकता है। किन्तु जोड़ा नहीं जा सकता। और सज्जन सोने के घड़े की तरह कठिनता से तोड़ा जाता है। किन्तु बहुत जल्दी जुड़ जाता है॥

(७५) सोना, चांदी आदि धातुओं को पिघलाने से पशु पक्षियों का विशेष कारण से, मूर्खों का भय या लोभ से प्रेम हो जाता है॥

(७६) मित्र लोग नारियल के समान होते हैं। पर दुर्जन लोग बेर के समान बाहर से ही मनोहर होते हैं, अन्दर से कठोर॥

(७७) प्रेम टूट जाने पर भी साधुओं के गुण विकार को प्राप्त नहीं होते। जैसे भिस की डण्डी के टूट जाने पर भी तन्तुएं जुड़ी ही रहती हैं।

(७८) पवित्रता, दानशीलता, वीरता, सुख दुःख में समानता, अनुकूलता, प्रेम और सत्य मित्रों के गुण हैं ॥

इन गुणों से युक्त मित्र, आप के बिना मुझे और कौन मिलेगा, इत्यादि—

उसके वचन सुनकर हिरण्यक बाहर निकल कर बोला। मैं आप के अमृत समान इन वचनों से तृप्त हो गया हूँ। कहा भी है —

धूप से सताए हुए मनुष्य को ठण्डे जलों द्वारा कराया हुआ स्नान, मोतियों की माला और प्रत्येक अङ्ग पर लगाया हुआ चन्दन का लेप उतना सुख नहीं देता, जितना सुन्दर युक्ति से युक्त, आकर्षन मित्र तुल्य और प्रीति से कहा हुआ सज्जन का वचन चित को आनन्द देता है ॥

(८०) भेद बता देना, मांगना कठोरता, चित की चंचलता, क्रोध, झूठ और जूआ ये मित्र की बुराईयां हैं ॥

सो ऐसा ही हो, जैसे आपको पसन्द है। यह हिरण्यक मित्रता करके और विशेष भोजनों से कव्वे को सन्तुष्ट करके बिल में चलागया।

उस दिन से लेकर प्रतिदिन एक दूसरे को आहार देने कुशलता के प्रश्न पूछने और विश्वास युक्त वार्तालाप करने से कव्वे और चूहे का समय व्यतीत होने लगा।

एक समय लघुपतनक ने हिरण्यक को कहा-मित्र! इस स्थान में भोजन मुश्कल से मिलता है। इस लिए मैं इसे छोड़ कर और जगह जाना चाहता हूँ।

हिरण्यक ने कहा—मित्र कहां जाओगे? जैसे कहा है—

(८१) दांत, बाल; नाखून और मनुष्य अपने स्थान से भ्रष्ट होने पर शोभा नहीं पाते, इस बात को सोचकर बुद्धिमान अपने स्थान को न छोड़े ॥

कव्वा बोला—मित्र ! यह नीच पुरुषों का कहना है। क्योंकि—

(८२) वीर और उदार चित वाले पुरुष के लिए कौन सा स्थान अपना देश है और कौन सा विदेश है ? वह जहां भी ठिकाना बनाता है, उस स्थान को अपनी भुजा के कारण अधिकार में कर लेता है। शेर अपनी दाढ़ों, नाखूनों, और पूंछ के प्रहार से जिस बन को छीन मारता है उसी ही में मारे हुए हाथियों के लहू से अपनी प्यास बुझाता है ॥

हिरण्यक ने कहा—

(८३) बुद्धिमान् एक पांव से चलता है और दूसरे को रोके रखता है। अतः मनुष्य को चाहिये कि अगले स्थान किये बिना पहले स्थान को न छोड़े ॥

कव्वे ने कहा—दण्डक बन में कपूर नामका एक तालाब है। वहां मन्थर नाम का धार्मिक कछुआ मेरा बहुत देर का बनाया हुआ मित्र रहता है। वह विशेष भोजन से मुझे बढ़ायगा ॥

हिरण्यक ने भी कहा—तो मैं यहां रहकर क्या करूँगा ? क्योंकि—

८४—जिस देश में समान न हो, न ही गुजारा हो, न भाई बन्धु हो, और न ही विद्या प्राप्ति हो उस देश का त्याग करना चाहिये ॥

(८५) जहां लोक यात्रा (रोजी), निभयता, लज्जा, अनुकूलता और उदारता, ये पाँचों न हों वहां नहीं रहना चाहिये ॥

(८६) हे मित्र ! जहां ऋण देने वाला, हकीम, वेदपाठी, और जल युक्त नदी, ये चारों न हो, वहां नहीं रहना चाहिये ॥

इसलिए मुझे भी वहां ले चलो।

इस के बाद कछुआ उस मित्र के साथ विचित्र कथाएं और वार्तालाप करता हुआ सुखपूर्वक उस तालाब के पास पहुँच गया।

तब मन्थर ने दूर से देख कर लघुपतनक का उचित अतिथि सत्कार किया, उसके बाद चूहे का स्वागत (अतिथि सत्कार) किया। क्योंकि—

(८७) बालक हो, वृद्ध हो, या जवान, जो भी घर में आ जावे उसकी पूजा करनी चाहिये। क्योंकि अतिथि सब का पूज्य होता है ॥

कछुवा बोला—मित्र मन्थर, इसकी विशेष पूजा करो।

क्योंकि—यह हिरण्यक नाम वाला चूहों का राजा पुण्य कर्म करने वालों में अगुआ है और दया का समुद्र है। इसके गुणों की प्रशंसा सर्पराज शायद अपनी दो हजार जिह्वों से कर सकें" यह कह कर चित्र ग्रीव की सारी कथा ब्यान की।

मन्थर ने आदर के साथ हिरण्यक को पूज कर कहा—भद्र ! इस निर्जन वन में आने का कारण बताइए।

हिरण्यक बोला 'कहता हूँ, सुनो—

चम्पक नगरी में एक संन्यासी रहता था। वह खाने से बचे हुए भिक्षा के अन्न से युक्त भिक्षा पात्र को खूंटी पर लटका कर सो जाता था।

और मैं उछल कर उस अन्न को प्रतिदिन खाया करता था।

कुछ काल के बाद उसका मित्र वीणा कर्ण नाम का सन्यासी आ गया।

उस के साथ कथा-वार्ता में लगा हुआ भी चूड़ा कर्ण मुझे डराने के लिये (बीच २ में) पुराने बांस के टुकड़े से पृथ्वी को पीटने लगा।

वीणा कर्ण बोला—मित्र, आप मेरी कथा-वार्ता में ध्यान न देकर किसी और ओर ध्यान क्यों दे रहे हो ?

चूड़ा कर्ण ने कहा—मित्र मैं ध्यानरहित हूँ। किन्तु मेरा अपकार करने वाले इस चूहे को देखो, यह सदा पात्र में रखे हुए भिक्षा के अन्न को उछलकर खा जाता है।

वीणा कर्ण ने खूंटी को देखकर कहा-यह थोड़े बल वाला चूहा इतनी दूर कैसे उछल जाता है? सो इसमें कोई कारण होना चाहिये।

एक क्षण तक सो कर सन्यासी ने फिर कहा—और इसका कारण धन की ज्यादती ही हो सकती है। क्योंकि—

(८८) सर्वत्र धन के कारण ही सभी लोग सदा बलवान् होते हैं। राजाओं की प्रभुता भी धन के कारण ही होती है॥

तब कुदाली को लेकर उस सन्यासी ने मेरे बिल को खोदकर चिरकाल से एकत्र किया हुआ धन ले लिया। तब से ले कर अपनी शक्ति से हीन, बल और उत्साह से रहित हुए हुए, अपने आहार के बटोरने में भी अयोग्य डर के मारे शनैः २ पास आते हुए मुझ हिरण्यक को चूड़ाकरण ने देख लिया। तब उस ने कहा—

(८९) संसार में धन से ही प्राणी बलवान होता है। और धन से पण्डित होता है। इस पापी चूहे को देखो (धन के न होने से) अब अपनी जाति वालों के समान निर्बल हो गया है॥

(९०) धन से रहित और थोड़ी बुद्धि वाले मनुष्य की सारी क्रियाएं फेल हो जाती हैं। जैसे गर्मी की ऋतु में छोटी २ नदियां सूख जाती हैं॥

(९१) वैसी की वैसी इन्द्रियां होती हैं, वही न नाश हुई बुद्धि होती है। किन्तु धन की गर्मी से रहित हुआ २ पुरुष एक क्षण में ही और का और बन जाता है॥

यह सब कुछ सुन कर मैं ने सोचा— मेरा अब यहां रहना ठीक नहीं। साथ ही किसी दूसरे को यह बात सुनाना भी ठीक नहीं। क्योंकि—

(९२) बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिये कि धन का नाश, मन का दुःख, घर की बुराइयां, ठगी और अपमान की बात किसी के आगे प्रकट न करें।

(९३) चाहे उदार पुरुष मर जाए किन्तु दीनता को प्रकट नहीं करता, आग चाहे बुझ जाए पर ठण्डी नहीं होती॥

(९४) उदार मनुष्य के, फूलों के गुच्छे की प्रकार दो ही ढंग होते हैं। या तो वह सब के सिर पर रहेगा या वन में विरक्त हो जायेगा॥

और जो यहां रहकर मांगते २ जीवन व्यतीत करता है वह भी निन्दा के योग्य है। क्योंकि—

(९५) मनुष्य गरीबी से लज्जा को प्राप्त होता है। लज्जा से उसका बल नष्ट हो जाता है, बल रहित वह अपमान को

प्राप्त होता है। अपमान से दुःख को, दुःख से शोक, शोक से बुद्धि उस को छोड़ देती है। और बुद्धि रहित होने से उसका नाश हो जाता है। आश्चर्य है कि गरीबी सभी विपत्तियों का घर है॥

(९६) चुप रहना अच्छा है, किन्तु झूठ बोलना ठीक नहीं, प्राण छोड़ने अच्छे हैं, किन्तु धूर्त के कामों में रुचि लेना अच्छा नहीं भिक्षा मांग कर खाना अच्छा है, पर दूसरे के धन का स्वाद लेना ठीक नहीं, वन में वास करना ठीक है, पर मूर्ख राजा के शहर में रहना ठीक नहीं॥

यह सोचकर, कि क्या मैं पराये भोजन से अपने को पालूं पोसूँ, ओह! कितना कष्ट है, यह भी दूसरा मृत्यु का द्वार है। यह सोच कर लोभ के कारण फिर भी मैं धन लेने केलिए हठ करने लगा। जैसे कहा भी है—

(९७) लोभ से बुद्धि मारी जाती है, लोभ तृष्णा को पैदा करता है, तृष्णा से व्याकुल मनुष्य को इस लोक और परलोक मे दुःख प्राप्त होता है॥

इसके बाद मैं शनैं २ चलता बना, और उस वीणा कर्ण से पुराने बांस से पीटा गया। तब मैं ने सोचा—

(९८) धन का लोभी ना खुश है, उसका दिल डांवा डोल रहता है, और उस की इन्द्रियां भी वश मे नही रहतीं। जिस पुरुष का मन नाखुश हो उस पर सारी आपत्तियां हैं॥

(९९) सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त और शान्त चित्त वालों को जो सुख प्राप्त होता है, वह सुख इधर उधर घूमने वाले लोभियों को नहीं मिलता॥

(१००) जिस ने आशाओं का पीछा छोड़ कर निराशा

का सहारा ले लिया है, समझो उसी ने ही पढ़ा है। उसी ने ही सुना है, उसी ने ही सब कुछ किया है॥

(१०१) लोभ से सताए हुए मनुष्य के लिए चार सौ कोस की दूरी भी कोई दूर नहीं, और सन्तुष्ट पुरुष तो हाथ में आए हुए धन का भी आदर नहीं करता॥

सो यहां हालत के अनुसार निश्चय ही अच्छा है।

(१०२) कुल के लिए एक का त्याग कर दे, गांव के लिए कुल का त्याग करे। देश के लिये गांव का त्याग करदे, किन्तु अपने लिए भूमि को छोड़ दे॥

(१०३) एक ओर बिना परिश्रम के पानी मिलता है, दूसरी ओर भय से युक्त मीठा भोजन मिलता है। दोनों में विचार कर देखता हूँ, तो उसी मे सुख पाता हूँ जहां परिश्रम नहीं॥

यह सुन कर मैं सुनसान बन मे आया हूँ। क्योंकि—

(१०४) सिंह और हाथियों से भरा हुआ बन अच्छा है, वृक्ष के नीचे डेरा ठीक है, तिनकों का बिस्तरा और वृक्षों की छाल के कपड़े अच्छे हैं, पर धन हीन होने पर बन्धुओं में रहना अच्छा नहीं॥

तब अपने पुण्यों के उदय होने से इस मित्र ने मुझे स्नेह दे कर कृतार्थ किया। और पुण्य परम्परा से स्वर्ग के तुल्य आप का आश्रय मुझे मिल गया। यतः—

१०५—संसार रूपी विषैले वृक्ष के दो फल रसीले हैं— एक काव्य के अमृत के समान रस का स्वाद और दूसरा श्रेष्ठ पुरुषों के साथ संगति॥

(१०६)—धन पांव की धूलि के बराबर हैं। यौवन पहाड़ी नदी

के वेग के समान अस्थायी है। आयु पानी के बुलबले के समान अस्थायी है। जीवन झाग के समान है। उस पर भी जो मूर्ख, स्वर्ग की अर्गला को खोलने वाले धर्म को नहीं करता वह पीछे वृद्धावस्था में पश्चाताप करता हुआ शोक की आग से जलता है ॥

आपने धन का बहुत संग्रह किया था, उसी के कारण यह दोष है। सुन—

(१०७) जैसे तालाब में भरे हुए पानी का निकलना अच्छा है, उसी प्रकार एकत्र किए हुए धन का दान अच्छा है ॥

(१०८) जो अपने सुख को रोककर धन एकत्र करना चाहता है, वह दूसरों के लिए भार उठाने वाले मनुष्य की तरह कलेश का ही भोगने वाला होता है ॥

(१०९) दान और भोग से रहित धन से यदि लोग धनी कहला सकते हैं, तो क्या (धनियों के पास जो धन है) उस धन से हम लोग धनी नहीं कहला सकते ॥

और सुनो—

(११०) नित्य संग्रह करना चाहिए, किन्तु बहुत ज्यादा संग्रह देखो, संग्रह मात्र करने वाला वह गीदड़ धनुष से मारा गया ॥

चूहा और कव्वा कहने लगे—यह कैसे ?

मन्थर कहने लगा—

संग्रह करने वाले गीदड़ की कहानी।

कल्यान करक नामक स्थाने में रहने वाला भैरव नाम का व्याघ्र था, वह एक बार शिकार को खोजता हुआ विन्ध्य नामक बन में जा पहुँचा वहां मारे हुए हरिण को ले जाते

हुए, उसने एक भयानक आकार वाला सुअर देखा।

तब उस शिकारी ने हरिण को भूमी पर रखकर तीर से सुअर को मारा।

सुअर ने भी भयानक गर्जना करते हुए आकर शिकारी की कमर पर चोट मारी, जिस से वह कटे हुए वृत्त की तरह ज़मीन पर गिर गया।

उसके बाद उन दोनों की पैरों की रगड़ से एक सर्प भी मर गया।

इतने में दीर्घरात्र नाम का गीदड़, आहार की खोज में घूमता हुआ वहां आगया, उसने एक ही स्थान पर मरे पड़े हरिण, शिकारी, और मृग को देखा, और सोचने लगा— ओस! आज मुझे काफी भोजन मिल गया है। इन सब प्राणियों के मास से मेरे ३ मांस सुख से गुजरेंगें।

(१११) एक मास तक मनुष्य का मांस चलेगा, दो मास हरिण और सुअर के मांस से कट जाएंगें। एक दिन का गुजारा सर्प से हो जाएगा। आज धनुष की डोरी ही खाएंगे॥

सो पहली भूख में धनुष में लगे हुए इस स्वाद रहित तांत के बन्धन को खाता हूँ। यह कहकर वैसा करने पर, तांत के बन्धन के कटते ही ऊपर जाते हुए धनुष से हृदय में विधा हुआ वह दीर्घराव नाम का गीदड़ मृत्यु को प्राप्त हो गिया।

इस लिए मैं कहता हूँ कि एकत्र धन करना चाहिए पर धन का अति संचय नहीं, इत्यादि।

सो मित्र, तुझे सदा साहस युक्त रहना चाहिए।यतः—

(११२) शास्त्रों को पढ़कर भी मूर्ख रह जाते हैं, जो कार्य को उसी समय करने वाला है, वही पुरुष विद्वान है। रोगियों को नाम मात्र से सोची हुई औषधि कभी निरोग नहीं करती ॥

इसलिये ऐ मित्र, विशेष दशा में शान्ति करनी चाहिए। क्योंकि—

(११३) जिस तरह जल स्थान में मेण्डक, पूर्ण सरोवर में पक्षी आते हैं, उसी प्रकार उद्योगी मनुष्य के पास सभी संपत्तियां विवश हो कर प्राप्त होती हैं ॥

(११४) जैसे आया हुआ सुख सेवनीय होता है। इस तरह दुःख भी सेवनीय है। सुख और दुःख चक्र के समान बदलते हैं। यानी कभी दुःख कभी सुख ॥

(११५) लक्ष्मी ऐसे मनुष्य के पास निवास के लिए स्वयं आती है, जो उत्साही हो, आलस रहित हो, काम करने के तरीके को जानता हो, व्यसनों में न फंसा हो, शूर हो, और पक्की मैत्री रखने वाला हो ॥

(११६) शूरवीर धन के बिना बड़े सम्मान और उन्नत पद को पा लेता है। कायर धन युक्त भी तिरस्कार को पाता है। क्या सोने की माला को पहिने हुए भी कुत्ता गुणों से प्राप्त होने वाली सिंह की स्वाभाविक शोभा को पा सकता है, नहीं कभी नहीं ॥

(११७) मैं धनी हूँ यह मुझे मद है, क्या ऐश्वर्य रहित हो कर विषाद को प्राप्त हो जाऊं। मनुष्यों का उत्थान और पतन हाथ में रखी गेंद के समान है, यानी जिस तरह गेंद कभी ऊपर

कभी नीचे जाती है उसी तरह मनुष्य कभी उन्नति कभी अवनति को पाता है ॥

और भी ऐ मित्र !

(११८) जिस विधाता ने हंसों को सफेद बनाया, तोतों को हरा, मोरों को चितकबरे बनाया, वह विधाता तेरी आजीविका बनाएगा ॥

और ऐ मित्र ! सत्पुरुषों का रहस्य सुन—

(११९) धन इकट्ठा करने में दुःख उत्पन्न होता है, ये धन विपत्तियों में सतांप देते हैं। सम्पत्ति में मुग्ध बना देते हैं, इसप्रकार धन कैसे सुख दिखलाने वाले हो सकते हैं? अर्थात धन प्रति हालत में कष्ट देने वाले होते हैं ॥

हे भ्रातः ! और सुन।

(१२०) पहले तो धन सुलभ नहीं, प्राप्त हुए धन की रक्षा मुश्किल से होती है। और प्राप्त धन का नाश मृत्यु के समान है। इस कारण मनुष्य इसकी चिन्ता न करे ॥

(१२१) मनुष्य ज्यों २ इच्छा करता है, त्यों २ इच्छा बढ़ती है। प्राप्तधन वही है जिस से इच्छा की प्रिवृति हो ॥

मेरे बहुत पक्षपात से क्या ? मेरे साथ यहां ही समय व्यतीत करो। यह सुन कर लघुपतनक बोला—हे मन्थर ! तू धन्य है। सब प्रकार श्लाघनीय गुणों से युक्त है।

क्योंकि—

१२२) श्रेष्ठ मनुष्य ही श्रेष्ठ मनुष्यों का संकट से उद्धार करने में समर्थ हैं। कीचड़ में डूबे हुए हाथियों के भार को उठाने वाले हाथी ही होते हैं ॥

(१२३) पृथ्वी पर मनुष्यों में वही एक श्लाघनीय है,

वही उत्तम पुरुष है, वही धन्य है। जिस के घर से मांगने वाले या शरण में आए हुए निराश होने के कारण विमुख होकर नहीं जाते ॥

इस प्रकार वे इच्छानुसार आहार विहार करते हुए सन्तुष्ट हो कर सुख से रहने लगे।

इसके बाद कभी चित्राङ्ग नाम का मृग किसी से डरा हुआ वहां आ मिला। उसके बाद पीछे से आते हुए भय के कारण को देखकर मन्थर जल में चला गया। और चूहा बिल में दाखिल हो गया।

फिर लघुपतनक ने दूर से देख कर सोचा कि कोई भी भय का कारण नहीं आ रहा है॥

तब उसके बचन से सब मिल कर वहां बैठ गए।

मन्थर ने कहा भद्र मृग तेरा कल्याण हो, ठीक प्रकार से आए, अपनी इच्छा से जल आदि का आहार करो। यहां ठहर कर इस बन को सनाथ कीजिए।

चित्राङ्ग बोला—व्याध से डरा मैं आपकी शरण आया हूँ।

हिरण्यक बोला—आपकी मित्रता तो पहले ही हमारे साथ बगैर किसी यत्न के हो गई है। क्योंकि—

(१२४) हृदय से उत्पन्न, जिस से सम्बन्ध किया गया है, वशं परम्परा से आया हुआ, और दुःखों से बचाया हुआ, इस तरह मित्र चार किस्म का जानना चाहिए॥

सो अपने घर की तरह ठहिरए, यह सुन कर मृग खुश होकर, अपनी इच्छानुसार भोजन कर, पानी पी, जल के निकट वृक्ष की छाया में बैठ गया।

इसके बाद मन्थर ने कहा हे मित्र! इस निर्जन वन में किस से डरा दिया गया है? क्या व्याध फिरता है?

मृग ने कहा कि कलिङ्ग देश में रुक्माङ्गद नाम का राजा है। वह दिशाओं को जीतता हुआ चन्द्रभागा नदी के किनारे सेना को ठहराए है। वह प्रात: यहां आकर कर्पूरसर के निकट पहुँचेगा, ऐसी व्याधों के मुख से चर्चा सुनी जा रही है। सो यहां पर भी प्रातः ठहरना भय का कारण है। यह समझ कर समय के अनुसार काम शुरु करो।

यह सुनकर कछवा भयभीत हो बोला कि दूसरे तालाब आदि को चलते हैं।

काक मृग बोले—ऐसा ही हो।

फिर हिरण्यक ने सोचकर कहा कि दूसरे सरोवर में पहुँच जाने पर मन्थर की कुशल है। परन्तु जमीन पर चलते हुए उसकी रक्षा का क्या उपाय है। क्योंकि—

(१२५) जल जीवों का जल, दुर्ग में रहने वालों का दुर्ग पशु आदि की अपनी भूमि, और राजाओं का मन्त्री बड़ा बल है॥

उस के हित भरे वचन का तिरस्कार करके बड़े भय से विमुग्ध सा मन्थर उस सरोवर को छोड़कर चल पड़ा।

वे हिरण्यक आदि भी प्रेम के कारण अनिष्ट की शंका करते हुए मन्थर के पीछे चल पड़े।

फिर वन में भ्रमण करते हुए किसी शिकारी ने स्थल में जाते हुए मन्थर को पाया। उसे पाकर पकड़ कर और उठा कर धनुष में बांध शिकारी भ्रमण के क्लेश से भूख और प्यास से व्याकुल होकर अपने घरकी ओर चल पड़ा।

इस के बाद मृग, काक और चूहा दुःखी होते हुए उसके पीछे चल पड़े। तब हिरण्यक रोने लगा—

(१२६) जब तक मैं समुद्र के पार की तरह एक दुःख के अन्त को नहीं पहुचंता, तब तक मेरे लिए दूसरा दुःख उपस्थित हो जाता है। क्योंकि छिद्रों में अनर्थ ही अनर्थ होता है यानी—दुःख के पीछे दुःख आता है॥

(१२७) जो स्वाभाविक मित्र हो, वह भाग्य से प्राप्त होता है। वह स्वाभाविक मित्रता को विपत्ति में भी नहीं छोड़ता॥

(१२८) पुरुषों का जैसा विश्वास स्वाभाविक मित्र में होता है, वैसा न माता, न स्त्री, न पुत्र और न भाई में होता है॥

(१२९) शरीर दुःख से भरा है, धन दौलत आपत्तियों का स्थान हैं। संयोग विछोड़े के साथ है। इस तरह विधाता ने सब कुछ नाश होने वाला बनाया है॥

(१३०) शोक और शत्रुओं के भय से बचाने वाला प्रेम और विश्वास का पात्र मित्र, यह दो अक्षरों से बना हुआ रत्न है॥

(१३१) जो मित्र आंखों की प्रीति का रसायन, चित को अनन्द देने वाला, तथा मित्र के साथ सुख दुःख का साथी बना रहता है, वह मित्र दुर्लभ है। और जो दूसरे मित्र ऐश्वर्य के समय पैसे की इच्छा में व्याकुल रहते हैं। वह सब स्थान पर मिल जाते हैं। किन्तु उनको पहचानने की कसौटी तो मुसीबत है॥

इस प्रकार बहुत विलाप करके हिरण्यक ने चित्राङ्ग और लघुपतनक से कहा—कि जब तक यह शिकारी बन से नहीं

निकलता तब तक मन्थर के छुड़ाने का यत्न करो। वे दोनों बोले जल्दी उपाय बताओ।

हिरण्यक ने कहा—चित्राङ्ग जल के समीप जाकर मरे हुए के समान आपने आप को दिखाए और कव्वा उसके ऊपर बैठ कर चोंच से बिलेखन करे, ऐसा करने से वह शिकारी जरूर ही वहां कछुए को छोड़ कर मृग के मांस की अभिलाषा वाला उस ओर जल्दी जायगा। तब मैं मन्थर के जाल को काटूंगा। शिकारी के समीप आने पर तुम दोनों भाग जाना।

शीघ्र जा कर चित्राङ्ग लघुपतनक के वैसा करने पर थके हुए उस शिकारी ने जल पी कर वृक्ष के नीचे बैठे हुए हिरण को उस दशा में देखा। तब वहां कछवे को रख कर छुरी लेकर खुश हुआ और वह शिकार करने की अभिलाषा से मृग के नजदीक गया।

तब हिरण्यक ने आकर मन्थर का जाल काट दिया। वह कछवा जल्दी तालाब में घुस गया। वह मृग, समीप आते हुए शिकारी को देखकर उठकर भाग गया।

लौट कर जब शिकारी वृक्ष के नीचे आया तब कछुए को न देखता हुआ सोचने लगा कि बिना विचारे काम करने वाले मेरे साथ ऐसा ही होगा उचित है। क्योंकि—

(१३२) जो मनुष्य स्थिर चीज़ों को छोड़ कर अस्थिर चीजों की ओर दौड़ता है, उसकी वे स्थिर चीजें भी नष्ट हो जाती हैं। अस्थिर तो नष्ट ही हैं॥

फिर वह अपना कर्मवश निराश हुआ डेरे में दाखल हो गया।

मन्थर आदि भी दुःखों से रहित हुए २ अपने स्थान पर सुख पूर्वक रहने लगे। यूं सुन कर राजकुमारों ने आनन्द पूर्वक कहा—यदि वे सब सुखी होकर रहने लगे तब हमारा मनोरथ सिद्ध हो गया।

विष्णु शर्मा बोला-यह लो तुम्हारी इच्छा पूरी हुई।

————

अथ सुहृद् भेदः

इस के बाद राजकुमार बोले—आर्य, मित्रलाभ तो सुन लिया। अब सुहृद् भेद सुनना चाहते हैं।

विष्णु शर्मा बोला—अच्छा, सुहृद्भेद सुनो, उसका यह पहला श्लोक है —

(१) सिंह एंव बैल के बढ़ते हुए महान स्नेह को अतीव लोभी चुग्लखोर गीदड़ ने नष्ट कर दिया॥

राजकुमारों ने कहा—यह कैसे ? विष्णु शर्मा बोला।

संजीवक पिंगलक की कहानी

(मुख्य कहानी)

दक्षिण के रास्ते में सुवर्णवती नाम एक नगरी थी वहां वर्धमान नाम का एक बनिया रहता था। अपने पास बहुत सा धन होने पर भी दूसरे सम्बन्धियों को बहुत धनवान देखकर और भी धन बढ़ाना चाहिए ऐसा उसका यह विचार हुआ क्योंकि—

(२) नीचे २ देखते हुए किसी की महिमा नहीं बढ़ती। और ऊपर देखते हुए सभी दरिद्र बन जाते हैं॥

(३) जिस के पास बहुत धन है वह चाहे ब्रह्महत्यारा भी क्यों न हो पूजा के योग्य होता है। चन्द्रमा जैसे निर्मल कुल में पैदा हुआ भी निर्धन तिरस्कार ही पाता है॥

(४) न मिले धन को लेने की इच्छा करनी चाहिए प्राप्त धन को हानि से बचाना चाहिए, बचाये हुए धन को बढ़ाना चाहिए। बढ़े हुए धन को तीर्थों में दान कर देना चाहिए॥

क्योंकि—

प्राप्त की न इच्छा करने वाले को उद्योग न करने से धन की प्राप्त ही नहीं होती। यदि रक्षा न की जाए तो प्राप्त किए कोष का भी स्वयं विनाश हो जाता है। और बढ़ता हुआ धन थोड़े २ खर्च किया हुआ भी समय पाकर सुर्मे की तरह खत्म हो जाता है। यदि धन उपयोग में नहीं आता वह व्यर्थ ही है। वैसा कहा भी है—

(५) जो न दान करता है न खाता है उस के धन से क्या प्रयोजन? जो शत्रुओं को पीड़ा नहीं देता उसके बल से क्या? जो धर्म का आचरण नहीं करता उस के शास्त्र से क्या लाभ? जो इन्द्रियों को जीत कर नहीं रखता, उसकी आत्मा से क्या लाभ॥

(६) जल की बूंद २ गिरने से धीरे २ घड़ा भर जाता है। यही कारण सब विद्या, धर्म और धन का है॥

(७) दान और उपयोग से रहित जिसके दिन व्यतीत

होते हैं। वह लोहार की धौंकनी के प्रकार सांस लेता भी नहीं जीता ॥

ऐसा सोचकर नन्दक और संजीवक नाम वाले बैलों की गाड़ी में जोतकर और गाड़ी में अनेक प्रकार के पदार्थ भर कर व्यापार के लिए काशमीर को चल दिया।

इसके बाद रास्ते में सुदुर्ग नाम वाले महान बन में जाते हुए उसके टूटे हुए घुटने वाला संजीवक गिर पड़ा। उसको देखकर वर्धमान सोचने लगा।

(८) नीति को जानने वाला बुद्धिमान् चाहे इधर उधर चाहे कितना ही यत्न करे, परन्तु फल वही होता है जो विधाता के मन में होता है ॥

यह सोच कर संजीवक को वहीं छोड़कर वर्धमान फिर स्वयं धर्मपुर नाम नगर में जाकर एक और बड़े शरीर वाले बैल को लाकर और गाड़ी में जोतकर चल पड़ा।

तब संजीवक भी किसी प्रकार कठिनता से तीन खुरों पर भार डालता हुआ बन में रहने लगा। क्योंकि—

(९) समुद्र में डूबे हुए की, पर्वत से गिरे हुए की, सांप से कटे हुए की आयु यदि शेष है तो वह जोड़ों की रक्षा कर लेती है ॥

(१०) सैंकड़ों बाणों से जख्मी हुआ हुआ भी प्राणी बिना वक्त नहीं मरता। जिसका समय नजदीक होता है। वह कुशा के अगले हिस्से से जख्मी हुआ २ भी जीता नहीं रह सकता ॥

(११) ईश्वर से बचाया हुआ व्यक्ति न रक्षा किया हुआ

भी जीता रहता है। ईश्वर से न रक्षा किया और अच्छी तरह से रक्षा किया हुआ भी नहीं जीता। बन में छोड़ा हुआ अनाथ भी जीता है। घर में प्रयत्न करने पर भी जिसे ने नष्ट होना है नष्ट हो जाता है॥

इस के बाद कुछ दिन व्यतीत होने पर संजीवक अपनी इच्छा से खा पी कर बन में घूमता हुआ हट्टे कट्टे शरीर वाला और बलवान् हो कर हुँकारने लगा।

उस जङ्गल में, अपने भुजाओं के बल से राज प्राप्त करने वाला पिङ्गलक नाम का शेर सुख से रहता था। कहा भी है—

(१२) बन में रहने वाले पशुओं ने न तो कभी शेर का राजतिलक किया है और न कोई कभी संस्कार किया है। किन्तु अपनी बहादुरी से राज्य पाने वाले सिंह को मृगराजपन स्वयं प्राप्त होता है॥

वह शेर एक समय प्यास से व्याकुल हो कर जल पीने के लिए जमुना के किनारे पर चल पड़ा।

वहां उसने अनोखा और बेसमय बादलों की गर्ज के समान संजीवक का शब्द सुना।

यह सुन कर पानी पिये बिना हैरान होकर अपने स्थान को लौट कर 'यह क्या है? इस बात को सोचता हुआ मौन बैठ गया।

और इस प्रकार (इस अवस्था में) उसे मन्त्री के पुत्र करकट-दमनक नाम के दो गीदड़ों ने देख लिया।

उसे इस अवस्था में देखकर दमनक ने करटक को कहा—मित्र करटक! यह क्या है?

पानी पीना चाहता हुआ हमारा स्वामी भयभीत हो कर पानी पिये बिना धीरे २ आकर बैठ गया है (इसका क्या कारण है ?)

करटक बोला—हमारे विचार से इस की सेवा ही नहीं करनी चाहिए।

यदि ऐसे आकर बैठ गया है, तो हमें इसके कामों की ओर ध्यान देने से क्या लाभ ? क्योंकि इस राजा से तो देर तक अपमानित होकर हम ने बड़ा दुःख पाया है।

(१३) सेवा कर के धन प्राप्त करने की इच्छा वाले सेवकों ने जो कुछ किया है। उसे देखो तो सही उन सेवकों ने जो शरीर की स्वतन्त्रता थी, उसे भी गंवा दिया ॥

(१४) दूसरे के आश्रय लेने वाले सर्दी, वायु, गर्मी के जिन कष्टों को सहन करते हैं, बुद्धिमान पुरुष उन कष्टों के एक भाग से तप करके सुखी हो जाता है ॥

और भी—

(१५) यदि सेवक चुप रहे तो (मनुष्य कहते हैं) कि मूर्ख है। यदि बोलने में चालाक हो तो उसे पागल समझते हैं। यदि सहनशील हो तो डरपोक है, यदि असहनशील हो तो खानदानी नही समझा जाता। यदि सदा नजदीक है तो ढीठ है, यदि दूर है घमंडी है, सच तो यह है सेवा धर्म कठिन है, योगियों की पहुंच से भी बाहर है ॥

(१६) सेवक से बढ़कर मूर्ख कौन है ? जो तरक्की के लिए नीचे होता है और जीवन रहने के लिए अपने प्राणों को छोड़ता है। और सुख प्राप्त करने के लिए दुःखी होता है ॥

दमनक ने कहा—मित्र ! मन से भी ऐसा न समझना ।

क्योंकि—

(१७) जो प्रसन्न होने पर जल्दी ही हमारे (सेवकों के) मनोरथ पूरे कर देते हैं । उन स्वामियों की यत्न से सेवा क्यों न करें ॥

और भी देखो—

(१८) जो लोग सेवा नहीं करते, उनके भाग में चवंर के झूलने से प्राप्त होने वाली सम्पत्तियों, ऊंचे उड़ने वाले सफेद छत्र तथा हाथियों की सेना कहां ? ॥

करटक बोला—फिर भी हमें इस काम से क्या, क्योंकि बिना किसी मतलब के कामों में लगाना छोड़ने योग्य है ?

दमनक ने कहा—फिर भी स्वामी के काम की देख भाल अवश्य करनी चाहिए ।

करटक ने कहा—जिस प्रधान मन्त्री को सारे अधिकार प्राप्त हैं । वह (ऐसा) करे ।

क्योंकि सेवक को दूसरे के अधिकार की चर्चा बिल्कुल नहीं करनी चाहिए । देखो—

(१९) जो नौकर स्वामी के भले की इच्छा से दूसरे के अधिकार की चर्चा करता है । वह दुःख पाता है । या मारा जाता है । जैसे कि बिना मतलब रींगने के कारण गधा पीटा गया ॥

दमनक ने पूछा—यह कैसे ?

करटक बोला—

———

कर्पूर पटक धोबी की कथा

बनारस में कर्पूर पटक नाम का धोबी था। वह एक बार रात को सोया हुआ था। तब उस के घर में धन चुराने के लिए चोर दाखिल हुआ।

उस के आङ्गन में गधा बधां खड़ा था और कुत्ता भी बैठा था।

गधे ने कुत्तें से कहा—मित्र! यह तुम्हारा काम है सो भौंक करके स्वामी को क्यों नहीं जगाते।

कुत्ता बोला—भद्र! मेरे काम की चर्चा तुम्हें नहीं करनी चाहिए। तू नहीं जानता कि मैं दिन रात इस के घर की रक्षा करता हूं।

क्योंकि यह निश्चित ही मेरे लाभ को नहीं जानता कि इसलिए आज कल मुझे भोजन देने में बेपरवाह हो गया है। क्योंकि कष्ट आये बिना स्वामी सेवकों की परवाह नहीं करते।

गधा बोला—सुन रे मूर्ख—

जो काम के समय मांगे, वह सेवक तथा मित्र किस काम का?

कुत्ता बोला—यह भी सुन—

(२०) और जो काम पड़ने पर ही नौकरों से मीठी २ बातें करे वह स्वामी भी किस काम का॥

तब गधे ने गुस्से हो कर कहा—अरे दुष्ट बुद्धि वाले! तू पापी है, क्योंकि दुःख के समय स्वामी के काम को

परवाह नहीं करता। अच्छा ऐसा ही सही मैं वही काम करता हूँ जिस से स्वामी जाग जाए। क्योंकि—

(२१) सूर्य का पीठ से सेवन करे, आग का सेवन पेट से करे। किन्तु स्वामी की सेवा सब प्रकार से करे। और परलोक (के कामों) का सेवन कपट रहित हो कर करे॥

यह कह कर जोर से रींगने लगा।

तब उसके रींगने से जागे हुए स्वामी ने नींद टूट जाने के क्रोध से उठकर गधे को डण्डे से पीटा।

इसलिए मैं कहता हूँ-दूसरे के अधिकार की...इत्यादि।

(सोचकर) किन्तु आज तो उसकी चर्चा करने की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि हम दोनों के लिए बचा हुआ आहार पड़ा है।

दमनक ने क्रोध से कहा—तो क्या आप केवल भोजन के लिए राजा की सेवा करते हो? यह भी तुम्हारे लिए ठीक नहीं क्योंकि—

(२२) बुद्धिमान् लोग मित्रों का उपकार करने के लिए और शत्रुओं का बुरा करने के लिए राजाओं का सहारा लेते हैं, यों तो पेट को कौन नही भर लेता अर्थात् सभी भर लेते हैं॥

(२३) जिस के जीने पर ब्राह्मण, मित्र और बन्धु लोग जीवित रहें उसका जीना ही सिद्ध है। अन्यथा अपने लिए कौन नहीं जीता। यानी सभी जीते हैं॥

(२४) जिस के जीने पर बहुत से जीते हैं। वही जीता रहे। क्या चोंच से कौवा अपना पेट नहीं भर लेता॥

(२५) कोई मनुष्य ५ पैसों के लिए दास बन जाता है।

कोई लाख रुपए से काम करता है और कोई लाखों में भी नहीं दास बनाया जा सकता ॥

ऐसा ही—कभी २ थोड़ा २ भी बहुत समझा जाता है।

(२६) कुत्ता थोड़ी सी नसों, और चर्बी वाली, मैली तथा मांसरहित हड्डी को प्राप्त कर के ही प्रसन्न हो जाता है, यद्यपि वह (अस्थि) उस की भूख नहीं मिटा सकती। किन्तु शेर अपनी गोदी में भी आए हुए गीदड़ को छोड़ कर हाथी को मारता है। कष्टों में फंसे हुए भी सभी प्राणी अपने बल के अनुसार ही फल को चाहते हैं ॥

(२७) विज्ञान, बल और यश के कारण प्रसिद्धि पा कर जो लोग एक क्षण भी जीवित रह जाते हैं, उन्हीं के जीने को पण्डित लोग जीना समझते हैं। वरना कौवा भी बहुत देर तक जीता रहता है और बलि का भोजन खाता रहता है ॥

(२८) जो अपने पुत्र पर, गुरु पर, सेवक गण पर, दीन पर बन्धुओं पर, दया नहीं करता, संसार में उसके जीने के फल से क्या (प्रयोजन) यों तो कौवा भी बहुत देर तक जीता है। और बलि खाता रहता है ॥

और भी—

(२९) अहित और हित के विचार से विहीन बुद्धि वाले, बहुत से वेदों के नियमो से तिरस्कार किए हुए, केवल पेट भरने मात्र की ही इच्छा रखने वाले पुरुष रूपी पशु और पशु में क्या अन्तर है। ऐसा मनुष्य पशु के समान है ॥

करटक बोला—हम दोनों प्रधान नहीं हैं। हमें इस विचार से क्या प्रयोजन ?

दमनक बोला—कुछ समय में मन्त्री प्रधानता वा अप्रधानता को प्राप्त कर लेते हैं।

क्योंकि—

(३०) ससांर में स्वाभाव से कोई किसी का उदार, हितचिन्तक या शत्रु नहीं समझा जाता, मनुष्य को उसके कर्म ही बड़ाई वा छोटापन पर ले जाते हैं ॥

(३१) मनुष्य अपने कर्मों से ही कूप के खोदने वाले और महल के बनाने वाले की तरह ऊपर उठ जाता है, तथा नीचे २ जाता है, जिस प्रकार कुए के खोदने वाला अपने कर्मों से नीचे जाता है, और महल के बनाने वाला ऊपर, इसी प्रकार मनुष्य भी अपने कर्मों से उन्नत या अवनत होता है ॥

सो यह ठीक है कि आत्मा अपने यत्न के ही आधीन है।

करटक बोला—फिर आप क्या कहते हैं।

वह बोला—क्या तू उस भय के कारण को जानता है

दमनक—इस में क्या न जाना है।

कहा है—

(३२) कही हुई बात पशु से भी ग्रहण की जाती है। सिखाए हुए घोड़े और हाथी भी भार उठा कर ले जाते हैं। पण्डित लोग न कही हुई बात को भी जान लेते हैं। दूसरों की चेष्टाओं को जान लेना ही बुद्धियों का फल ह ॥

(३३) शक्ल, इशारों, गति, चेष्टा, और आंख, मुख के विकार से भीतर का मन जाना जाता है ॥

लो इस भय के प्रसङ्ग में बुद्धि बल से मैं इस स्वामी को अपना बना लूँगा।

करटक बोला—हे मित्र ! तू सेवा से अनजान है। देख—

३४) जो बिना बुलाए (किसी काम में) दखल दे। बिना पूछे बहुत बोलने लग जाए, अपने को राजा का प्रिय समझे, वह दुर्बुद्धि है ॥

दमनक बोला—कैसे मैं सेवा का न जानने वाला हूँ। देख—

(३५) क्या कोई वस्तु स्वभाव से सुन्दर या असुन्दर है ? जो जिसे अच्छा लगता है, वह उस के लिये सुन्दर है ॥

क्योंकि—

(३६) जिस जिस का जो भाव हो, बुद्धिमान उस के उस भाव के अनुसार ही उस मनुष्य का पीछा करे ॥

करटक बोला—शायद बेमौके जाने से स्वामी तेरा निरादर कर दे।

वह बोला—यद्यपि ऐसा है, तो भी सेवक को स्वामी के पास अवश्य जाना चाहिये। क्योंकि—

(३७) दोष के भय से काम शुरु न करना, कायर पुरुषों का लक्षण है। हे भाई ! अजीर्ण के भय से कौन भोजन छोड़ देते हैं ॥

(३८) राजा समीप स्थित मनुष्य से प्रसन्न रहता है। वह मनुष्य चाहे विद्या से हीन हो, कुलीनता रहित या किसी से न मिलने वाला हो। प्रायः राजा, स्त्रियां और लताएं जो पास होता है, उसे लपेट लेते हैं ॥

करटक बोला—वहाँ जा कर आप क्या कहेंगे ?

वह बोला—(वहां जाकर मैं यह जानूंगा कि क्या स्वामी मुझ में अनुरक्त है या विरक्त है।

दमनक बोला—उसके जानने का क्या लक्षण है।

दमनक बोला—सुनो—

(३९) दूर से देखना, हंसना, पूछने में बहुत ज्यादा आदर दिखाना, पीछे आंखों से ओझल होने पर गुण की प्रशंसा करना, प्रिय चीजों के लिए स्मरण करना॥

(४०) सेवक पर अनुराग, प्रिय भाषण के साथ दान देना, दोष में भी गुण ग्रहण करना, ये सेवक पर प्रेम करने वाले स्वामी की निशानियां हैं।

यह जान कर, जिस प्रकार यह मेरे आधीन हो गा, वैसा करूंगा। क्योंकि—

(४१) बुद्धिमान नीति की विधि से, दुःख से उत्पन्न होने वाली विपत्ति और उपाय से उत्पन्न सिद्धि को पहले ही झलकती हुई सी दिखला देते हैं॥

करटक बोला—तो भी प्रसङ्ग न चलने पर तुम बोल नहीं सकोगे।

दमनक बोला—मित्र, मत डरो मैं बे मौका वचन नहीं कहूंगा। क्योंकि—

(४२) हित चाहने वाले सेवक को आपत्ति में, कुमार्ग पर चलने के समय, और काम के समय के निकल जाने पर बिना पूछे ही कह देना चाहिए॥

यदि वक्त पर मुझ से अपना विचार प्रकट न किया जाय गा तो मेरा मन्त्री होना अयुक्त है। क्योंकि—

(४३) गुणी पुरुष जिस गुण के द्वारा अपनी आजीविका बनाता है। और जिस से संसार में शोभा पाता है। वह गुण

उस गुणों के द्वारा रक्षा किया जाना चाहिये, और बढ़ाना चाहिये ॥

इस कारण से ऐ भद्र ! मुझे आज्ञा दो। मैं जाता हूँ।

करटक बोला—आप का भला हो। तुम्हारा मार्ग कल्याणकारी हो। इच्छानुसार कीजिए।

तब दमनक हैरान हुआ सा पिङ्गलक के पास गया।

इस के बाद दूर से ही आदरपूर्वक राजा से सभा में दाखिल हुआ २ वह प्रणाम करके बैठ गया।

राजा ने कहा—क्या बात, बड़ी देर के बाद देखे गए हो ॥

दमनक ने कहा—यद्यपि मुझ सेवक से आप का कोई प्रयोजन नहीं है, तो भी समय पर सेवक को स्वामी के नजदीक जरूर आना चाहिए। इसलिए मैं आया हूँ।

और भी—

(४४) हे राजन् ! दांत के कुरेदने वाले, कान के जलाने खुजलाने वाले, तिनके से भी धनियों को काम होता है। वाणी, हाथ आदि अङ्गों वाले मनुष्यों से तो कहना ही क्या ॥

यद्यपि आप देर से तिरस्कार किए गए मेरी बुद्धि के नाश की शंका कर रहे हैं। आप को यह शंका नहीं करनी चाहिये।

क्योंकि—

(४५ तिरस्कृत भी धीर पुरुष की बुद्धि के नाश की आशंका नहीं करनी चाहिये। नीचे की हुई भी आग की लाट कभी नीचे नहीं जाती ॥

हे देव ! इस लिए स्वामी को हर तरह विशेषज्ञ बनना चाहिये। क्योंकि—

(४६) जब राजा सब में विशेषता रहित एक सा व्यवहार करता है। तो उद्योगियों का साहस नष्ट हो जाता है ॥

और भी—

(४७) हे राजन्—तीन प्रकार के मनुष्य हैं, उत्तम मध्यम, और नीच। इन को इसी प्रकार तीन प्रकार के कर्मों में लगाएं ॥

(४८) भृत्य और भूषण स्थान में ही लगाए जाते हैं। चोटी की मणि पैर में, और पैर का भूषण सिर पर धारण नहीं किया जाता ॥

(४९) सोने के भूषण में लगाने के योग्य मणि यदि सीसे के जेवर में जड़ दी जाए तो न वह शब्द करती है कि यह मेरे अयोग्य स्थान है, और न ही यह बात है कि वह शोभा देती है केवल जड़ने वाले की निन्दा होती है ॥

और भी—

(५०) राजा के अपमान करने से सेवक बुद्धि हीन हो जाते हैं। फिर उसकी प्रधानता के कारण बुद्धिमान् उसके पास नहीं रहते। पण्डितों से छोड़े हुए राज में नीति गुणवाली नहीं होती। नीति के बुरा होने पर सारा संसार शासन रहित होकर दुःख पाता है ॥

(५१) बुद्धिमानों को ठीक कहा बालक का वचन भी मान लेना चाहिये। क्या सूर्य की पहुँच से दूर स्थान पर दीपक (लैम्प) प्रकाश नहीं करता अर्थात् करता ही है ॥

पिङ्गलक बोला—यह क्या ? तू हमारे प्रधान मंत्री का पुत्र है। इतने समय तक किसी दुष्ट के वचन से नहीं आया। अब जैसी इच्छा है, वर्णन कर।

दमनक बोला—तब मैं कुछ पूछना हूँ।

पिङ्गलक बोला—कहो (क्या पूछना चाहते हो)।

दमनक बोला—पानी पीना चाहते हुए आप पानी न पीकर परेशान से क्यों बैठे हो।

पिङ्गलक बोला—तू ने ठीक कहा। किन्तु यह रहस्य कहने के लिए कोई विश्वास स्थान नहीं है। फिर भी मैं एकान्त कर के कहता हूँ। सुनिए—

यह वन अद्भुत जीवों से भरा है। इस लिए छोड़ देना चाहिये। इस कारण मैं चकित हो गया हूँ। और तू ने भी इस अद्भुत महान् शब्द को सुना ही है। शब्द के अनुसार यह प्राणी बड़े बल वाला हो गा।

दमनक बोला—देव! यह भय का कारण होता है। वह शब्द हम ने भी सुना है। पर वह मन्त्री दुष्ट है जो पहले स्थान को छोड़ने और पीछे युद्ध का उपदेश देता है। किन्तु इस काम की शंका में नौकरों की जरूरत जाननी चाहिये। यतः—

५२—बन्धु, स्त्री, और सेवकों की अपनी शक्ति की सारता को आपत्ति रूपी कसौटी पर मनुष्य जान लेता है॥

सिंह बोला—ऐ भले, यह बड़ा भारी भय मुझे दुःखित कर रहा है।

दमनक—(दिल में तो राज्य का सुख छोड़ कर दूसरे स्थान पर जाने के लिए कहता है? (जाहिर करते हुए) जब तक मैं जीता हूँ तब तक आप भय न करें। किन्तु करटक आदियों को भी धीरज देना चाहिये, क्योंकि दुःख हटाने में पुरुषों का एकत्र करना कठिन होता है।

तब वह करटक दमनक दो राजा से सर्वस्व दान द्वारा पूजे हुए भय को दूर करने की प्रतिज्ञा कर के चल दिए।

जाता हुआ करटक दमनक को बोला—मित्र ! क्या इस भय के कारण का उपाय हो सकता है। या नहीं। यह न जान कर और भय दूर करने की प्रतिज्ञा कर के यह बड़ा भारी इनाम क्यों ले लिया ?

क्योंकि—उपकार न कर सकने वाले को किसी की भेंट नहीं लेनी चाहिये, विशेष कर के राजा की। देख—

(५३) जिस की खुशी में लक्ष्मी, और बल में विजय एवं क्रोध में मृत्यु निवास करती है वह राजा सब तेजों का रूप है ॥

देखो—

(५४) "यह मनुष्य है" ऐसा जानकर यदि राजा बालक भी हो तो भी उस का तिरस्कार नहीं करना चाहिये। क्योंकि—यह मनुष्य रूप में बड़ा देवता स्थित है ॥

दमनक हंस कर बोला—मित्र ! चुप रहो। मैं ने भय का कारण जान लिया है यह बैल की आवाज है। बैल तो हमारी भी खुराक है, सिंह का तो कहना ही क्या।

करटक बोला—यदि यूं है तो स्वामी का भय वहां ही क्यों दूर न किया ?

दमनक बोला—यदि स्वामी का भय वहीं ही दूर कर दिया जाता तो यह इतना बड़ा पारितोषिक कहां से प्राप्त होता।

(५५) सेवकों को चाहिये कि स्वामी को कभी बेपरवाह न करें, क्योंकि स्वामी को बेपरवाह कर के नौकर दीघकर्ण की तरह हो जाता है ॥

दमनक ने कहा—यह कैसे ?

दधिकरण विडाल की कहानी

उत्तर दिशा के रास्ते में अर्बुद शिखर नाम वाले पर्वत पर

महाविक्रम नाम का एक शेर रहता था। पर्वत की कन्दरा में सोए हुए उसकी गर्दन के बालों को कोई चूहा हर रोज काट जाता था। बालों के अगले भाग को कटा हुआ देख कर क्रुद्ध सिंह बिल के अन्दर गए हुए चूहे को न पा कर सोचने लगा।

(५६) जो तुच्छ शत्रु हो, वह बल से वश में नहीं आता। अतः उस को मारने के लिए उस के बराबर का ही सिपाही रखना चाहिए॥

यह सोच कर उस ने गाँव में जा कर विश्वास दे कर बड़े यत्न से दधिकर्ण नाम के बिलाव को लाकर मांस का

तब देश व्यवहार को जानने वाले संजीवक ने डरते २ पास जाकर आठ अङ्गों के साथ गिर कर करटक को नमस्ते की।

जैसे कहा भी है—

(५७) बल से बुद्धि ही प्रबल है, जिस के न होने से हाथियों की यह दशा है, हाथी के ऊपर चढ़ कर बैठ हुए भोजन देकर बड़े यत्न से अपनी गुहा में रख दिया। अब उस के डर से चूहा भी बिल से न निकलता था।

इस लिए वह न कटे हुए बालों वाला शेर सुख से रहता था। जब २ चूहे का शब्द सुनता है तब २ विशेष कर के मांस की खुराक देकर उस बिडाल को पालता है।

इस के पश्चात उस शेर ने जब कभी उस चूहे का शब्द बिल में न सुना, तब आवश्यकता न होने पर बिडाल को खुराक देने में लापरवाह हो गया।

तब वह दधिकर्ण भोजन के न मिलने पर निर्बल हो कर मर गया। इसलिए मैं कहता हूँ.......... निरपेक्षो न कर्त्तव्यः। इति।

तब दमनक करटक संजीवक के पास गए ।
वहां वृक्ष के नीचे करटक रोब से बैठ गया ।

दमनक संजीवक के पास जाकर बोला—अरे बैल, राजा पिङ्गलक द्वारा बन की रक्षा के लिए नियुक्त यह सेनापति करटक आज्ञा देता है। कि शीघ्र आ। नहीं तो इस वन से चला जा। नहीं तो तेरे लिए परिणाम अच्छा न होगा। ना मालूम क्रुद्ध स्वामी क्या करेगा।
महावत द्वारा पीटा हुआ एंव शब्द करता हुआ ढोल मानों यही मुनादी करता है ॥

उसके बाद संजीवक सन्देहयुक्त बोला हे सेना पति! मुझे क्या करना है। वह बताओ।

करटक बोला—यदि यहां बन में रहने की आशा रखते हो तो जाकर हमारे राजा के पैर (चरण) कमलों में नमस्कार करो।

संजीवक बोला—सुन रे बैल, शंका मतकरो।

क्योंकि—

(५८) तेज हवा को कोमल और नीचे की ओर झुके हुए घासों को नहीं उखाड़ती, पर बड़े २ पेड़ों को ही कष्ठ देती है। क्योंकि बड़े बड़ों पर ही बल दिखाते हैं।

(५६) श्री कृष्ण ने गाली देते चेदि देश के राजा को कुछ भी उत्तर नहीं दिया। क्योंकि शेर बादलों की गर्ज के पीछे गर्जता है न कि गीदड़ों के शब्द पर।!

तब वह दोनों करटक दमनक, संजीवक को कुछ दूर ठहरा कर पिङ्गलक के पास गए।

तब राजा से आदर पूर्वक देखे हुए प्रणाम करके बैठ गए।

राजा पूछा—तुम ने क्या उसको देखा ?

दमनक ने कहा—हां देव ! देखा है। जैसे आप ने समझा था वैसा ही है। पर वह महाबली भी आप को देखना चाहता है। इसलिए तैयार होकर बैठकर देखो। शब्द मात्र से ही नहीं डरना चाहिए।

इसी प्रकार कहा भी है—

(६०) शब्द के कारण को न जानकर सिर्फ शब्द से ही नहीं डरना चाहिए। शब्द के कारण को जानकर कराला बड़ाई को पा गई॥

राजा बोला—यह कैसे ?

दमनक ने कहा—

वानर-घण्टा की कहानी

श्री पर्वत के मध्य में ब्रह्म पर्वत नाम का एक शहर था। उसके शिखर पर घण्टाकर्ण नाम का राक्षस रहता था, यह चर्चा सदा सुनी जाती थी। एक बार घंटा लेकर भागते हुए किसी चोर को भेड़िये ने मार दिया॥

उसके हाथ से गिरे घण्टे को बानरों ने पाया और वे उस घण्टे को बार बार बजाते थे। तब शहर के लोगों ने उस खाए हुए मनुष्य को देखा। प्रतिक्षण घन्टे का शब्द भी सुनाइ देता था। इसके बाद घण्टकर्ण क्रुद्ध हुआ २ घण्टे को बजाता है, यह कह कर मनुष्य शहर से भाग गए।

तब कराला नाम की स्त्री ने सोच कर और यह घण्टे का शब्द बिना अवसर का है, क्या कहीं बन्दर तो घण्टा नहीं बजाते। यह मन में विचार कर राजा से जा कर कहा—देव ! आप कुछ धन खर्च कर दें तो मैं इस घण्टाकर्ण नाम वाले राक्षस को वश में कर सकती हूँ।

राजा ने धन दे दिया।

कराला ने घेरा डाल कर और गणेश आदि के पूजन की महिमा दर्शा कर बन्दरों को प्यारे लगने वाले कुछ फल लेकर और खुद बन में जाकर वे फल बिछा कर रख दिए।

तब घण्टे को छोड़ कर बन्दर फलों में लग गए।

और कराला घण्टे को ले कर नगर में आगई और सब लोगों से पूजी जाने लगी।

इस लिए मैं कहता हूँ केवल शबद से नहीं डरना चाहिए इत्यादि।

इस के पश्चात् संजीवक को वहां लाकर दर्शन कराए यब से संजीवक वहां प्रेम पूर्वक रहने लगा।

इस के बाद एक बार उस शेर का भाई स्तब्धकर्ण नाम का शेर वहां आगया। उसका सत्कार कर और उसे वहां बैठ कर पिङ्गलक उसके लिए पशु मारने को चला।

इतने में संजीवक ने कहा—स्वामिन्, आज, (पहले) मारे हुए जीवों का मांस कहां है?

राजा ने कहा—दमनक और करटक ही जानें।

संजीवक बोला—पता तो करो, है या नहीं।

सिंह ने सोचकर कहा—क्या इतना मांस उन दोनों ने खा लिया।

राजा ने कहा—(कुछ) खा लिया, कुछ बांट दिया, कुछ फेंक दिया। हररोज यही ढंग चलता है।

संजीवक बोला—क्या आपके पीछे ऐसा करते हैं?

राजा ने कहा—मेरे पीछे ही ऐसा करते हैं।

इस पर संजीवक बोला—यह तो ठीक नहीं, जैसे कहा भी है—

(६१) सेवक को चाहिए, कि दुःख के उपाय के इलावा कोई भी और काम राजा को सूचना दिए बिना खुद कभी न करे ॥

(६२) वह मन्त्री श्रेष्ठ गिना जाता है। जो राजा के कोष को दमड़ी दमड़ी करके बढ़ाये, क्योंकि कोष वाले राजा के प्राण उसका कोष ही है, साधारण प्राण तो कुछ नहीं ॥

(६३) दूसरा खानदानी आचरणों से पुरुष की पूजा नहीं होती (जितनी धन [से)। धन से हीन तो अपनी पत्नी से भी अपमानित होता है दूसरे लोगों का तो कहना ही क्या ॥

और यह राज्य में बड़ा भारी दोष समझा जाता।

(६४) बहुत व्यय करना, धन की इच्छा न करना, अधर्म से धन बटोरना, किसी का धन छीन लेना, और धन को दूर ले जाकर रखना ये धन के दोष हैं ॥

स्तब्धकर्ण बोला—सुनो, भाई। दमनक और करटक बहुत दिनों से तुम्हारे सहारे हैं। ये दोनों सन्धि और युद्ध का हक संभाले हुए हैं। इन्हें धन का हक न देना चाहिए।

और अधिकार के सौंपने के विषय में मैं ने जो कुछ सुना है, वह कहता हूँ—

(६५) ब्राह्मण, क्षत्रिय और किसी सम्बन्धी को अधिकार सौंपना अच्छा नहीं। क्योंकि ब्राह्मण सिद्ध हुए धन को कठिनता से भी नहीं देता ॥

(६६) यदि क्षत्रिय को धन संभाल दिया जाए तो वह बैर कर के तलवार दिखाता है। एक जाति का होने से आक्रमण करके सब कुछ छीन लेता है ॥

(६७) बहुत देर तक किसी अधिकार को संभालने वाला नौकर अपराध करने पर भी नहीं डरता, और मालिक के सामने ढिठाई दिखाकर बिना रोक टोक के फिरता है ॥

यह सब कुछ अवसर के अनुसार जानकर व्यवहार करना चाहिए।

पिङ्गलक बोला—ऐसा ही है। किन्तु ये दोनों तो मेरा वचन बिल्कुल नहीं मानते।

स्तब्ध कर्ण ने कहा—यह बिल्कुल उचित नहीं है।

क्योंकि :—

(६८) राजा को चाहिए कि वह आज्ञा को तोड़ने वाले पुत्रों को भी क्षमा न करे। वरना चित्र में छपे हुए राजा और असली राजा में क्या फर्क है।

(६९) अहंकारी का मनुष्य यश, डावांडोल स्वाभाव वाले की मैत्री, बिगड़ी हुई इन्द्रियों वाले का कुल, धन के लोभी का धर्म, व्यसनों में फंसे मनुष्य की विद्या का फल, कंजूस का सुख और मूर्ख मन्त्री वाले राजा के राज्य का नाश हो जाता है ॥

हे भाई, सब प्रकार से मेरा वचन मानो। व्यवहार तो हम ने कर ही लिया है, अब इस घास खाने वाले संजीवक का धन का अधिकार संभाल दो।

स्तब्धकर्ण के वचन से ऐसा कर लेने पर तब से लेकर

पिङ्गलक और संजीवक का समय बाकी सम्बधियों को छोड़कर आनन्द से व्यतीत होने लगा।

तब नौकरों को खाना देने में पिङ्गलक की ढील देख कर दमनक और करटक परस्पर सोचने लगे।

उस समय दमनक ने करटक को कहा—मित्र, क्या करना चाहिए? यह हमारा अपना दोष है। अपने किए दोष पर पछताना भी ठीक नहीं है। थोड़ी देर सोचकर, मित्र, जैसे मैं ने इन दोनों (शेर और बैल) की मैत्री करा दी है। वैसे ही इन में फूट करा दूंगा—

करटक बोला—ऐसा ही सही, किन्तु इन दोनों का आपस में स्वाभाविक बढ़ा हुआ प्यार कैसे तोड़ा जा सकता है।

दमनक बोला—उपाय करो जैसे कहा भी है—

(७०) जो काम उपाय से हो सकता है वह बल से नहीं हो सकता। कव्वे ने सोने के हार से काले सांप को मरा दिया॥

करटक ने पूछा—यह कैसे।

दमनक कहने लगा—

कव्वों के जोड़े की कहानी

किसी वृक्ष पर कव्वों का जोड़ा रहता था। उनके बच्चे को उस वृक्ष की खोडर में रहने वाल सांप ने खा लिया।

इसके बाद फिर गर्भवति कव्वी ने कव्वे से कहा—ऐ स्वामी यह वृक्ष छोड़ दो। यहां जब तक काला सांप रहता है तबतक हमारी सन्तान नहीं बच सकेगी। क्योंकि—

(७१) दुष्ट स्त्री, कपटी मित्र, उत्तर देने वाला नौकर और

सांप वाला घर में रहना, ये सब मृत्यु के कारण ही हैं। इसमें कोई शंका नहीं ॥

कव्वा बोला—प्यारी। डरना नहीं चाहिए मैं ने बार २ इस सांप, का अपराध सह लिया है, किन्तु अब फिर सहन नहीं करूंगा।

कव्वी बोली—आप इस बलवान् के साथ लड़ने में कैसे समर्थ होंगे ?

कव्वा बोला—इस बात की शंका मत करो। क्योंकि—

(७२) जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास ही बल है। मस्ती में मस्त हुए। घमंडी, शेर को खरगोश ने कुएं में गिरा दिया।

कव्वी ने हंस कर कहा—यह कैसे ?

कव्वा कहने लगा—

शेर और खरगोश की कहानी

मन्दार नाम के पहाड़ पर दुर्दिन्त नाम का शेर रहता था। वह सदा बहुत सारे पशुओं को मारता था।

तब सारे जानवरों ने मिल कर शेर को निवेदन किया, हे पशुओं के स्वामी आप एक ही बार बहुत सारे पशुओं को मारते हैं, यदि आप कृपा करें तो हम ही आप के भोजन के लिये प्रतिदिन एक २ पशु भेज दिया करेंगे।

इस पर सिंह ने कहा " यदि तुम्हारी इच्छा है, तो ऐसा ही सही "।

तब से ले कर वह सिंह एक २ निश्चित पशु को खाने लगा।

एक बार खरगोश की बारी का गई उसने सोचा—

(७३) जीवन की आशा से ही भय के कारण मारने वालों के आगे विनय की जाती है। यदि मैं मर ही जाऊंगा तो मुझे शेर के आगे गिड़गिड़ाने से क्या फायदा ॥

सो धीरे २ जाता हूँ फिर शेर भी भूख से व्याकुल होकर क्रोध से उसे बोला—हे देखा मैं अपराधी नहीं हूँ। मार्ग में आता हुआ मैं दूसरे शेर से जबरदस्ती पकड़ा गया। उसके आगे दोबारा आने की सौगन्ध खा कर आप से निवेदन करने के लिए आया हूं।

सिंह ने क्रोध से कहा—जल्दी चल कर उस दुष्ट को दिखा। वह दुष्ट कहां रहता है ?

फिर खरगोश उसे लेकर एक गहरे कूप में दिखलाने गया। यहां आकर स्वामी खुद ही देखलें "यह कह उसने उस कुएं के जल में उस शेर का ही अक्स दिखा दिया।

फिर वह सिंह क्रोध से शब्द करता हुआ घमण्ड से उसके ऊपर अपने को फैंक कर मर गया।

इस लिए मैं कहता हूँ " जिसकी बुद्धि है, उसका ही बल है इत्यादि।

कव्वी बोली, मैं ने सब सुन लिया, अब जो जिस प्रकार करना है वह कहिए।

कौव्वा बोला—यहां राजपुत्र प्रति दिन आकर पास के सरोवर में स्नान करता है। स्नान के समय उसके शरीर से उतारे गए, तीर्थ शिला पर रखे हुए सोने के सूत्र को अपनी चोंच से उठा कर उस वृक्ष की खोडर मे रख देना।

सो एकबार राजपुत्र के स्नान के लिए जल में दाखिल होने पर कव्वी ने वैसे ही किया।

उसके बाद सोने की हार की तलाश में लगे हुए राज पुत्र ने उस वृक्ष की खोडर में काला सांप देखा और इसे मार दिया।

इस लिए मैं कहता हूँ कि "जो उपाय से हो सकता है इत्यादि"।

करटक बोला—सो जाइए आपका रास्ता कल्याणकारी हो।

फिर दमनक पिंगल के पास जाकर प्रणाम करके बोला हे देव! मैं किसी आने वाले बड़े भयङ्कर काम का विचार कर के आया हूँ। क्योंकि—

(७४) हित चाहने वाले पुरुष को आपत्ति के आने पर, कुमार्ग पर चलने के समय, काम के समय के व्यतीत होने पर बिना पूछे ही हित की बात कह देनी चाहिये॥

मन्त्रियों का यह क्रम हैं।

(७५) प्राणों का त्याग और सिर का कटना भी अच्छा है, स्वामी के पद की प्राप्ति रूप गिरावट को चाहने वाले की उपेक्षा करनी अच्छी नहीं है॥

पिङ्गलक ने कहा कि आप अब क्या कहना चाहते हो?

दमनक बोला—हे देव! आप पर बुरा व्यवहार करने वाले के समान दिखाई दे रहा है। मेरे सामने आपकी ३ शक्तियों (यन्त्र, उत्साह, प्रभुता) की निन्दा कर के आप के राज्य की इच्छा करता है।

यह सुन कर पिङ्गलक डर और आश्चर्य के साथ चुप हो गया।

दमनक ने फिर कहा—हे देव ! सभी मन्त्रियों को छोड़ कर जो आप ने सञ्जीवक को सब अधिकारों पर नियुक्त कर दिया है, वही दोष है। क्योंकि—

(७६) मन्त्री, और राजा के बहुत ज्यादा उन्नत होने पर लक्ष्मी अपने पैर टिका कर उन दोनों में निवास करती है। परन्तु वह स्त्री स्वभाव के कारण भार को न सहती हुई, इन दोनों में से एक को छोड़ देती है॥

और भी—

(७७) जब राजा एक मन्त्री को राज्य में प्रधान बना देता है, तो उसे मोह के कारण अहंकार पैदा हो जाता है। और वह राज की मस्ती के आलस्य से बिगड़ जाता है। उस बिगड़े हुए के हृदय में स्वतन्त्रता यी इच्छा स्थान बना लेती है॥

और भी—

(७८) जहर से मिले हुए अन्न का, हिले हुए दांत का, और दुष्ट मन्त्री का जड़ से उखाड़ देना ही सुख दायक है।

(७९) जो राज मन्त्रियों के व्यसनी होने पर भीं लक्ष्मी उन के आधीन कर देता है। वह राजा संचारकों के बिना अन्धे की प्रकार सेवकों के बिना दुःखी हो जाता है॥

वह सभी कामों में अपनी इच्छानुसार चलता है। इस में आप ही प्रमाण हैं। आप ही जानते हैं।

शेर ने सोच कर कहा—भद्र ! यद्यपि ऐसा है, तो भी संजीवक के साथ मेरा बहुत प्यार है।

(८०) जो पुरुष प्रिय है, वह बुराइयों को करता हुआ भी प्रिय ही है। सभी दोषों से दूषित भी अपना शरीर भला किसे प्यारा नहीं होता।

दमनक बोला—हे देव ! वही बड़ा दोष है। आपने बाप दादा से चले आए भृत्यों को छोड़ कर इस आगन्तुक को आगे किया हुआ है और यह ठीक नहीं किया। क्योंकि—

(८१) पहले से आए हुए सेवकों को छोड़ कर बाहर से आए हुओं का सन्मान न करे। इससे बढ़ कर कोई दोष न होगा, क्यों कि यह दोष राज्य में खराबी डालने वाला है।

सिंह बोला—क्या ही बड़ा आश्चर्य है ! जो मुझ से अभय वचन देकर लाया गया है और बढ़ाया गया है, वह मुझ से कैसे द्रोह करता है ?

दमनक बोला—देव !

(८२) नित्य सेवा किया हुआ भी दुष्ट अपने स्वभाव का आकार रखता है। जैसे चिकना करने और मलने आदि के उपायों से झुकाई हुई भी कुत्ते की पूंछ स्वभाव से टेढी रहती है।

(८३) उन्नति देना दुष्टों की प्रीति के लिए कैसे हो सकता है। ज़हर के वृक्ष अमृत से सींचने पर भी हित कर फल नहीं देते॥

इस लिए मैं कहता हूँ।

(८४) मनुष्य जिसके निरादर को न चाहे, बिना पूछे हुए उसके हित का वचन कह दे। यही सज्जनों का धर्म है। इससे उलटा असज्जनों का धर्म है।

और जैसे कहा भी है।

(८५) मित्र वह है जो बुराई से रोकता है, कर्म वह है जो मल रहित है। स्त्री वह है, जो आज्ञाकारिणी है। बुद्धिमान् वह है, जो मस्ती पैदा न करे। सुखी वह है, जो तृष्णा से रहित है। मित्र वह है, जो स्वाभाविक है। पुरुष वह है, जो जितेन्द्रिय है।

यदि संजीवक के व्यसनों से पण्डित आप समझाये हुए भी नहीं हटते, तो ऐसे सेवक का दोष नहीं।

और जैसे कहा है—

(८६) कामी भोगी राजा काम को काम और हि का नहीं ख्याल करता। इच्छानुसार स्वतन्त्र हो कर मत वाले हाथी की प्रकार विचरता है। पीछे अभिमान का मारा हुआ वह जब भारी शोक में गिर जाता है, तो सेवकों पर द्वेष करता है, अपने अविनय को नहीं जानता॥

पिङ्गलक (अपने मन में)

(८७) किसी के द्वारा निन्दा करने पर दूसरे को दण्ड न दे, स्वयं जान कर ही दण्ड दे॥

(८८) गुण दोष का निश्चय किए बिना, किसी पर दया करना या दण्ड देना विधि नहीं है। यदि कोई ऐसा करता है तो उसकी ऐसी दशा होगी, जैसे अपने नाश के लिए घमंड के कारण सांप के मुंह में डाला हुआ अपना हाथ॥

(प्रकट कर) बोला—तो क्या संजीवक को सूचित कर लिया जाए—

दमनक घबराहट से बोला—देव ! ऐसा मत करें, इससे मन्त्र भेद होता है। जैसे कहा है—

(८९) यह मन्त्ररूपी बीज जिस किसी तरह छिपा कर रक्षा करने योग्य है। थोड़ा सा भी भेद को प्राप्त न हो, वह यन्त्र फूटा हुआ फलदायक नहीं होता। इस पद्य में मन्त्र को बीज रूप में वर्णन किया गया है जिस प्रकार बीज सुरक्षित रहने पर ही जमता, यदि टूट जाए तो नहीं जमता, इसी तरह मन्त्र भी सुरक्षित रहने पर ही फलदायक होता है। यदि भेद को प्राप्ति हो जाए तो फल नहीं देता॥

(९०) जिस काम में किसी को लेना या देना हो, उस काम को कर्त्तव्य काम को यदि शीघ्र न किया जाए तो काल उसके रस को पी लेता है॥

सो ठीक प्रकार से आरम्भ किया हुआ काम अवश्य ही बड़े यत्न से करना चाहिए।

और भी—

(९१) मन्त्र अधीर योधा के समान है, वह सभी अंगों के सुरक्षित और ढके हुए होने पर भी शत्रुओं से भेद की शंका से देर तक ठहर नही सकता जिस तरह योधा सुरक्षित होता हुआ शत्रुओं से भेद की शंका से देर तक ठहर नहीं सकता।

दोषी को देख कर भी यदि दोष पर ध्यान न देते हुए उससे मेल रखेगा तो बहुत ही अनुचित है।

सिंह बोला—पहले हमें जान लेना चाहिए कि वह हमारा क्या कर सकता है।

दमनक बोला—देव!

(९२) किसी प्राणी को और उसके सहायकों को जाने बिना उसकी शक्ति का कैसे निर्णय हो सकता है? देखो, टटींहरे

ने भी समुद्र को भी व्याकुल कर दिया ॥

शेर पूछता है—यह कैसे ?

दमनक कहता है—

टटीहर और समुद्र की कहानी

दक्षिण दिशा में स्थित समुद्र के किनारे पर टटीहरे का जोड़ा रहता था। सूने वाली टटीहरी पति को बोली—नाथ! प्रसव योग्य स्थान चुपचाप ढूंढिए।

टटीहरा बोला—हे प्यारी यही स्थान सूने योग्य है।

वह बोली—यह जगह समुद्र की लहर से घिर जाता है।

टटीहरा बोला—क्या मैं निर्बल हूँ। जो समुद्र से आक्रान्त हो जाऊंगा।

टटीहरी हंस कर बोली—हे स्वामी, आप और समुद्र में बड़ा फ़र्क है।

(६३) तिरस्कार को नष्ट करने के लिए जो योग्य एवं अयोग्य को जानता है और इस संसार में जिस को विशेष ज्ञान है वह कठिनता में भी दुःखी नहीं होता ॥

और भी—

(६४) अनुचित काम का शुरू करना अपने रिश्तेदारों से विरोध, प्रबल बढ़ाना, स्त्री पर विश्वास मृत्यु के ये चारों दरवाज़े हैं ॥

तब कठिनता से स्वामी के कहने से वहीं पर ही वह सू गई। यह सब सुन कर समुद्र ने भी उसकी ताकत को जानने के

लिए उसके अण्डे हर लिए।

तब टटीहरी शोक से व्याकुल हुई २ पति को बोली—नाथ ! कष्ट आ पड़ा है। वे मेरे अण्डे नष्ट हो गए।

टटीहरा बोला—प्यारी ! तू रो नहीं। यह कहकर वह पक्षियों का सम्मेलन करके पक्षियों के स्वामी गरुड़ के पास गया।

वहां जा कर टटीहरे ने सब हाल भगवान गरुड़ के सामने कहा—

हे देव ! समुद्र ने मुझे अपने घर में बैठे हुए बिना अपराध ही दुःख दिया है।

फिर उसके बचन को सुन कर गरुड़ ने उत्पत्ति, रक्षा और संहार के कारण भगवान नारायण को सूचित किया।

उसने समुद्र को अण्डे देने के लिए आज्ञा दी, फिर भगवान की आज्ञा को सिर पर धारण करके समुद्र ने वे अण्डे टटीहरे को ला दिये।

इस लिए मैं कहता हूँ। शक्ति को जान कर इत्यादि राजा ने कहा—यह कैसे पता लगे कि वह द्रोह बुद्धि वाला है।

दमनक ने कहा—जब वह घमंड के साथ, सींगों के अगले हिस्से से प्रहार करने के लिए तत्पर एवं हैरान सा हो कर आयेगा। तब आप को पता लगेगा।

यह कह कर संजीवक के पास चला गया।

वहां गया हुआ धीरे २ चलता हुआ हैरान सा अपने आप को दिखाने लगा।

संजीवक ने आदर पूर्वक पूछा—हे प्यारे ! तेरा कुशल तो है ?

दमनक बोला—नौकरों को सुख कहां, क्योंकि—

(९५) जो राजा के नौकर हैं उनकी सम्पत्तियां तो परा-धीन है। उनका चित सदा बेचैन रहता है और उनको अपने जीवन पर भी विश्वास नहीं होता।

और भी—

(९६) धन को पाकर कौन नहीं घमंड करता, किस विषयी की आपत्तियां दूर हुई संसार में स्त्रियों ने किस का मन विचलित किय ? और कौन राजाओं का प्यारा है ? काल की भुजा में कौन नहीं पड़ा ? और किस मांगने वाले ने आदर पाया है ? कौन मनुष्य दुष्टों के कपट के बचन में पड़ कर कल्याण से रहा ॥

संजीवक ने कहा—मित्र ! बोल, यह क्या है ?

दमनक बोला—मैं दुर्भागा क्या हूँ ? देख—

(९७ जैसे समुद्र में डूबता हुआ मनुष्य सांप का सहारा ले कर न छोड़ता है न पकड़ता है। इसी तरह मैं भी अब घबराया सा हूँ ॥

यह कह कर लम्बी आह भर कर बैठ गया।

संजीवक बोला—मित्र, मन की बात खोल कर कहो।

दमनक ने एकान्त में हो कर कहा।

यद्यपि राजा का भेद प्रकट नहीं करना चाहिये तथापि आप हमारे विश्वास से आए हैं। परलोक में हित चाहने वाले मुझे तुम्हारे हित की कहनी है। सुनो, तुम्हारे पर बिगड़े इस स्वामी ने एकान्त में कहा है। संजीवक को ही मार कर अपने परिवार को तृप्त करूंगा।

यह सुन कर संजीवक बहुत दुःखी हुआ।

दमनक फिर बोला—दुःख मत करो। समयानुसार काम करो।

संजीवक (मन में) तो क्या इसी की इच्छा है या नहीं। यह बात व्यवहार से भी निश्चय नहीं की जा सकती।

फिर बोला—आह! यह क्या दुःख आ पड़ा है।

(९८) राजा बड़े परिश्रम से सेवा किया हुआ भी खुश नहीं होता। यह क्या आश्चर्य की बात है, यह तो अनोखी मूर्ति है जो सेवा किया हुआ भी शत्रु बन जाता है॥

इस बात का तत्त्व समझ में नहीं आता।

क्योंकि—

(९९) जो किसी निमित्त को सामने रख कर किसी पर क्रोध करता है। वह उस क्रोध के कारण के दूर कर देने से जरूर ही खुश होता है। पर जिस का मन बिना किसी कारण ही अप्रसन्न रहता है मनुष्य उसे कैसे प्रसन्न कर सकता है॥

मैं ने राजा का क्या कसूर किया है?

दमनक बोला यह ऐसा ही है। सुनो—

(१००) कोई विद्वानों एवं प्रेमियों से उपकार किया हुआ भी उन से द्वेष करता है। एवं दुष्ट पुरुषों से प्रत्यक्ष अपकार किया हुआ भी उन से प्रेम ही करता है। अस्थिर स्वभाव वालों का चरित्र कुछ आश्चर्य जनक होता है—यह बड़े आश्चर्य की बात है, सेवा धर्म बड़ा कठिन है, योगियों की पहुँच से भी परे है॥

(१०१) चन्दन वृक्ष की जड़ को सांपों ने घेर रखा है। फूलों को भौंरों ने, शाखाओं को बानरों ने, और चोटियों को पक्षियों ने घेर रखा है।

उस स्वामी को मैं ने जान लिया है कि वह वाणी का मीठा और दिल का ज़हरीला है।

(१०२) दूर से उठाना, प्रेम भरे नेत्रों से देखना, बैठने के लिए आधा आसन छोड़ देना, ज़ोरसे आलिङ्गन में ले जाना, प्यारी बातों में आदर दिखाना, अन्दर खोट धारण करना, और बाहर से मीठापन रखना, छल में बहुत चतुर होना, वह कौन सी अपूर्व नाटक विधि है जो दुर्जनों ने सीख रखी है।

संजीवक फिर लम्बी साँस भर कर बोला—आह ! दुख है ! घास खाने वाला मैं शेर से किस लिए मार दिया जाऊंगा।

(फिर सोच कर) न जाने किस ने राजा को मेरे पर क्रुद्ध कर दिया। भेद को प्राप्त हुए राजा से सदा डरना चाहिए।

(१०३) मन्त्री के साथ राजा का चित्त कभी बिगड़ जाए तो टूटे हुए बिलौर पत्थर के टुकड़े समान उस को कौन जोड़ सकता है।

इसलिए संग्राम में मृत्यु ही श्रेष्ठ है। अब उसकी आज्ञा के अनुकूल चलना अनुचित है।

युद्ध का समय भी यह है।

(१०४) जहां युद्ध न करने में मृत्यु निश्चय हो, और

युद्ध करने में जीवन में सन्देह हो, बुद्धिमान पुरुष उसी को युद्ध का समय कहते हैं ॥

(१०५) जब युद्ध करने में कुछ भी अपना भला होता हुआ न देखे तो बुद्धिमान पुरुष शत्रु के साथ युद्ध करता हुआ मर जाए ॥

यह सोच कर संजीवक बोला —हे मित्र ! वह मुझे मारने की इच्छा वाला कैसे प्रतीत होगा ?

दमनक बोला—यदि वह पूंछ उठाये, और मुंह खोले तेरी ओर देखे तू भी अपना बल दिखा देना। क्योंकि—

(१०६) तेज से रहित बलवान भी किसी के अपमान का अधिकारी नहीं है ? लोग बुझी हुई आग या राख पर बेखटके पैर रख देते हैं॥

किन्तु यह सब गुप्त रूप से करहा, नहीं तो न तुम रहोगे, न मैं। यह कह कर करटक दमनक के पास गया।

करटक ने पूछा—क्या बना ?

दमनक ने कहा—उन दोनों में फूट पा आया हूँ।

करटक बोला—इस में क्या सन्देह है। क्योंकि—

(१०७) दुष्टों का कौन बन्धु है मांगने से कौन नाराज नहीं होता। धन पाने पर घमण्ड में कौन नहीं आ जाता, और बुरा काम करने में कौन चतुर नहीं ॥

इसके बाद दमनक पिङ्गलक के पास जाकर बोला देव ! वह पापी आ गया है आप त्यार हो कर बैठ जायें। ऐसा कह कर

उसे पहले हुए आकार में करा दिया। संजीवक ने भी आ कर उस प्रकार के बिगड़े रूप वाले शेर को देखकर अपने अनुकूल बल दिखाया। तब उन दोनों के युद्ध में पिङ्गलक ने संजीवक को मार दिया।

इस के बाद सिंह संजीवक को मार कर थका हुआ और शोक से भरे हुए की तरह बैठ गया। और बोला—मैं ने यह क्या बुरा काम कर दिया! क्योंकि—

(१०८) जैसे हाथी को शेर तो मारता है, किन्तु उस का मांस अन्य पशु भी खाते हैं इसी प्रकार धर्म का उल्लंघन कर के पाप का भागी तो केवल राजा बनता है किन्तु उस के राज्य का उपभोग दूसरे करते हैं॥

और भी—

(१०९) भूमि के एक टुकड़े के नाश होने से या गुणयुक्त बुद्धिमान नौकर के नाश होने से नौकर का नाश राजा की मृत्यु के समान होता है क्योंकि नष्ट हुई २ भूमि फिर मिल सकती है पर नष्ट हुआ २ सेवक फिर नहीं मिल सकता॥

दमनक बोला—स्वामी, यह कौन सा नया न्याय है कि शत्रु को मार कर पछतावा किया जाए। कहा भी है—

(११०) चाहे पिता हो, भाई हो पुत्र हो, चाहे मित्र हो, यदि वह प्राणों का नाश करने वाला है तो ऐश्वर्य चाहने वाला है तो ऐश्वर्य चाहने वाले को चाहिये कि उसका बध कर दे॥

(१११) शत्रु पर और मित्र पर क्षमा दिखाना यतियों

को ही अच्छा लगता है। किन्तु अपराधी प्राणियों पर दया करना राजाओं का बड़ा दोष माना गया है॥

(११२) जो राज्य के लोभ से या अहंकार से स्वामी का पद चाहता है उस के लिए एक प्रायश्चित है कि उस के प्राण ले लिए जायें, दूसरा कोई प्रायश्चित नहीं॥

इस प्रकार दमनक से खुश किया हुआ और अपने आप में आया हुआ पिङ्गलक सिंहासन पर बैठ गया।

दमनक भी खुश हुआ "आप की जय हो, सारे संसार का कल्याण हो" यह कह कर सुख से रहने लगा।

विष्णु शर्मा बोला—'सुहृद् भेद' आप ने सुन लिया।

राजपुत्रों ने कहा—आप की कृपा से सुन लिया है। बहुत प्रसन्न हुए।
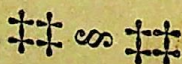
विग्रह

इसके बाद फिर कथा के शुरू के समय राजपूतों ने कहा—आर्य ! हम राजपूत हैं, इस लिए युद्ध के विषय में सुनने को हमारी जबरदस्ती इच्छा है।

विष्णु शर्मा ने कहा—यदि आपको यह अच्छा लगता है तो यही कहता हूँ। विग्रह ही सुनिये जिसका यह पहला श्लोक है—

(१) इसी के समय मोरों के समान बल वाले युद्ध में, कव्वों ने शत्रु के घर में दाखिल होकर और विश्वास दिला करके हंसों को ठग लिया॥

राज पुत्रों ने कहा—यह कैसे ?

विष्णु शर्मा कहने लगा—

कर्पूर द्वीप में पद्म केलि नाम का तालाब था। वहां हिरण्य गर्भ नाम का राजहंस रहता था। उसे तमाम जलचरों और पक्षियों ने मिल कर पक्षियों का राजा बना दिया। क्योंकि—

(२) यदि भली प्रकार रास्ता दिखाने वाला राजा न हो तो प्रजा इस तरह नष्ट हो जाती है जैसे बिना मल्लाह के नौका नष्ट हो जाती है॥

(३) राजा प्रजा की रक्षा करता है। और रक्षा की हुई प्रजा राजा को बढ़ाती है। राजा के बढ़ जाने पर रक्षा कल्याण

कारी सिद्ध होती है। उस के बिना होना भी न होने के समान है॥

एक समय वह राजहंस कमलों के फैलाव वाले पलंग पर सुख से बैठा परिवार वालों से घिरा हुआ था।

तब किसी देश से आकर दीर्घ मुख नाम का बगुला प्रणाम कर के बैठ गया।

राजा ने कहा—दीर्घमुख! दूसरे देश से आए हो कोई समाचार सुनाओ।

वह बोला—देव एक बहुत ही बड़ी है, उस को सुनाने के लिए ही जल्दी आया हूँ। सो सुनिये—

जम्बुद्वीप में विन्ध्य नाम का पर्वत है। वहीं चित्रवर्ण नाम का मोरों का राजा रहता था। उस के सेवक पक्षियों ने घूमते घामते दग्धारण्य में फिरते हुए मुझे देख लिया और पूछा—तू कौन है? कहां से आया है?

तब मैं ने कहा—मैं कपूर द्वीप के राजा चक्रवर्ती हिरण्य-गर्भ नामक राजहंस का सेवक हूँ। और शौक के कारण दूसरे देशों को देखने के लिए आया हूँ। यह सुन कर पक्षियों ने कहा—इन दोनो देशों और इन दोनों राजाओं में कौन सा अच्छा है?

मैं ने कहा—ऐसा क्यों कहते हो इन में बड़ा भारी भेद है। क्योंकि कपूर द्वीप में तो स्वर्ग ही है। और राज हंस मानो दूसरा स्वर्ग पति है। यहां मरे हुए देश में तुम क्या रहे हो? हमारे देश में चलो।

तब मेरे वचन को सुन कर सारे गुस्से हो गये । कहा भी है—

(४) जैसे सांपों को दूध पिलाना, केवल उन का ज़हर ही बढ़ाना है। उसी तरह मूर्खों को उपदेश किया हुआ भी उन्हें गुस्सा करने के लिए होता है, शांति के लिए नहीं।

(५) विद्वान को ही उपदेश देना चाहिये, मूर्खों को कभी उपदेश देना ठीक नहीं। जैसे बन्दरों को उपदेश दे कर पक्षी स्थान छोड़ कर चले गए ॥

राजा बोला—यह कैसे ?

दीर्घमुख कहने लगा—

पक्षी और बन्दरों की कहानी

नर्मदा के तट विशाल (बड़ा) सेम्बल का वृक्ष था। वहां बनाये हुये घोंसलों में पक्षी सुख से रहते थे।

एक बार वर्षा ऋतु में नील के समूह के समान नीले बादलों से आकाश के घिर जाने पर बहुत जोर की वर्षा हो गई।

फिर वृक्ष के नीचे स्थित जाड़े से पीड़ित, कांपते हुए बानरों को देख कर कृपा से पक्षियों ने कहा—हे बानरो! सुनो-

(६) हम ने चोंच से लाए हुये तिनकों से घोंसले बनाये हैं। हाथ पांव आदि रखते हुये भी तुम क्यों दुःखी हो रहे हो ॥

यह सुन कर पैदा हुए २ क्रोध वाले बानरों ने सोचा— आह! हवा से हीन घोंसलों में स्थित

सुखी पत्ती हमारी निन्दा करते हैं। सो पहले वर्षा बन्द हो जाए। इसके बाद वर्षा शान्त होने पर उन बानरों ने वृक्ष पर चढ़ कर घोंसले तोड़ दिए और उनके अण्डे नीचे गिरा दिए

इस लिए मैं कहता हूँ विद्वान को ही उपदेश देना चाहिए इत्यादि

राजा ने कहा—फिर उन्होंने क्या किया ?

बगुले ने कहाकि पक्षियों ने क्रोध से कहा कि किस ने उस राजहंस को राजा बनाया ?

फिर पैदा हुए २ क्रोध वाले मैं ने कहा कि तुम्हारा मोर किस से राजा बनाया गया है ?

यह सुनकर वे सब मुझे मारने को तैयार हो गए। तो मैंने भी अपना बल दिखा दिया।

राजा ने हंस कर कहा।

(७) जो अपने और शत्रु के बल और कमजोर को देख कर उनमें अन्तर नहीं जानता, वह शत्रु से तिरस्कृत और भी—

(८) बाघ के चमड़े से ढका हुआ मूर्ख गधा सदा देर तक खेत में खाता हुआ बोलने के दोष से मारा गया।

बगुला ने पूछा यह कैसे ?

राजा ने कहा—

धोबी और गधे की कहानी

हस्तिना पुर में विलास नाम का धोबी था।

उसका गधा ज्यादा भार उठानेके कारण दुर्बल होकर मरा हुआ सा हो गया।

फिर उस धोबी ने उसे व्याघ्र के चमड़े से ढक कर वन के समीप अन्न के खेत में छोड़ दिया।

फिर खेती के स्वामी दूर से उसे देख कर व्याघ्र समझ कर जल्दी ही भाग जाते।

इसके बाद एक बार मिट्टी जैसे रङ्ग के कम्बल द्वारा शरीर ढक कर कोई खेती का रक्षक धनुष बाण त्यार कर शरीर को झुकाए हुए एकान्त में ठहर गया।

इच्छानुसार खेती के खाने से बलवान् मज़बूत शरीर वाला गधा उसे दूर से देख कर 'यह गधा है" ऐसा विचार कर ऊँचे से शब्द करता हुआ उसकी ओर भागा।

उस खेती के रक्षक ने चीत्कार से निश्चय कर लिया कि यह गधा है, आसानी से उसे मार दिया।

इस लिए मैं कहता हूँ कि 'देर तक सदा खेती को खाता हुआ...............इत्यादि।

फिर—दीर्घ मुख बोला—तो पक्षियों ने कहा कि ऐ पापी, बगुले, हमारी भूमि में विचरता हुआ तू हमारे स्वामी की निन्दा करता है, तुझे क्षमा नहीं किया जा सकता।

यह कह कर क्रोध से भरे हुए सारे पक्षियों ने चोंच से मुझ पर प्रहार कर कहा। ऐ मूर्ख देख। वह हंस तेरा राजा नर्म स्वभाव का है! उसका राज्य में अधिकार ही नहीं। क्योंकि बहुत कोमल स्वभाव वाला हथेली पर रखे हुए धन को भी बचाने योग्य नहीं होता। यह भला कैसे ज़मीन पर राज्य कर सकता है। तुम तो अनुभव रहित हो। इसी से उसके आश्रय का उपदेश कर रहे हो। सुनो—

९. फल और छाया से युक्त बड़े वृक्ष का सेवन करना चाहिए। यदि कभी फल प्राप्त न हो तो छाया को कौन हटा सकता है। और भी—

१०. आश्रय और आश्रय लेने वाला के भाव से जब विगुण में गुण का विस्तार किया जाए तो बड़ा भी छोटा हो जाता है। जैसे शीशे में हाथी खास तौर पर छोटा दिखाई देता है।

११. बड़ी शक्ति वाले राजा का नाम लेने से ही सफलता प्राप्त हो जाती है। चंद्रमा का नाम लेने से ही खरगोश सुख पूर्वक रहने लगे।

मैं ने कहा—यह कैसे ?

पक्षियों ने उत्तर दिया। "खरगोश और हाथियों के दल क कहानी।" कभी वर्षा ऋतु में भी वर्षा के न होने पर प्यास से व्याकुल हाथी समूह ने अपने झुण्ड के स्वामी को कहा कि हमारे जीने का क्या उपाय है ? यहां तो छोटे २ जीवों के लिए स्थान है हम तो स्नान के स्थान के न होने पर अन्धे से हो रहे हैं। कहां जाएं ? क्या करें ?

हाथियों के स्वामी ने बहुत दूर न जाकर निर्मल तालाब दिखा दिया।

इस के बाद कुछ दिन गुजरने पर उसके तट पर रहने से छोटे खरगोश हाथियों के पैरों की चोट से कुचल दिये गए।

तब शिली मुख नाम के खरगोश ने सोचा कि प्यास से व्याकुल हाथियों के समूह का प्रतिदिन यहां आना होगा, इस से हमारा कुल नष्ट हो जाएगा।

इस पर विजय नाम के खरगोश ने कहा, कि दुखी मत

होओ मैं इसका उपाय करूंगा।

वह प्रतिज्ञा करके चला गया। जाते हुए उसने सोचा की हाथियों के झुण्ड के पास ठहर कर मुझे कुछ कहना पड़ेगा। क्योंकि—

१२. हाथी छूने पर सांप सूंघने पर दुष्ट हंसने पर और राजा सम्मानित किया हुआ भी मार डालता है।

इस लिए मैं पर्वत शिखर पर चढ़ कर झुण्ड के स्वामी को पुकार कर बुलाता हूं।

उसने कहा कि मैं खरगोश हूँ। भगवान चांद ने मुझे आपके पास भेजा है।

झुण्ड पति ने कहा— काम कहिए।

१३. विजय बोला—शस्त्रों के उठने पर भी कभी दूत झूठ नहीं बोलता है सदा सच्ची ही कहता है।

सो मैं उनकी आज्ञा से कहता हूँ सुनो, ये चन्द्र सरोवर की रक्षा करने वाले खरगोश तुम ने निकाल दिए हैं। यह ठीक नहीं। वे खरगोश चिरकाल से मेरे द्वारा रक्षा किए गए हैं इसलिए मेरी शशांक इस नाम से प्रसिद्ध है।

दूत के ऐसा कहने पर झुण्डपति ने भय से यह कहा कि यह अज्ञान से किया है। फिर नहीं किया जायेगा।

दूत बोला—यदि ऐसा होता है तो इस सरोवर में क्रोध से काँपते हुए भगवान् चन्द्रमा को प्रणाम करके और प्रसन्न करके जाओ।

फिर रात को झुण्ड पति को लेजा कर जल में चञ्चल

चन्द्रमा का अक्स दिखाया और झुण्ड पति से प्रणाम करवाया।

उसने कहा-हे देव! अज्ञानता के कारण इस ने अपराध किया है। सो क्षमा कीजिए, इस तरह दूसरी बार नहीं करेगा। यह कह कर उसे भिजवा दिया।

इस लिए कहते हैं कि नाम लेने पर भी सिद्धि हो जाती है—इत्यादि।

फिर मैं ने कहा कि वह हमारा स्वामी राज हंस अति प्रतापी और समर्थ है। तीनों लोकों का भी प्रभुत्व उसके योग्य है। फिर इस राज्य का तो क्या कहना!

तब वे पक्षी बोले-हे दुष्ट! क्यों हमारे राज्य में घूम रहा है? यह कह कर मुझे राजा चित्र वर्ण के पास ले गए।

फिर राजा के आगे उन्हों ने ले जाकर प्रणाम करके मुझे कहा कि हे देव! ध्यान दो, यह बगुला हमारे राज्य में घूमता हुआ भी आप की निन्दा करता है।

राजा बोला—यह कौन है? कहां से आया है? उन्हों ने कहा कि हिरण्यक गर्भ नाम के राज हंस का यह सेवक है। कर्पूर द्वीप से आया है।

इस के बाद मुझे मन्त्री गीध ने पूछा वहां प्रधान मन्त्री कौन है।

मैंने कहा—सब शास्त्रों के जानने वाला सर्वज्ञ नाम का चकवा है।

गीध ने कहा—कि ठीक है वह अपने देश का है। क्योंकि—

१४. अपने देश में पैदा हुए, वंशीय, सदाचारी, पवित्र,एवं साफ़ मन वाले, गुप्त बातें जानने वाले, दोषों से रहित व्यभिचार से रहित।

(१४) अपने देश में पैदा हुए, वंशीय सदाचारी पवित्र एवं साफ मन वाले, गुप्त बातें जानने वाले, दोषों से रहित, व्यभिचार से रहित।

१५. व्यवहार के तत्त्वों को जानने वाले; परम्परा से चले आ रहे, प्रसिद्ध, विद्वान और धन को पैदा करने वाले को राजा अवश्य अपना मन्त्री बनाए॥

इतने में तोते ने कहा—देव! कपूर द्वीप आदि छोटे द्वीप जम्बु द्वीप के अन्तर्गत हैं। वहां भी आपका अधिकार है।

तब राजा ने भी कहा—ऐसा ही है। क्योंकि... ...

१६. राजा, पागल, घमण्डी और धन गर्वित ये सभी न मिलने योग्य पदार्थ को भी चाहते हैं। किन्तु जो मिल सके उसका तो क्या ही कहना॥

तब मैं ने कहा—यदि वचन मात्र से ही अधिकार सफल होता है, तो जम्बु द्वीप में भी हमारे प्रभु हिरण्यक गर्भ का अधिकार है।

तोता बोला—इसका फैसला कैसे हो?

मैं ने कहा—युद्ध से ही हो सकता है।

राजा ने हंस कर कहा—तुम जाकर अपने स्वामी को त्यार करो।

तब मैं ने कहा—अपना दूत भी भेज दो।

राजा बोला—दूत बन कर कौन जाएगा। क्योंकि इस प्रकार का दूत करना चाहिए।

१७. दूत भक्त, गुणी, चतुर सावधान, दोष रहित, सहन शील, दूसरे के मर्म को जानने वाला, एवं प्रतिभा सम्पन्न ब्रह्मण जाति का ही होना चाहिए॥

गीध ने कहा—दूत तो बहुत हैं, किन्तु ब्राह्मण को ही बनाओ।

राजा ने कहा—तो तोता ही जाय। तोते! तू ही इसके साथ जाकर हमारी इच्छा प्रकट कर।

तोते ने कहा—जैसी आप आज्ञा करते हैं। पर यह बगुला दुष्ट है इसलिए मैं इसके साथ नहीं जाऊंगा। जैसा कि कहा है——

१८. कुकर्म (बुरा काम) तो दुष्ट करता है किन्तु फल सज्जनों पर पड़ता है। जैसे सीता तो रावण चुरा ले गया किन्तु बांधा गया समुद्र।

१९. और भी—दुष्ट के साथ न कहीं ठहरना चाहिए, और जाना चाहिए। कव्वे के साथ ठहरा हुआ हंस मारा गया एवं साथ जाती हुई बत्तख मारी गई।

राजा बोला--यह कैसे?

तोते ने कहा—

उज्जयिनी के रास्ते के प्रांत में बड़ा पीपल का वृक्ष था। वहां हंस और कव्वा रहते थे।

कभी गरमी के समय थका हुआ कोई पथिक् वहां वृक्ष के

नीचे धनुष बाण धर कर सो गया ।

थोड़ी देर में उसके मुहं पर से वृक्ष की छाया दूर हो गई । तब सूर्य के तेज से उसके मुंह को व्याप्त देख कर वृक्ष पर जा बैठे हुए हंस ने कृपा से पंख फैला कर उसके मुंह पर छाया करदी । उसके बाद नींद से सुखी उस पथिक ने मुंह खोल दिया ।

तब दूसरे के सुख को न सहन कर सकने वाला वह कव्वा स्वभाव से दुष्ट होने के कारण इस के मुंह में बीठ करके भाग गया ।

जब उस पथिक ने उठकर ऊपर देखा तब हंस को बैठा देख कर बाण मार कर मार दिया ।

इस लिए मैं कहता हूँ—दुष्ट के पास ठहरना नहीं चाहिए—इत्यादि ।

देव ! बटेर की कथा भी कहता हूँ—

बटेर की मृत्यु की कहानी

एक दिन सब पंछी भगवान् गरुड़ की यात्रा के बारे में समुद्र तट को चल पड़े । तब कव्वे के साथ बटेर भी चला ।

तब कव्वा उस रास्ते में जाते हुये ग्वाले के सिर पर रखे बर्तन से दही को बार २ खाने लगा ।

जब उस ग्वाले ने दही के बर्तन को ज़मीन पर रख कर ऊपर देखा तब उसकी नज़र में कव्वा एवं पड़ गए ।

तब उस ग्वाले से फिड़का हुआ कव्वा तो उड़ गया, पर

स्वभाव से अपराध से रहित एवं मन्द चाल वाले बटेर को उसने पकड़ लिया और मार दिया।

इस लिए मैं कहता हूँ—न जाना चाहिए, न ठहरना चाहिए............इत्यादि।

तब मैं ने कहा—भाई तोते; यह क्या कहते हो ? मेरे लिए जैसे श्रीमान् महाराज हैं, वैसे आप भी हैं।

तोते ने कहा—ऐसा ही होगा। और दुष्टता आप के वचन से जानी गई है। क्योंकि इन दोनों राजाओं की लड़ाई कराने में आपका वचन ही प्रधान कारण है।

फिर उस राजा ने व्यवहार के अनुसार सत्कार कर मुझे भेजा। तोता भी मेरे पीछे चला आता है। यह सब जानकर जो करना है, वह विचारो।

चकवा हंसकर बोला—बगुले ने तो दूसरे देश में भी जाकर यथाशक्ति राजकार्य्य किया है। परन्तु हे देव ! मूर्खों का स्वभाव ही है। क्यों

(२०) सैंकड़ों रुपए देकर विवाद न करे विद्वान का सम्मत मत है और बिना कारण झगड़ा करना मूर्ख का लक्षण है।

राजा बोला—गुजरी बात के अब उलाहना से क्या लाभ है। अब तो प्रस्तुत विषय का अनुसन्धान करना चाहिए।

चकवा बोला—देव ! अब मैं एकान्त में कहूँगा, क्योंकि—

(२१) रूप, रंग, शकल, शब्द चेष्टा तथा आख या मुंह के विकार से विद्वान् लोग मन की बात जान लेते हैं। इस लिए सदा एकान्त में सलाह करनी चाहिए।

(तब) राजा और मन्त्री वही ठहरे। दूसरे सभी दूसरी ओर चले गए।

चकवा बोला—मैं ऐसा जानता हूँ कि किसी हमारे सेवक की प्रेरणा से बगुले ने ऐसा किया है।

राजा बोला—अच्छा, इसका कारण फिर सोचना अब जो करना है कहो।

(२२) अपने और पराए राज्यों के काम एवं अकार्य के देखने के लिए राजाओं के चार (दूत) ही नेत्र होते हैं जिसके पास वे (चार) नही वह राजा अन्धा होता है।

और वह दूत दूसरे विश्वास पात्र को ले जाकर जाए। जिस से वह आप वहीं रह कर, दूसरे को वहां के गुप्त काम भली प्रकार एकान्त में निश्चय पूर्वक कह कर भेज दो। जैसा कहा है—

२३. दूत को चाहिए कि—वहतीर्थ, आश्रम औरदे वालय में तपस्वियों के चिन्ह से युक्त हो अपने दूतों के साथ शास्त्र जानने के छल से निवास करे।

और जासूस वह है जो जल में और स्थल में चलता है। इस लिए वह बगुला ही नियत किया जावे। इसी तरह कोई कोई और बगुला साथ जाए। और इसके घर के लोग राज द्वार में रहें परन्तु यह सब छुपा कर कीजिए। क्यों

(२४) ६ कानों में गई हुई बात चीत छिपी नही रहती और बात चीत से प्राप्त वृत्त भी छिपा नहीं सकता इस लिए राजा को उचित है। कि वह अपने से, और किसी दूसरे के साथ भी विचार करे।

(२५) सम्पत्ति के ज़ाहिर हो जाने पर राजा को जो दोष होते हैं। उनका समाधान नहीं हो सकता—यह नीति वालों का मत है।

राजा सोच कर बोला—अब मैं ने अच्छा दूत पा लिया है। मन्त्री बोला--तब युद्ध में विजय भी पा ली है।

इतने में द्वारपाल ने अन्दर आ कर और—नमस्कार कर कर कहा—देव जम्बुद्वीप से आया हुआ तोता द्वार पर मौजूद है।

राजा चकवे की तरफ़ देखने लगा!

चकवे ने कहा—दूतावास में ठहरा, उसे फिर मिलेंगे

द्वारपाल उसे लेकर दूतावास चला गया।

राजा ने कहा—युद्ध होने वाला है।

चकवा बोला—देव! फिर भी एक दम युद्ध करना उचित नहीं क्यों कि—

२६. वह सेवक और मन्त्री क्या है? जो आदि में ही बिना विचारे राजा को युद्ध करने के लिए और देश छोड़ कर जाने के लिए राय देता है॥

और भी:—

२७. क्योंकि युद्ध में लगे हुए दोनों की विजय निश्चय नहीं होती, इस लिए युद्ध में जीतने की कोशिश न करे।

और भी—

२८. शान्ति, दान और भेद इन सब से अकेले किसी उपाय से शत्रु को वश करने की कोशिश करे, युद्ध के

साथ न करे।

और भी—

(२६) पत्थर जानदारों से उतनी जल्दी नहीं उठाया जा सकता, जितना लकड़ी द्वारा उठाया जा सकता है अत: मन्त्र का फल यही है कि थोड़े से उपाय से बड़े काम की सफलता हो।

किन्तु युद्ध होने पर कोई उपाय करना चाहिए विशेषता यह है, कि वह चित्रवर्ण बड़ा बलवान है। अत;—

(३०) बली के साथ लड़ना, यह कोई नीति नहीं. क्यों कि हाथी के साथ युद्ध करना मनुष्य की मौत बुलाना ही है॥

और भी—

(३१) नीति जानने वाला कछुए की तरह सिकुड़ कर प्रहार सह ले और समय पर ऐसे उठ खड़ा हो जैसे काला सांप॥

अत: दूत को तब तक यहां रोक रखिये, जब तक किला ठीक न हो जाए।

(३२) किले में ठहरा हुआ अकेला भी धनुधारी सौ के साथ युद्ध कर सकता है। और यदि सौ हों तो वे एक लाख के साथ लड़ सकते हैं अत: किला विशेष माना गया है॥

(३३ किला ऐसा बनाना चाहिए, जो बड़ी गहरी खाई वाला हो, जिसका परकोटा बहुत ऊंचा हो। यन्त्रादि तथा जाल से युक्त हो, साथ किसी पहाड़, नदी, रेगिस्थान या बन के पास हो॥

(३४) किले के ये सात गुण हैं। (२) खुला (फैला) हुआ हो, (२) ऊंचा नीचा हो, (३) पानी' (४) अनाज, (५) इंधन

के संग्रह से युक्त हो। उस में दाखिल होने तथा बाहर भागने का मार्ग भी हो॥

राजा—किले के खोजने में किसे लगाया जाय।

चकवा बोला—

(३४) जो जिस काम में कुशल हो उसको उस काम में लगाना चाहिए। शास्त्र जानने पर भी जो अनुभव हीन- है वह कामों में घबरा जाता है।

तो सारस को बुलाओ।

वैसा करने पर सारस को देख कर राजा बोला ऐ सारस! तू जल्दी किला ढूंढ।

सारस ने प्रणाम करके कहा—राजन्! वह बहुत देर से देखा हुआ बड़ा तालाब किला है। किन्तु इसके बीच के हिस्से में सामान एकत्र करा दो अतः—

(३६) अन्य चीजों के संग्रह से धान्य का संग्रह सबसे उत्तम है, क्योंकि हीरे मोती आदि तो किसी के मुंमें डालने से प्राण रक्षा नहीं कर सकते॥

राजा बोला—जल्दी जाकर सब कुछ कर दो।

द्वारपाल ने फिर आकर कहा—राजन्; सिङ्गल द्वीप पर आया हुआ मेघवर्ण नाम का कव्वा परिवार सहित द्वार से ठहरा हुआ है और आप के दर्शन करना चाहता है।

राजा बोला—कव्वा सब कुछ जानने वाले और बहुत देखने वाला होता है। इस लिए उसे ले लेना चाहिए

चकवा बोला—राजन! यह ऐसा ही है। किन्तु कव्वा खुश्की पर रहने वाला है, अतः हमारे शत्रुओं में मिला रहने

के कारण अपने साथ मिलाने योग्य कैसे हो सकता है ? जैसे कहा भी है—

(२७) जो अपने पक्ष वालों को छोड़ कर दूसरे पक्ष वालों से प्रेम करता हैं, वह मूर्ख नीले रंग के गीदड़ की तरह दूसरों से मारा जाता है ;।

राजा बोला—यह कैसे ?

मन्त्री कहने लगा--

'नीले रंग के गीदड़ की कहानी।'

किसी बन में एक गीदड़ था, जो अपनी इच्छा से नगर के आस पास घूमता हुआ नील के बर्तन में गिर पड़ा ; उसके बाद वहां से न निकल सका, इस लिए प्रातः काल मरे हुए का बहाना करके वहां पड़ा रहा।

बाद में नील के बर्तन के स्वामी ने ,मर गया है' यह समझ कर वहां से निकाला और दूर आकर फैंक दिया। गीदड़, वहां से भाग गया।

तब वह बन में जाकर और अपने नीले रंग को देख कर सोचने लगा—अब मैं उत्तम रंग वाला हो गया हूँ, तो बड़ पन को क्यों न प्राप्त करूं ?

यह सोच कर दूसरे गीदड़ों को बुला कर बोला भगवती बन की देवी ने सारा ओषधियों के रसे अपने हाथ से ही मुझे जंगल के राज्य का तिलक दिया है, सो आज से बन में हमारी आज्ञा से ही काम होना चाहिए।

गीदड़ों ने उसके विशेष रँग को देख कर आठों अंगो से प्रणाम करके कहा—राजन्, जैसे आप की आज्ञा हो।

तब उसने अपनी जाति वालों को चारों ओर विठा कर बड़पन प्राप्त कर लिया। पश्चात् उसने व्याघ्र और सिंह आदि ऊंचे दर्जे के सेवकों को पाकर और सभा में गीदड़ों को देख कर लजाते हुए अपनी जाति के भाइयों को तिरस्कृत करके निकाल दिया।

इसके बाद गीदड़ों को दुखी देखकर किसी बूढ़े गीदड़ ने यह प्रतिज्ञा की कि-तुम दुःखी मत हो। क्यों कि इस अजान ने नीतिज्ञ और मर्म को जानने काम आने वाले सभी साथियों को दूर कर दिया है, सो हमें भी ऐसा करना चाहिए कि जिस से इसका नाश हो। क्योंकि ये व्याघ्र इसके रंग के धोखे में आए हुए इसे गीदड़ न समझ कर राजा मानने लगे हैं सो जिस तरह इसका पता लग जाए वैसा काम करो। और वह इस प्रकार करना चाहिए कि यदि सायंकाल तुम सारे उसके पास जाकर खूब चिल्लाना आरम्भ करोगे तो उस शब्द को सुनकर जाति के स्वभाव के कारण वह भी चिल्लायेगा, क्योंकि—

(३८) जो जिसका स्वभाव है, सो छोड़ा नहीं जा सकता यदि कुत्ते को राजा बना दें तो क्या वह जूता नहीं खाएगा।

तब चिल्लाने से इसे (गीदड़) जीत कर व्याघ्र शीघ्र मार देगा।

तब इस प्रकार करने पर वही बात हुई जैसे कहा भी है—

(३९) अपना शत्रु, दोष, भेद, बल आदि सभी कुछ जानता है, और वह इस तरह जलाता है जैसे सूखे वृक्ष को आग जलाती है॥

इस लिए मैं कहता हूँ—अपने पक्ष को इत्यादि।

राजा कहने लगा—यह ऐसा ही है। फिर भी इस से मिलो!

क्योंकि यह बहुत दूर से आया है। इसे अपनी ओर लाने पर विचार किया जाएगा

चकवा बोला—राजन् ! दूत भेज दिया है, और किला ठीक कर लिया है। इस लिए तोते को भी कह कर उसे भेज दो

(४०) चतुर दूत भेज कर चाणक्य ने नन्द को मार दिया। इस लिए राजा को चाहिए कि वीरों से युक्त होकर दूर से दूत को देखें॥

तब सभा लगा कर तोते और कव्वे को बुलाया गया।

तोता सिर ऊंचा करके और दिये हुए आसन पर बैठ कर बोला— ऐ हिरण्यगर्भ; तुझे महाराजाधिराज श्रीमान् चित्रवर्ण आज्ञा देते हैं कि यदि तुझे अपने जीने और लक्ष्मी से कुछ प्रयोजन है तो जल्दी आकर हमारे पांव पर प्रणाम कर अन्यथा अपने रहने के लिए स्थान ढूंढ ले।

राजा ने क्रोध से कहा, ऐ, सभा में हमारा कोई नहीं है जो इसे गला हत्था देकर निकाल दे।

मेघवर्ण ने उठ कर कहा, राजा मुझे आज्ञा दें; मैं इस दुष्ट तोते को मार देता हूँ।

सर्वज्ञ ने राजा को और कव्वे को शान्त करते हुए कहा, तनिक सुनो—

(४१) वह सभा नहीं जिस में बूढ़े नहीं, वे वृद्ध नहीं हैं जो धर्म नहीं करते। वह धर्म नहीं जिस में सत्य न हो। वह सत्य नहीं जो छल से युक्त हो॥ क्योंकि धर्म यह है—

(४२) दूत यदि म्लेच्छ भी हो तो भी मारने योग्य नहीं। क्योंकि राजा का मुख दूत है। दूत रूपी मुख द्वारा राजा

अपना सन्देश दूसरों तक पहुँचाता है। शस्त्रों के उठने पर भी दूत कभी झूठ नहीं बोलता।

फिर राजा और कव्वा अपनी स्वभाविक दशा को प्राप्त हो गए।

तोता भी उठ कर चल पड़ा।

फिर चकवे ने उसे लाकर समझाकर और सोने के भूषण आदि देकर भेज दिया (वह) चल पड़ा।

तोते ने भी विन्ध्याचल में जाकर राजा को प्रणाम किया। उसे देख राजा चित्रवर्ण ने कहा—हे तोते ! क्या बात है? वह देश कैसा है ?

तोता बोला—ऐ देव ! संक्षेप से बात यह है। अब युद्ध का उद्योग करो। वह देश कर्पूर द्वीप स्वर्ग का देश है। कैसे ब्यान किया जा सकता है ?

फिर सब शिष्ट जनों को बुला कर विचार करने के लिए बैठा और बोला—अब थूक करना है, उसमें जैसा करना हो, उपदेश दो। युद्ध तो आवश्य करना चाहिए।

दूरदर्शी नाम का गीध बोला— देव ! युद्ध को व्यसन बना लेना उचित नहीं। क्योंकि—

(४३) मित्र, मन्त्री और मंत्रों का समूह जब दृढ़ भक्त और शत्रुओं के उल्टा हो तब युद्ध करना चाहिए।

(४४) भूमि, मित्र, और सवर्ण युद्ध के ये तीन फल हैं। जब ये निश्चय हों तब युद्ध करना चाहिए।

राजा ने कहा—पहले मन्त्री मेरे बल को देखे। फिर इनका उपयोग जाने कि कहां कहां कैसी सेना उपयुक्त है। ऐसे ही

मुहूर्त विचार कर बतलाने वाला ज्योतिषी बुलाओ। जो निर्णय कर यात्रा के लिए शुभ लग्न बताए।

मन्त्री बोला—तो भी अति शीघ्र युद्ध के लिए चढ़ाई करना अयोग्य है।

क्योंकि—

(४५) जो मूर्ख शत्रु के बल के बिना विचार किए शीघ्र उस में प्रवेश करते हैं, वे निश्चय ही तलवार की धारा के मेल को प्राप्त करते हैं।

राजा ने कहा—कि हे मन्त्रिन्! मेरे उत्साह को भंग मत करो। विजय चाहने वाला जैसे पराई भूमि को वश में कर लेता है वैसा कहो।

गीध बोला—कहता हूँ किन्तु वह करने से ही फलदायक होगा।

जैसे कहा है—

(४६) राजा के शास्त्र के अनुसार किये गए परामर्श से क्या होता है, यदि उसके अनुसार अनुष्ठान न किया जाए। दवाई के जान लेने मात्र से ही बीमारी की शान्ति नहीं होती।

और राजा का आदेश भी उल्लंघन करने के अयोग्य है। सो जैसे सुना है, कहता हूँ। सुनो—

(४७) हे राजन्! नदी, पहाड़, वन, किलों में जहां २ भी भय हो, वहां वहां सेनापति सेना को मोर्चे के रूप में ठहरा कर (युद्ध के लिए) यात्रा करे।

(४८) वीर पुरुषों से युक्त सेनापति आगे जाए, बीच में

स्त्री, खज़ाना और निर्बल सेना रहे।

(४९) दोनों ओर घोड़े हों। घोड़ों के साथ ही रथ, रथों के दोनों ओर हाथी हों और हाथियों के दोनों ओर पैदल हों।

(५०) हे राजन्! मन्त्री और वीरों से युक्त सेनापति सेना को साथ लेकर दुखियों को आवकाशन देता हुआ पीछे रहे।

(५१) वह ऊंचे नीचे स्थान, जल सहित और पर्वतों से युक्त देश में हाथियों से, समान स्थल में घोड़ों से, पानी में नाव से और दूसरे सभी स्थानों में पैदलों से यात्रा करें।

(५२) किले के कण्टकों का मर्दन करता हुआ शत्रुओं को नष्ट कर दे, जड़ से उखाड़ दे। शत्रुओं के देश में प्रवेश हुए मार्ग का शोधन करने वाले वन में रहने वालों को आगे करे।

(५३) जहां राजा हो, वहां खज़ाना हो। खज़ाने के बिना राजा नहीं। राजा वही है, जिस के पास खजाना हो। इस लिए राजा अपने सेवकों को धन दे। धन देने वाले के लिए कौन युद्ध नहीं करता।

क्योंकि—

(५४) हे राजन्! मनुष्य का मनुष्य दास नहीं है। दास तो धन का होता है। बड़ाई, छोटापन, धन और न धन होने पर आश्रित है।

(५५) प्रसन्नता न दिखाना, आश्रय न देना, देने योग्य अंश छीन लेना, समय का बिताना, और उपाय न करना ये उनकी उदासीनता है।

(५६) विजय चाहने वाला, अपनी सेना को न पीड़ा देता हुआ शत्रुओं पर सेना द्वारा हमला करे। लम्बी यात्रा से थकी हुई शत्रुओं की सेना आसानी से वश में की जा सकती है।

(५७) शत्रुओं में भेद डालने वाला हिस्सेदारों के बिना दूसरा कोई मन्त्र नहीं है। इस लिये यत्न से कोई हिस्सेदार उस शत्रु के हिस्सेदार बन्धु भड़का दे।

(५८) निशचिन्त बैठे शत्रु के युवराज से या मुख्य मन्त्री से सन्धि करके उनके घर में फूट करा दे।

मन्त्री ने हंस कर कहा—यह सब सत्य है, पर—

(५९) एक प्राणी तो मन मानी करने वाला है, एक शास्त्र के अनुसार चलने वाला है। मनमानी करने वाला और किस्म का होगा, शास्त्र के अनुसार चलने वाला और किस्म का। तेज और अन्धकार की समानता कैसे हो सकती है।

फिर राजा उठ कर ज्योतिषी द्वारा बतलाए लग्न में चल पड़ा।

इस के बाद भेजे गए दूत ने हिरण्यक गर्भ के पास आ कर कहा—देव! राजा चित्रवर्ण आ गया है। इस समय मलय-गिरि के ऊपर के भाग में सेना को ठहराए हुए है। प्रतिक्षण किले की देख भाल करते रहना चाहिए। क्योंकि वह गृध्र बड़ा मन्त्री है। किसी के साथ उसके विश्वास की कथा के प्रसंग से मैंने उसका इशारा समझा है कि पहले ही उसने हमारे किले में कोई दूत नियुक्त किया है।

चकवे ने कहा—हे देव! वह कव्वा ही हो सकता है।

राजा ने कहा—यह कभी नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता क्यों वह तोते के तिरस्कार का उद्योग करता? और भी, तोते के आने से उस का युद्ध का उत्साह हुआ है। वह बहुत काल से यहां ठहरा है।

मन्त्री ने कहा—तो भी बाहर से आए व्यक्त पर शङ्कित रहना ही उचित है।

राजा ने कहा—कभी बाहर से आए हुए भी उपकारी सिद्ध होते हैं। सुन—

(६०) पराय भी हित करने वाला बन्धु है। हित न करने वाला बन्धु भी पराया है। देह में पैदा हुई बीमारी अप्रिय होती है किन्तु बन की दवाई प्रिय है।

और भी—

(६१) पूरद्रक राजा का थोड़ी देर से वीरवर नामक सेवक था। उसने अपने पुत्र को राजा के लिए दे दिया।

चकवे ने पूछा, यह कैसे?

राजा ने कहा—

मैं पहले राजा शूद्रक के क्रीड़ा सरोवर में रहा करता था। वहां बीरवर नाम के राज पुत्र ने किसी देश से आकर राज द्वार के पास जाकर द्वार पाल से कहा कि मैं नौकरी चाहने वाला हूँ। मुझे राजा के दर्शन करवाओ।

फिर इसने उसे राजा के दर्शन करवाए। वह बोला; हे देव! यदि मुझ सेवक से प्रयोजन है तो मुझे नौकरी दे दो।

शूद्रक बोला—तेरा वेतन क्या होगा?

बीरबर ने कहा—प्रति दिन ४०० सोने की मुहरें।

राजा ने कहा—तेरी सामग्री क्या होगी ?

बीरदर बोला—दो बाहें और तीसरी तलवार राजा ने कहा यह नहीं हो सकता। इतना वेतन नहीं दिया जा सकता।

यह सुन प्रणाम करके चल दिया।

इस के बाद मन्त्रियों ने कहा कि चार दिन का वेतन देकर इसका स्वरूप जानिए कि क्या यह योग्य होने के कारण इतना वेतन मांगता है या अयोग्य।

तब मन्त्रियों के कहने से राजा ने बीरबर को बुलाकर पान देकर सोने की ४०० अशर्फियां दीं।

और उसका प्रयोग राजा ने गुप्त रूप से देखा—इन अशर्फियों का आधा भाग का बीरबर ने देवता और ब्रह्मणों को दिया, शेष भाग का आधा दुखियों को दिया। जो शेष बचा उसे भोजन एवं विलास के खर्च में लगाया।

यह सब नित्य कार्य करके हाथ में तलवार लिए हुए बीरवर दिन रात राजा के द्वार पर पहरा देता था, और जब राजा खुद आज्ञा देता तब अपने घर को जाता था।

इस के बाद चौथी रात को राजा ने करुणा भरी रोने की आवाज सुनी।

शुद्रक बोला—यहाँ द्वार पर कौन है ?

उसने कहा—देव ! मैं वीर वर हूँ।

राजा बोला—रोने का पता लगाओ

वीर वर—जो आज्ञा है—यह कह कर चल पड़ा।

राजा ने सोचा—यह उचित नहीं हुआ। इस अकेले राजपूत को मैं ने गहन अन्धकार में भेज दिया है, तो मैं

भी जाकर 'यह क्या है' यह देखता हूँ।

तब राजा भी तलवार लेकर उसके पीछे २ नगर से बाहर निकला।

जाकर वीर वर ने रूप और यौवन से पूर्ण, सब प्रकार के आभूषणों से भूषित रोती हुई किसी स्त्री को देखा और पूछा—तू कौन है? क्यों रो रही है?

स्त्री ने कहा--मैं इस शूद्रक राजा की राजलक्ष्मी हूँ। बहुत समय से इसकी बाहों की छाया में सुख से रही हूँ। अब मैं और स्थान पर जाऊंगी।

वीरवर बोला—जहाँ रोग होता है। वहां उपाय भी होता है, सो कैसे फिर तुम्हारा कहना होगा?

लक्ष्मी बोली--तू बत्तीस लक्षणों से युक्त अपने पुत्र शक्तिधर को भगवती सर्व मंगला की भेंट करे तो मैं फिर यहां चिर काल तक रह सकती हूँ। यह कह कर वह छिप गई।

तब वीर वर ने अपने घर जा, सोती हुई अपनी स्त्री और पुत्र को जगाया।

वे दोनों जाग कर उठकर बैठ गए।

वीरवर ने लक्ष्मी की वह सारी बात कह दी। वह सुन कर शक्तिधर आनन्द पूर्वक बोला—मैं धन्य हूं, स्वामी के राज्य की रक्षा के लिए जिसका प्रयोग होती है। सो अब देर का क्या कारण है? कभी २ ऐसे ही काम में इस देह का प्रयोग प्रशंसा योग्य होता है। क्योंकि--

(६२) बुद्धिमान् को उचित है कि—धन और जीवन

दूसरों के लिए त्याग दे। जब विनाश आवश्यक है तो दूसरों के ही निमित्त देह का त्याग करना अच्छा है।

शक्तिधर बोला—यदि यह नहीं करना तो और किस क्रम से मुख्य एवं महा वेतन का बदला चुकाना होगा।

यह सोच कर सब सर्व मगंला के स्थान को गये।

वहाँ सर्व मगंला को पूज कर वीर वर ने कहा—देवी ! प्रसन्न हो।

महाराज शूद्रक की जय हो। "यह भेंट स्वीकार कीजिए" यह कह कर उसका सिर काट दिया।

तब बीरवर सोचने लगा—किए हुए बड़े वेतन का तो उतर गया। अब मेरा जीना पुत्र के बिना निन्दित है यह सोच कर अपना सिर काट दिया। तब पति और पुत्र को शोक से दुःखी होने के कारण उसकी स्त्री ने भी वैसा ही किया।

यह सब सुनकर और देख वह राजा आश्चर्य के साथ सोचने लगा—

(६३) मेरे जैसे निकम्मे जीव जीते हैं और मरते हैं। इस जैसा संसार में न कोई हुआ है न होगा। सो इसके बिन मुझे राज्य से भी क्या प्रयोजन है। तब अपना सिर काटने के लिए भी तलवार उठाई।

इसके बाद प्रत्यक्ष हुई भगवती सर्व मंगला ने राजा के हाथ को पकड़ लिया। और कहा—पुत्र मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ इतना साहस न करो। जीवन के आखीर में भी तेरे राज्य का नाश न होगा।

और राजा आठों अंगों को गिरा कर नमस्कार कर बोला—

देवी मुझे राज्य से और जीवन से भी क्या प्रयोजन ? यदि मैं दया के योग्य हुँ तो मेरी शेष आयु से स्त्री, पुत्र सहित यह वीरवर जी उठे, अन्यथा मैं यथा प्राप्त गति को प्राप्त होता हूँ ।

भगवती बोली—पुत्र ! मैं तेरे इस साहस के उत्कर्ष से और भृत्यों पर होने वाले प्यार भाव से हर प्रकार से प्रसन्न हूँ । जा तेरी विजय हो । यह वीरवर भी परिवार सहित जी उठे—यह कहकर अन्तर्धान हो गई ।

तब वीरवर पुत्र स्त्री सहित जीवन प्राप्त करके अपने घर को गया ।

राजा भी उन से छिपा हुआ शीघ्र महल के भीतर जाकर वहीं सो गया ।

इसके बाद दरवाजे पर ठहरा हुआ वीरवर फिर राजा से पूछा हुआ बोला--देव ! वह रोती हुई स्त्री देखकर छिप गई थी और कोई बात नहीं ।

उसके बचन को सुन कर सन्तुष्ट हुआ राजा आश्चर्य के साथ सोचने लगा—यह कैसा प्रशंसनीय महा पुरुष है ?

तब उस राजा ने प्रात: काल विद्वानों की सभा करके सारा समाचार सामने रख कर कृपा से उसे करणाटक का राज्य दे दिया ।

तो क्या आया हुआ जाति मात्र से दुष्ट होता है ? वहां भी उत्तम, मध्यम एवं अधम होते हैं । चकवा बोला—

(६४) जो मन्त्री राजा की इच्छा से अकार्य को कार्य के

समान बताता है। वह बुरा है। क्योंकि स्वामी के मन में दुःख होना ठीक हैं परन्तु अकार्य से उसका नाश होना ठीक नहीं।

(६५) जिस राजा के वैद्य, गुरु और मन्त्री ठाकुर सहाती कहने वाले हों वह राजा शनैः २ शरीर, धर्म और धन से जल्दी निर्बल हो जाता है।

(६६) भिखारी को मारकर पुण्य से जो पदार्थ एक ने प्राप्त कर लिया है वह मुझे भी प्राप्त होगा-इसलिए लोभ के कारण कोष चाहने वाला नाई मारा गया।

राजा ने पूछा यह कैसे ?

मन्त्री ने कहा—

नाई की कहानी

अयोध्या शहर में चूड़ा मणि नाम का क्षत्रिय था। धन चाहते हुए उसने शरीर को बड़ा कष्ट देकर माथे, पर आधा चन्द्र रूपी चूड़ा मणि रखने वाले, भगवान् शिर की चिरकाल तक पूजा की। तब वह क्षीण हुए, पापों वाला भगवान् शिव की आज्ञा से स्वप्न में दर्शन देकर यक्षों के ईश द्वारा कहा गया-कि तू आज सवेरे हजामत करके डण्डा हाथ से पकड़ कर अपने घर के द्वार पर चुपचाप ठहरना। जब आङ्गन में आए हुए जिस भिखारी को देखना उसको निर्दयता से डण्डे के प्रहार से मारना। तब वह भिखारी उसी समय सोने की अशर्फियों से भरा हुआ घड़ा बन जाएगा। उस से जब तक तुम जिओगे तब तक सुख से रहोगे।

तब वैसा करने पर वह सोने का घड़ा हो गया।

हजामत करने के लिए आए हुए नाई ने यह देख कर सोचा अरे ! कोष पाने का यह उपाय है ? तो मैं भी ऐसा क्यों न करूं ?

उस दिन से ले कर वह नाई भिखारी के आने की प्रतीक्षा करता। एक दिन उसने वैसे भिखारी को पाया और डण्डा मार कर खत्म कर दिया। उस अपराध से नाई को भी जब सिपाहियों ने पीटा तो वह मर गया।

इस लिए मैं कहता हूँ — पुण्याल्लब्धं यदे केन— इत्यादि।

राजा बोला—जाने दो प्रसंग की बात करो। यदि चित्रवर्ण मलय पर्वत के ऊपर है तो अब क्या करना चाहिए ?

मन्त्री बोला—राजन् ! आए हुए दूत के मुँह से मैं ने सुना है कि चित्रवर्ण ने महा मन्त्री गीध के उपदेश का अनादर किया है, इसलिए वह मूर्ख जीता जा सकता है, जैसे कहा भी है—

(६७) लोभी, जालिम, आलसी; झूठा, बे परवाह, डरपोक, डांवा डोल स्वभाव वाला, मूर्ख और योधाओं का अपमान करने वाला शत्रुओं को सहज ही जीता जा सकता है।

सो जब तक वह हमारे किले द्वार को नहीं रोक लेता तो तब तक नदी पहाड़ और बन के मार्गों में उसकी सेना को मारने के लिए सारस आदि सेना पतियों को भेज दो। कहा भी है—

(६८) लम्बा रास्ता चलने से थकी हुई, नदी, पहाड़ और बन से घिरी हुई, तेज आग से डरी हुई भूख और प्यास से

व्याकुल ।

(६९) मस्त हुई, भोजन में लगी हुई, रोग तथा अकाल से दुःखी, आश्रय रहित, थोड़ी सी वर्षा और ठंडी वायु से व्याकुल ।

(७०) कीचड़, धूलि, और जल में फंसी हुई, मुसीबत में फंसी हुई और जो दुष्टों से पीड़ित हो, ऐसी शत्रु की सेना को राजा नष्ट कर दे ।

और भी—

(७१) राजा को चाहिए कि वह घेरा डालने की शंका से शत्रु के ज्यादा जागने के श्रम से थकी हुई, दिन में सोई या नींद से व्याकुल सिपाहियों वाली सेना मार दे ।

अतः उस प्रमादी की सेना के पास पहुंच कर हमारे सेना पति अवसर के अनुसार दिन या रात को वध कर दे ।

ऐसा करने पर चित्रवर्ण के बहुत सारे सैनिक और सेना पति मारे गये ।

इस पर दुःखी हुआ २ चित्रवर्ण अपने मन्त्री दूर दर्शी से बला, ऐ प्यारे ! हमारी और बे परवाही क्यों दिखा रहे हो ? क्या कोई मुझ से त्रुटि हो गई है ? जैसे कहा भी है,

(७२) चतुर मनुष्य लक्ष्मी को पाता है । खाने में पर हेज करने वाला नीरोगता को, नीरोग्य मनुष्य सुख को, लग्न वाला विद्या के अन्त को, और नम्र मनुष्य धर्म को, धन तथा यश को पाता है ।

गीध बोला—हे राजन् ! सुनो—

(७३) विद्या में बढ़े हुओं की सेवा करने से मूर्ख राजा भी जल के पास ठहरे हुए वृक्ष की तरह बहुत ज्यादा ऐश्वर्य को प्राप्त होता है।

और भी—

(७४) केवल मात्र साहस से काम लेने वाले और उपायोंसे सि पीड़ित चित्त वाले मनुष्यों से बहुत ज्यादा ऐश्वर्य नहीं प्राप्त किए जाते। क्यों कि सपंत्तियां वहां रहती है जहां नीति हो और बल भी हो।

केवल मात्र साहस से काम लेते हुए तुम ने अपनी सेना के उत्साह को देख कर मेरे बताए हुए मन्त्रों पर ध्यान नही दिया और साथ ही वाणी की कठोरता भी दिखाई। अत: उस बुरी नीति का फल पा रहे हो। जैसा कहा भी है—

(७५) जैसे दु:ख प्रसन्नता का, शीत ऋतु शरद् ऋतु का, सूर्य अन्धेरे का, कृतघ्नता उपकार का, प्रिय की प्राप्ति शोक का और नीति विपत्ति का नाश कर देती है। उसी प्रकार बुरी नीति बढ़ी हुई सम्पति का नाश करती है।

तब मैंने विचारा—यह राजा बुद्धिहीन है। वरना नीति शास्त्र की कथा रूपी चांदनी को वाणी उल्काओं से धुंधली क्यों बनादेता है। क्योंकि--

(७६) जिस मनुष्य के पास अपनी बुद्धि नहीं। शास्त्र उसका क्या कर सकता है आँखो से हीन को शीशा किस काम का है।

इसके बाद राजा ने हाथ जोड़ कर कहा-माना कि यह

मेरा अपराध है किन्तु अब ऐसा उपदेश बताओ, जिससे शेष सेना के साथ लौट कर मैं विन्ध्याचल पर पहुँच जाऊं।

गीध ने मन में सोचा- इसका कुछ न कुछ उपाय कर देना चाहिए। क्योंकि—

(७७) देवताओं, गुरुओं, गौओं, राजाओं, ब्राह्मणों, बालकों, वृद्धों और दुःखी मनुष्यों पर आए हुए क्रोध को सदा रोकना चाहिए।

तब हंसकर मन्त्री ने कहा—राजन, डरो मत। धैर्य रखो देव ! सुनो—

(७८) शत्रुओं को मिलाने में मत्रियों की, सन्निपात बुखार में वैद्यों की तथा काम पड़ने पर ही बुद्धि परखी जाती है। जब सब कुशल हो तो कौन सयाना नहीं बनता।

सो यहां आपके प्रताप से ही किले को तोड़ कर कीर्ति और प्रताप के साथ आपको बहुत शीघ्र ही विन्ध्याचल ले जाऊंगा।

राजा बोला– थोड़ी से सेना के साथ यह कैसे हो सकता है ? गीध बोला – देव ! सब कुछ हो जाएगा। क्योंकि जीतने की इच्छा वाला यदि ढील न दिखाए तो उसकी जीत अवश्य होगी सो शीघ्र किले के द्वार को रोक दो।

इसके बाद दूत बगुले ने आकर हिरण्यक गर्भ को कहा— देव ! थोड़ी सेना वाला राजा चित्रवर्ण गीध की सम्मति से किले के द्वार को रोकेगा।

राजा बोला—ऐ सर्वज्ञ ! अब क्या करना चाहिए?

चकवे ने कहा—अपनी सेना और वस्त्रिदा, जो जिसके योग्य हो, प्रसन्नता से बांट दो। क्योंकि—

(७९) जो राजा बुरे मार्ग पर पड़ी कौड़ी को भी हजार मोहरें के तुल्य समझ कर उठा लेता है और समय आने पर करोड़ों रु० खुले हाथों लुटा देता है। उस सिंह समान राजा को लक्ष्मी कभी नहीं छोड़ती ॥

राजा बोला—शायद लक्ष्मी चली जाए।

मन्त्री बोला—

(८०) एकत्र हुई श्री भी नाश हो जाती है ॥

सो राजन्! कृपणता को छोड़ कर अपने श्रेष्ठ योधाओं को दान और मान से सम्मानित करो। कहा भी है—

(८१) एक दूसरे को जानने वाले प्रसन्न चित्त, प्राणों की बलि देने वाले, निश्चय रखने वाले, खानदानी और भली प्रकार पूजे हुए शत्रु की सेना को जीत लेते हैं ॥

(८२) सत्य, वीरता, दया और दान ये राजा के महान् गुण हैं। इन से हीन राजा निश्चय ही निन्दा पाता है ॥

ऐसे अवसर पर मन्त्रियों को अवश्य सम्मानित करना चाहिए। जैसे कहा भी है—

(८३) जो जिस के साथ बंधा हुआ, और जो उसके साथ ही उन्नति और अवनति को पाताहै, ऐसे विश्वस्त सेवक को प्राणों की रक्षा करने या धन सम्बन्धी कामों में लगाना चाहिए ॥

(८४) जिस राजा का मन्त्री धूर्त हो, स्त्री या बालक हो वह अनीति की हवासे उड़ाए हुए के समान काम के समुद्र में

डूब मरता है ॥

सुनो, राजन्—

(८५) जिसने हर्ष और क्रोध को जीत रखा है, कोष पर जिसे भरोसा है, और सदा नौकरों पर प्रेम करता है, ऐसे राजा को पृथ्वी धन देती है ॥

तब मेघवर्ण ने आकर और प्रणाम करके कहा—राजन् !

मुझ पर कृपा दृष्टि करो। युद्ध करने का इच्छुक द्वार पर आ गया है, सो बाहर निकल कर अपना बल दिखाता हूँ जिससे आपके उपकारों से उऋण हो जाऊं।

चकवे ने कहा—ऐसा मत करो। यदि बाहर निकल कर ही युद्ध करना है, तो किले का सहारा लेना फ़जूल है।

राजन्, स्वयं जाकर युद्ध देखो। क्योंकि—

(८६) राजा को चाहिए कि वह स्वयं आगे जाकर देख भाल करता हुआ सेना को लड़ावे। क्या स्वामी से भड़काया हुआ कुत्ता भी शेर की तरह बल नहीं दिखाता।

इसके बाद सभी ने किले के द्वार पर जाकर युद्ध किया।

दूसरे दिन चित्र वर्ण राजा ने गीध को कहा—ऐ प्रिय अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।

गीध बोला—राजन् जरा सुनो—

(८७) बहुत समय तक घेरा न सहने वाला, छोटा, मूर्ख और व्यसनी नायक वाला, रक्षा रहित तथा कायर योधाओं से युक्त किला विपत्ति ही कहा गया है ॥

(८८) परस्पर फूट, दूर तक रुके रहना, छावनी डालना,

तीन पौरुष, ये चार किले को वश में करने के उपाय हैं।

और इस में यथा शक्ति यत्न किया जाता है। (कान में) ऐसा ही—

फिर सूर्योदय से पहले ही किले के चारों द्वारों पर युद्ध आरम्भ होने पर कव्वों ने किले के भीतर के घरों में एक बार आग फैंक दी।

किला 'घेर लिया', 'घेर लिया' यह शोर सुन कर कई घरों में सामने जलती आग को देख कर राजहंस के सैनिक तथा दूसरे दुर्गनिवासी शीघ्र तालाब में घुस गए। क्योंकि—

(८९) अवसर के प्राप्त होने पर, शक्ति होने पर, शक्ति के अनुसार अच्छी सम्मति ठीक प्रकार से पराक्रम, अच्छी प्रकार पीछे हटना आदि कोई काम करे। सोचने न लगे।

राजहंस स्वभाव से ही मन्दगामी था, और सारस उसका साथी था, उसे चित्रवर्ण के सेनापति कुक्कुट ने घेर लिया।

हिरण्य गर्भ ने साहस से कहा, हे सेनापति सारस मेरे कारण अपने आप को मत मरवाओ। जाने को तुम अब भी समर्थ हो। सो जल में घुस कर अपनी रक्षा करो। मेरे चूड़ामणि नाम के पुत्र को सर्वज्ञ की समति से राजा बना देना।

सारस बोला—ऐसा दुःसह वचन मत कहो। जब तक चाँद और सूर्य आकाश में हैं, तब तक आप विजयी रहें। हे देव! मैं दुर्ग का अधिकारी हूँ। मेरे मांस और खून से लिबड़े हुए द्वार के मार्ग से शत्रु प्रवेश कर सकेगा। हे देव! और भी—

दाता, क्षमा, दान और गुणग्रहण करने वाला स्वामी

मुश्किल से मिलता है।

राजा ने कहा—यह सत्य है, परन्तु

(९०) पवित्र, चतुर और अनुरागी सेवक भी दुर्लभ है यह मैं जानता हूँ।

सारस बोला—हे देव! सुनो—

(९१) यदि युद्ध को छोड़ कर मृत्यु का भय न हो तो यहां से दूसरे स्थान पर जाना उचित है। जब कि प्राणी का मरना निश्चित है तो व्यर्थ ही यश को मलीन क्यों किया जाए।

इस पर भी राज्य का प्रधान अङ्ग आप हैं, सो हर प्रकार रक्षा करने के योग्य हैं।

(९२) ऐश्वर्य पूर्ण भी प्रजा स्वामी से छोड़ी हुई जीवित नहीं रहती। जिस की आयु खतम हो गई है। उसको धन्वन्तरी वैद्य भी क्या बचा सकता है।

और भी--

(९३) यह संसार राजा के नष्ट हो जाने पर आंखें बन्द कर लेता है, नष्ट हो जाता है। और उसके बढ़ने पर बढ़ता है। जैसे सूर्य के उदय और अस्त से कमल खिलता और मुरझाता है।

फिर कुक्कुट ने आकर राजहंस के शरीर में तीक्ष्ण नखों से प्रहार किया।

इस के बाद सारस ने शीघ्र ही आकर राजा को अपनी देह में छिपा लिया।

फिर कुक्कुट ने नख और मुख के प्रहारों से लहू लुहान

हुए २ सारस ने अपने शरीर से ढक कर जोर से खैंच कर राजा को जल में फैंक दिया ।

पीछे सारस को भी अनेकों ने मिल कर मार दिया ।

इस के बाद चित्रवर्ण दुर्ग में घुस कर किले में विद्यमान धन ले कर बन्दीजनों के जय शब्दों से खुश हुआ २ अपनी छावनी को चला गया ।

फिर राजा के पुत्रों ने कहा, उस राजा की सेना में सारस ही पुण्यात्मा है, जिसने अपने शरीर के त्याग से स्वामी की रक्षा की ।

(६४) गौएं गौ के आकार के सभी पुत्रों को पैदा करती है। सींगों से चिन्हि स्कन्धों वाले सांढ को कोई गौ ही पैदा करती है ।

विष्णु शर्मा ने कहा—वह महानुभाव अप्सराओं से घिरा हुआ स्वर्ग सुख का अनुभव करे ।

जैसे कहा है—

(६५) जो वीर युद्ध में स्वामी के लिए जीवन का परित्याग करते हैं; स्वामी के भक्त और कृतज्ञ हैं, वे स्वर्ग में जाते हैं।

आप ने विग्रह सुन लिया ?

राजपुत्रों ने कहा—सुन कर हम सुखी बन गए ।

विष्णु शर्मा ने कहा—और यह भी हो—

(६६) आप जैसे राजाओं का युद्ध हाथी, घोड़े, पैदलों से कभी न हो। नीति के मन्त्ररूपी पवन से पीड़ित शत्रु पहाड़ों की गुफा का सहारा ले अर्थात् वहां जा कर अपने को

छिपा लें।

अथ सन्धि

फिर कथा के शुरू में राजपुत्रों ने कहा—हे आर्य! विग्रह तो हम ने सुन लिया है। अब 'सन्धि कहो।

विष्णु शर्मा ने कहा—सुनो 'सन्धि' भी कहता हूँ, जिसका यह पहला श्लोक है।

(१) बड़े संग्राम के आरम्भ होने पर मरी हुई सेना वाले राजाओं की क्षण भर वार्तालाप से, मध्यस्थ बने हुए और चकवे ने सन्धि करवा दी।

राजपुत्रों ने कहा—यह कैसे?

विष्णु शर्मा ने उत्तर दिया।

तब उस राजहंस ने कहा कि हमारे किले में किस ने आग फैंकी है? क्या किसी दूसरे से या शत्रु द्वारा छोड़े गए हमारे क़िले के निवासी ने फैंकी है?

चकवे ने कहा—हे देव! वह आपका निष्कारण बन्धु मेघवर्ण परिवार सहित दिखाई नहीं देता। सो मैं समझता हूँ कि वह उसी की करतूत है।

राजा ने क्षण भर सोच कर कहा—यह ऐसा ही है, यह मेरा दुर्भाग्य है।

जैसे कहा भी है।

(२) यह भाग्य का दोष है, मंत्रियों का दोष नहीं। कहीं कभी अच्छी तरह बना हुआ काम भी भाग्य दोष से नष्ट हो

जाता है।

मन्त्री ने कहा—यह कहा भी है।

(३) मनुष्य विषम दशा को पा कर भी भाग्य की निन्दा करता है। मूर्ख अपने कर्मों के दोषों को नहीं समझता।

और भी—

(४) जो हित चाहने वाले मित्रों के वचन को पसन्द नहीं करता, वह दुर्बुद्धि काष्ठ से गिरे हुए कछुए की तरह नष्ट हो जाता है।

राजा ने कहा यह कैसे?

मन्त्री ने कहा—

हंसों और मछलियों की कहानी

मगध देश में फुल्लोत्पल नाम का तालाब है। वहां चिरकाल से संकट, विकट नाम के दो हंस रहते थे। उनका मित्र कम्बुग्रीव नाम का कछुआ भी रहता था। इसके बाद एक दिन मछेरों ने वहां आ कर कहा—कि आज हम यहां रह कर सवेरे मछली कछुए आदि मारेंगे। वह बात सुन कर वह कछुआ दोनों हंसों को बोला—मित्रो! धीवरों की वार्तालाप सुनी? अब मैं क्या करूं?

हंस बोले—जानो, फिर सवेरे जो उचित हो, वह करना।

कछुए ने कहा—ऐसा नहीं, क्योंकि मैं विपत्ति देख चुका हूं। जैसा कि कहा है—

(५) आने वाली विपत्ति से पहले सोचने वाला समय के

अनुसार कार्य करने वाला, ये दोनों तो सुख से रहते हैं। और होनहार पर विश्वास करने वाला नष्ट होता है।

वे दोनों बोले—यह कैसे? कछुआ बोला—

तीन मछलियों की कहानी

पहले इसी तालाब में ऐसे ही माहीगीरों के आने पर यहां रहने वाली तीन मछलियों ने सोचा। उनमें अनागतविधाता नाम की पहली थी, उसने कहा—मैं अब दूसरे ताल,ब को जाती हूँ। ऐसा कह कर वह तो दूसरे तालाब को गई। दूसरी प्रत्युत्पन्नमति नाम की मछली ने विचारा कि भविष्य के लिए प्रमाण न होने से मैं कहां जाऊं? सो समय पड़ने पर जैसा करना उचित होगा, वैसा करूंगी।

फिर यद्भविष्य ने कहा—

(६) जो होने वाला नहीं है वह कभी नहीं हो सकता, और जो होने वाला है वह बदला नहीं जा सकता। इस प्रकार चिन्ता रूपी विष को मारने वाली यह दवाई क्यों नहीं सेवन करते।

तब सवेरे जाल से बांधा हुआ प्रत्युत्पन्नमति मरे हुए के समान अपने आप को दिखा कर स्थिर हो गया। तब उन्हों ने उसको मरा हुआ जाने कर जाल से निकाल, फैंक दिया। वह शक्ति के अनुसार उछल कर गहरे पानी में दाखल हो गया। यद्भविष्य को माहीगीरों ने पकड़ा और मार दिया। इस लिए मैं कहता हूँ—अनागतविधाता—इत्यादि।

सो जैसे मैं तालाब में पहुँचूं वैसा उपाय करो।

हंस बोले—दूसरे तालाब पर पहुँचने में आप का कुशल है। पर भूमि पर चलने का क्या उपाय है? कछुआ बोला—जैसे मैं आप दोनों के साथ आकाश में जा सकूं वैसा करना चाहिए। हंस बोले—कि क्या उपाय हो सकता है? कछुआ बोला—तुम दोनों से चोंच से पकड़े हुए लकड़ी के एक टुकड़े को मैं मुंह से पकड़ लूंगा, तब तुम्हारे पंखों के बल से मैं भी सुख से चलूंगा। हंस बोले यह उपाय तो हो सकता है, परन्तु

(७) बुद्धिमान उपाय को सोचता हुआ अपाय को भी सोचे। अपाय का विचार न करने से मूर्ख बगुले के देखते २ नेवले ने उनकी प्रजा खा ली।

कछुए ने पूछा कि यह कैसे?

वे दोनों बोले—

बगुले और नेवले की कहानी

उत्तर दिशा में गृध्रकूट नामक पर्वत पर बड़ा पीपल का वृक्ष है। वहाँ बहुत से बगुले रहते थे। उस वृक्ष के नीचे बिल में सांप रहता था और यह उनके बच्चों को खा जाता था। फिर दुःखी बगुलों का रोना सुन किसी बगुले ने कहा, ऐसा उपाय करो, तुम मछलियों को ला कर नेवले के बिल से सांप के बिल तक पंक्तिबद्ध रक्खो, फिर उनके खाने की लालसा के मारे नेवले आकर सांप को देखेंगे और स्वाभाविक वैर के कारण उसे मार डालेंगे। बगुलों के ऐसा करने पर वैसा

ही हुआ।

इस के बाद उसी वृक्ष पर नेवलों ने बगुलों के बच्चों का शब्द सुना, पीछे उन्हों ने वृक्ष पर चढ़ कर बगुलों के बच्चों को खा लिया। इस लिए हम कहते हैं—'उपायं चिन्तयन्' इत्यादि।

हम लोगों के साथ साथ जाते हुए तुम्हें देख लोग कुछ कहेंगे ही, उस को सुन कर यदि तुम उत्तर दोगे तो उसी समय तुम्हारी मृत्यु होगी। सो सब प्रकार से तुम्हारा रहना ही उचित है। कछुआ बोला—क्या मैं मूर्ख हूँ ? मैं उत्तर ही नहीं दूंगा, कुछ भी नहीं बोलूंगा।

वैसा करने पर उसी प्रकार कछुए को देख कर सब ग्वाले पीछे दौड़ने और कहने लगे, अहा! बड़ा ही आश्चर्य है, दो पक्षी कछुए को ले जा रहे हैं। कोई कहता, यदि यह कछुआ यहीं गिरे तो यहीं पका कर खाएंगे। कोई बोला—तालाब के तट पर इसे भून कर खाएंगे। कोई घर ले जा कर खाना चाहिए। उन की बातों को सुन कर कछुआ क्रोध से भर कर पहली बातें भूल कर बोला—कि तुम ख़ाक खाओगे। यूं कहता हुआ ही गिरा और उन ग्वालों से मारा गया। इस लिए मैं कहता हूं—सुहृदां हित कामानाम् इत्यादि।

इस के बाद गुप्तचर बगुला आ कर बोला—देव! मैं ने पहले ही कहा था—कि गढ़ की जांच प्रतिक्षण करनी चाहिए। सो आप ने नहीं की; उसी अविचार का यह फल पाया। गिद्ध के भेजे हुए मेघवर्ण कव्वे ने ही गढ़ जलाया है। राजा लम्बी सांस ले कर बोला—

(८) प्रेम से उपकार से जो शत्रुओं से विश्वास करता है वह वृक्ष की शाखा पर सोने वाले की तरह वहां से गिर जाने से ही जागता है ॥

गुप्तचर बोला-- जब मेघवर्ण यहां से किला जला कर गया तब प्रसन्न हो चित्र वर्ण ने कहा--इस मेघवर्ण को यहां कर्पूर द्वीप के राज्य में राज तिलक कर दो।

चकवा बोला—देव ! जो गुप्तचर ने कहा, आप ने सुना ?

राजा बोला—तब इसके बाद क्या हुआ गुप्तचर बोला—तब प्रधान मन्त्री गिद्ध ने कहा—देव ! यह उचित नहीं इसे आप कोई दूसरा इनाम दो। महापुरुषों के स्थान पर नीच को कभी नहीं लगाना चाहिए। जैसे कहा भी है—

(९) नीच मनुष्य प्रशंसनीय पद को पाकर स्वामी को भी मारना चाहता है। जैसे—चूहा बाघ बन कर मुनि को मारने के लिए गया ॥

चित्र वर्ण ने पूछा—यह कैसे ?

मन्त्री बोला—

मुनि और चूहे की कहानी

गौतम के तपोवन में महातप नाम का मुनि था। उस तपोवन में उस मुनि ने कव्वे से ले जाया जा रहा चूहे का बच्चा पाया। तब उस मुनि ने स्वभाव से दयालु ने श्यामाक के धान के दानों से उसे पाला। इस के बाद बिल्ला उसे खाने के लिए दौड़ा। उसे देख कर चूहा उस मुनि की गोद में चला

गया। तब मुनि ने कहा—चूहे तू बिल्ला हो जा। तब वह बिल्ला कुत्ते को देख भागा। फिर मुनि के कहा—कुत्ते से डरता है? तू भी कुत्ता बन जा। और वह कुत्ता बाघ से डरने लगा, तब उस मुनि ने कुत्ते को बाघ बना दिया। अब उस बाघ को भी 'यह चूहा है' इस दृष्टि से देखने लगा। इस के बाद उस मुनि और व्याघ्र को देख कर सब कहने लगे—इस मुनि ने चूहे को बाघ बना दिया। यह सुन कर वह व्याघ्र सोचने लगा जब तक यह मुनि रहेगा, तब तक मेरी रूप परिवर्तन की कहानी जो मेरे अपमान का कारण है, दूर न होगी। यह सोच कर वह चूहा मुनि को मारने के लिए दौड़ा। तब मुनि ने यह जान कर—फिर चूहा हो जा ऐसा कह कर चूहा ही बना दिया। इस लिए मैं कहता हूँ नीच प्रशंनीय पद को—इत्यादि। और यह आध्वन है-यह नही समझना चाहिए। सुनो—

(१०) उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार की बहुत मछलियों को खा कर बगुला बहुत लोभ के कारण बाद में कँकड़े द्वारा पकड़ लेने से मर गया॥

चित्रवर्ण ने पूछा—यह कैसे?

मन्त्री ने कहा—

बगुले और केंकड़े की कहानी

मालव देश में दम गर्भ नाम वाला तालाब था। वहां एक बूढ़ा और शक्तिहीन बगुला अपने आप को दुःखी दिखाता हुआ बैठा था। उसे किसी कँकड़े ने देखा और पूछा—आज

आज खाना छोड़ कर क्यों बैठे हो? बगुला बोला—जो मछलियां मेरे जीवन का आधार हैं, उन्हें मल्लाह आकर मार देंगे यह बात मैं ने नगर के समीप सुनी है। इस लिए गुजारा न होने से मेरी मृत्यु आ गई यह जान कर मुझे आहार की भी इच्छा न रही, तब मछलियों ने सोचा—इस समय तो वह उपकारी प्रतीत होता है, इस लिए जो कुछ करता हैं, वह इसी से पूछ लें। जैसे कहा भी है—

(११) उपकार करने वाले शत्रु से भी मेल कर लेना चाहिए किन्तु बुराइ वाले मित्र से नहीं। मित्र और शत्रु का लक्षण उपकार तथा अपकार करना ही है॥

मछलियां बोलीं—ऐ बगुले! अब रक्षा का क्या उपाय है?

बगुला बोला—रक्षा का उपाय दूसरे तालाब कासहारा लेना है। वहां मैं तुम्हें एक २ करके ले जाऊंगा,

मछलियां बोलीं—भद्र! ऐसा ही सही?

तब बगुला मछलियों को एक २ करके ले जाता और खा जाता। बाद में कॅकड़े ने उसे कहा—भाई बगुले! मुझे भी वहां ले चलो। तब उस विचित्र केकड़े के मांस खाने की इच्छा वाले बगुले ने उसे लेजाकर स्थल पर रख दिया। केकड़े ने भी मछलियों के काँटों से भरे हुए भूमि भाग को देख कर सोचा—हाय मैं अभागा मारा गया! अच्छा ऐसा ही है। अब अवसर के अनुसार व्यवहार करूंगा। ऐसा विचार कर केकड़े ने उसकी गर्दन काट दी। बगुला मर गया। इस लिए मैं कहता हूं बहुत मछलियां की—इत्यादि।

इस पर चित्र वर्ण बोला--हे मन्त्री सुनो ! मैं ने यह सोचा है। कि ठहरा हुआ राजा मेघवर्ण कपूर द्वीप की जितनी उत्तम चीजें हैं वे हमें उपहार में भेजे करेगा। जिससे हम विन्ध्याचल में बड़े सुख से रहेंगे।

दूरदर्शी ने हंस कर कहा —राजन् !

(१२) जो न आने वाली चिन्ता करके खुश होता है, वह बर्तन फोड़ने वाले ब्राह्मण की तरह तिरस्कार को पाता है॥

राजा बोला--यह कैसे ?

मन्त्री ने कहा--

बर्तन फोड़ने वाले ब्राह्मण की कहानी।

देव कोट नाम के शहर में देव शर्मा नाम का ब्राह्मण रहता था। उसने वैशाख की संक्रान्ति पर सत्तुओं से भरा हुआ प्याला प्राप्त किया! उसे लेकर वह कुम्हार के बर्तनों से भरे आंगन की एक ओर से, गर्मी से सताया हुआ, लेट गया, फिर सतुओं की रक्षा के लिए एक डण्डा लेकर सोचने लगा— यदि मैं सत्तुओं का प्याला बेच कर १० कौड़ियां प्राप्त करूंगा तो उन कौड़ियों से घड़े, प्याले खरीद कर कई बार उस रक़म को बढ़ा कर सुपारी वस्त्रादि खरीद कर और लाखों रु० जोड़ कर चार विवाह करलूंगा। पश्चात् उन पत्नियों में जो ज्यादा सुन्दर होगी उस से ज्यादा प्यार करूंगा। जब वे सौकने आपस में लड़ेंगी। तब मैं क्रुद्ध होकर उन्हें डण्डे से पीटूंगा। यह कहते ही उसने डण्डा दे मारा। उस सत्तुओं का प्याला चिकना चूर हो गया और बहुत से बर्तन भी फूट गए। उस शब्द को सुनकर आए हुए कुम्हारों ने उन बरतनों

को देख कर ब्राह्मण का बड़ा अपमान किया और उसे घर से निकाल दिया। इस लिए मैं कहता हूँ न आई हुई—इत्यादि।

तब राजा ने एकान्त में गीध को कहा है प्यारे जैसा करना है, कहो। बोला—सुनो, राजन्! क्या हम ने सेना के घमंड पर दुर्ग तोड़ा है या आपके प्रताप से निश्चित किए हुए उपाय से ?

राजा बोला—आप के उपाय से गीध बोला—यदि आप मेरा कहा मानते हो तो अपने देश को लौट जाओ। नहीं तो वर्षा ऋतु के आने पर दूसरे की भूमि में ठहरे हुए हम लोगों के लिए अपने देश में जाना भी दुर्लभ हो जाएगा। इस लिए सुख तथा यश की प्राप्ति के लिए सन्धि करके जाओ किला तोड़ दिया हैं और यश भी प्राप्त कर लिया है। अब मेरा विचार तो यह है कि—

(१३) जो (मन्त्री या सेवक) राजा को प्यास या कड़वा छोड़कर बुरी लगने वाली सच्ची बातें कह देता है, उससे ही राजा सहारे वाला होता है॥

और भी—

(१४) मनुष्य को चाहिए कि बराबर बल वाले के साथ भी सन्धि कर ले क्योंकि युद्ध में विजय निश्चित नहीं होती। क्या तुल्य बल वाले सुन्द उपसुन्द नाम वाले राक्षस नष्ट नही हो गए॥

राजा बोला—यह कैसे ?

मन्त्री कहने लगा—

सुन्द और उपसुन्द की कहानी

प्राचीन काल में सुन्द और उपसुन्द नाम दो बड़े उदार राक्षस थे, उन्होंने बड़े २ क्लेशों से त्रिलोकी की राज्य की इच्छा से चिरकाल तक महादेव की पूजा की । तब उन पर भगवान् सन्तुष्ट हुए, बोले— वर मांगो । इस पर अन्दर बैठी हुई सरस्वती के कारण वे और कुछ मांगना चाहते हुए भी और कुछ मांग बैठे । यदि हम दोनों पर भगवान् खुश है तो आप अपनी प्यारी पत्नी पार्वती को हमें दे दो । हमारे क्रुद्ध हुए भगवान ने वरदान जरूरी होने के कारण, उन मूर्खों को पार्वती दे दी । तब उसके रूप के सुन्दरता के कारण मुग्ध हुए, उत्सुक मन वाले, पाप से अन्धे हुए, और यह मेरी है, इस तरह आपस में झगड़ते हुए उन दोनों ने यह सलाह की कि किसी निर्णय करने वाले पुरुष से पूछो भगवान् वृद्ध ब्राह्मण के रूप में आकर वहां उपस्थित हुआ । दोनों ने उस ब्राह्मण से पूछा ! हम दोनों ने इस को अपने बल से पाया है, हम दोनों में यह किस की हो ? ब्राह्मण ने कहा—

(१५) वर्ण श्रेष्ठ होने के कारण ब्राह्मण की पूजा होती है। बलवान् होने से क्षत्रिय की और धन धान्य अधिक होने से वैश्यं की पूजा होती है । और शूद्र की पूजा निज की सेवा करने के कारण होती है ॥

सो तुम क्षत्रिय धर्म पालन करने वाले हो अतः युद्ध ही तुम्हारा नित्य धर्म है । भगवान् के ऐसा करने पर 'इस ने ठीक कहा है' यह मान कर समान बल वाले वे दोनों एक साथ

ही एक दूसरे पर चोट करके नाश हो गए। इस लिए मैं कहता हूँ—बराबर बल वाले के साथ—इत्यादि।

राजा बोला—आप ने पहले क्यों नहीं कहा?

मन्त्री बोला—क्या मेरा वचन आप ने अन्त तक सुना?

तब यह युद्ध मेरी राय से नहीं शुरु हुआ। क्योंकि यह हिरण्यक गर्भ सज्जनों जैसे विचार रखता है। इसलिए इससे लड़ना उचित नहीं, जैसे कहा भी है—

(१६) सच्चा, श्रेष्ठ, धार्मिक, दुष्ट, भाई बन्धुओं से मिला हुआ बलवान् और अनेक युद्ध में जीतने वाला, ये सात पुरुष सन्धि करने योग्य हैं॥

(१७) बलि के साथ युद्ध करना चाहिए 'कोई सिद्धान्त नहीं या ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। बादल कभी भी वायु के खिलाफ़ नहीं चलता।

(१८) अनेक युद्धों में विजय प्राप्त कर लेने वाला व्यक्ति जिसके साथ सन्धि कर लेता है; तब उसके प्रताप से सभी शत्रु उसके वश मे आ जाते हैं।

सो क्योंकि यह राजा बहुत गुणों से युक्त है, इस लिए सन्धि करने योग्य है। चकवा बोला—हे दूत! सब कुछ जान लिया, तुम जा कर जल्दी लौट जाओ।

इस पर राजा ने चकवे से कहा—सन्धि न करने योग्य मनुष्यों के नाम सुनना चाहता हूँ।

मन्त्री बोला—राजन् मैं कहता हूँ सुनिए—

(१९) बालक हो, बूढ़ा हो, बहुत देर का रोगी हो, अपनी जाति द्वारा बाहर निकाला हुआ हो, डरपोक हो, दूसरों को

डराने वाला हो, लोभी या जिसका मन्त्री लोभी हो।

(२०) जिसकी प्रजा असन्तुष्ट हो, जो विषयों में लगा हुआ हो, जिसका मन्त्र बहुत लोगों को पता लग जाए और जो देवता ब्राह्मणों का निन्दक हो।

(२१) जो भाग्य का मारा हुआ हो, जो भाग्य पर विश्वास रखने वाला हो, जो अकाल की विपत्ति से ग्रस्त हो, और जो सेना के कष्टों से घिरा हो।

(२२) जो अपने देश से दूर हो, जिसके बहुत शत्रु हों जो अवसर के बिना युद्ध ठानने वाला हो, जो सत्य धर्म से दूर हो, ये बीस पुरुष हैं, जिनके साथ सन्धि नहीं करनी चाहिए।

(२३) इन शत्रुओं से सन्धि न करे। केवल युद्ध ही करे। क्योंकि यह युद्ध करते हुए जल्दी ही शत्रु के वश में आ जाते हैं।

और भी कहता हूँ। सन्धि, विग्रह, आसन, बलवान् का सहारा, फूट ये छः गुण हैं। कर्मों के पुन का उपाय, पुरुषों और द्रव्य का संग्रह, आपत्ति आने पर उसका निराकरण, काम की सिद्धि ये पांच मंत्र के अङ्ग हैं। शाम, दान, रण, भेद ये चार उपाय हैं। उत्साह शक्ति, मन्त्र शक्ति, प्रभु भक्ति ये तीन शक्तियां हैं। यह सब सोच कर बड़े पुरुष विजय के अभिलाषी होते हैं।

(२४) जो लक्ष्मी प्राणों के छोड़ने के मूल्य से भी नहीं मिलती, वह चञ्चल होने पर भी नीतिज्ञ के पास दौड़ कर आती है। जैसे कहा है—

(२५) जिसका समान रूप से विभक्त धन है, गुप्त रहने

वाला दूत है, और ठीक प्रकार से सुरक्षित मंत्र है। और जो मनुष्यों से अप्रिय नहीं बोलता, वह समुद्र पर्यन्त पृथ्वी पर शासन करता है।

यद्यपि बड़े मन्त्री गृध्र ने सन्धि का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, तो भी वह राजा अभी हुई जय को अभिमान के कारण नहीं मानता। सो हे देव! ऐसा करो, सिंहलद्वीप का महाचल नाम का सारस राजा हमारा मित्र जम्बुद्वीप में प्रकोप उत्पन्न कर दे।

'ऐसे ही हो' यह कह कर राजा ने विचित्र नाम वाले बगुले को गुप्त पत्र दे कर सिंहलद्वीप भेज दिया।

इस के बाद दूत ने आ कर कहा कि हे देव! वहां का प्रस्ताव सुनों। गीध ने वहां यह कहा कि हे देव! मेघवर्ण वहां बहुत समय तक रहा है। वह जानता है कि हिरण्यकगर्भ सन्धि के योग्य गुणों से युक्त है, या नहीं। तब राजा ने उसे बुला कर पूछा, हे कव्वे! वह हिरण्यकगर्भ कैसा है? और चकवा मन्त्री कैसा है?

कव्वे ने कहा—हे देव! हिरण्यकगर्भ राजा युधिष्ठर की तरह उदार हृदय है। चकवे जैसा मन्त्री कहीं भी दिखाई नहीं देता। राजा बोला—यदि ऐसा हो तो कैसे तूने उसे धोखा दिया। मेघवर्ण ने हंस कर कहा—हे देव!

(२६) विश्वास रखने वालों के ठगने में क्या चतुराई है? गोदी में चढ़ कर सोए हुए को मारने में क्या पुरुषार्थ है?

हे देव! सुनो, उस मन्त्री ने पहले दिन ही मुझे जान लिया था। पर वह राजा बड़ा ही उदार हृदय है। इसी कारण मैंने

उसे ठग लिया।

जैसा कि कहा है—

(२७) जो दुष्ट को अपनी समानता से सत्यवादी समझता है। वह ऐसे ठगा जाता है जैसे बकरे के कारण धूर्तों से ब्राह्मण ठगा गया।

राजा ने कहा—यह कैसे?

मेघवर्ण बोला—

तीन धूर्तों की कहानी

गौत्तम के बन में कोई यज्ञ को आरम्भ करने वाला ब्राह्मण था। दूसरे काम से यज्ञ के लिए बकरा खरीद कर कन्धे पर रख कर जाते हुए उस ब्राह्मण को तीन धूर्तों ने देखा। फिर वे धूर्त यदि बकरा किसी प्रकार से मिल जाय तो बुद्धि की चतुराई समझी जाए यह सोच कर मार्ग में तीन वृक्षों के नीचे एक २ कोस के फासले पर उस ब्राह्मण का आना देख कर ठहर गए उन में से एक धूर्त से जाता हुआ वह ब्राह्मण कहा गया-हे ब्राह्मण! क्यों कुत्ते को कन्धे पर उठा रहे हो? ब्राह्मण ने कहा यह कुत्ता नहीं है। किन्तु यज्ञ का बकरा है। इसके बाद दूसरे समीप ही बैठे हुए धूर्त ने ऐसे ही कहा। यह सुन कर ब्राह्मण बकरे को भूमि पर रख, बार २ देख, फिर कंधे पर धारण कर डोलती बुद्धि वाला चल पड़ा।

क्योंकि—

(२८) अच्छे आदमियों की बुद्धि भी दुष्टों के वचन से डोल जाती है। उन दुष्टों के वचनों से विश्वास दिलाया हुआ

यह चित्रकर्ण की तरह मर जाता है।

राजा ने कहा— यह कैसे ?

उसने कहा—

किसी वन में मदोत्कट नाम का शेर रहता था। उसके तीन सेवक थे। काक, व्याघ्र और गीदड़। उन्हों ने घूमते हुए किसी ऊंट को देखा और पूछा। साथ से बिछड़े हुए आप कहां से आये हो ? उसने अपना हाल कह दिया। फिर उन्हों ने उसे ले जाकर शेर के हवाले कर दिया।

उसने अभय वचन कह कर 'चित्रवर्ण' यह नाम रख कर ठहरा लिया।

उसके बाद सिंह के शरीर की कमजोरी के कारण और बहुत वर्षा के कारण और भोजन न मिलने से वे दुःखी हो गए। फिर उन्हो ने सोचा कि जैसे स्वामी चित्रवर्ण को मार दे, वैसा करना चाहिए। इस घास खाने वाले से क्या लाभ है।

व्याघ्र ने कहा—स्वामी ने इसे अभयदान देकर कृपा की है। सो कैसे हो सकता है ?

कवे ने कहा—इस समय दुर्बल स्वामी पाप भी करेगा क्योंकि—

(२६) भूख से पीड़ित स्त्री अपने पुत्र को भी छोड़ देती है। भूखी नागिन अपने अण्डे भी खा लेती है। भूखा क्या पाप नहीं करता, क्षीण मनुष्य निर्दय हो जाते हैं।

(३०) मत्त, प्रमत्त, उन्मत्त, थका हुआ, क्रोधी' भूखा, लोभी, कायर, शीघ्रता, करने वाला और कामी ये कामी धर्मज्ञ नहीं होते।

यह सोच कर सभी शेर के पास गए, सिंह ने कहा क्या कुछ खाने के लिए मिला—उन्होंने कहा कि यत्न करने पर भी कुछ प्राप्त नहीं हुआ। सिंह ने कहा कि अब जीने का क्या उपाय है ? कव्वे ने कहा-हे देव! स्वाधीन भोजन के छोड़ने के कारण यह सर्व नाश उपस्थित हुआ है।

सिंह ने कहा—यहां कौन सा स्वाधीन भोजन है ? कव्वे ने कान में कहा कि चित्रवर्ण है सिंह ने पृथ्वी को छू कर कानों को छुआ और कहा कि अभय बचन देकर हम इसे लाए हैं। सो यह कैसे हो सकता है।

(३१) जैसा सभी दानों में बड़ा दान अभय दान है, वैसा न भूमि का, न सोने का न गौ का और अन्न का दान है।

और भी—

(३२) सभी कामनाओं को देने वाले अश्वमेध का जो फल है, शरणागत की अच्छी तरह रक्षा करने से वही फल प्राप्त हो जाता है।

कव्वे ने कहा—कि आप से वह मारने के योग्य नहीं है, पर ऐसा करें, जिस से वह अपने शरीर दान को स्वयं स्वीकार करे। सिंह यह सुन कर चुप रहा। फिर वह कव्वा अवसर पा कर कपट कर, सब को ले कर सिंह के पास गया।

इसके बाद कव्वे ने कहा—हे देव! यत्न करने पर भी आहार नहीं मिला।

आप कई दिनों के उपवास के कारण दुःखी हैं, सो मेरा हैमांस खा लें।

क्योंकि—

(३३) समग्र का मूल स्वामी है। मूल सहित वृक्षों में ही किया गया यत्न सफल होता है, यदि मूल रूप स्वामी न रहे तो हमारी क्या दशा होगी ॥

सिंह ने कहा—मर जाना अच्छा है, ऐसे काम में लगना ठीक नहीं, गीदड़ ने भी वैसा ही कहा। सिंह ने कहा कि ऐसा मत कहो। इसके व्याघ्र ने कहा। मेरे शरीर से आप जीवन धारण करें। सिंह ने कहा यह कभी उचित नहीं।

फिर जिसे विश्वास हो चुका था, उस चित्रवर्ण ने भी अपना शरीर देने के लिये वैसा ही कहा, तो उसके बचने से व्याघ्र ने उसका पेट फाड़ कर मार दिया, और सबने खा लिया।

इस लिए मैं कहता हूँ कि 'सत्य को मति डोल जाती है— इत्यादि।

फिर ब्राह्मण तीसरे धूर्त का वचन सुन कर अपनी मति का भ्रम समझ कर बकरा छोड़ कर स्नान कर अपने घर चला गया। उस बकरे को ले जा कर उन धूर्तों ने खा लिया। इस लिए मैं कहता हूँ—अपनी समानता से जो जानता है- इत्यादि।

राजा ने कहा—हे मेघवर्ण! शत्रुओं के बीच तू ने देर तक समय व्यतीत किया है। कैसे उन से विनय आदि का सम्बंध निबहा? मेघवर्ण ने उत्तर दिया, हे देव? स्वामी का काम चाहने वालों से या अपने प्रयोजन से क्या नहीं किया जाता?

जैसे कहा भी ही है—

(३४) बुद्धिमान् काम पाकर कन्धे से भी शत्रुओं को उठा ले वृद्ध सांप न मेंढकों को मार दिया ॥

राजा ने कहा—यह कैसे?

मेघवर्ण ने उत्तर दिया—

जीर्णोद्यान मे मन्द विष नाम का सांप था। वह बूढ़ा होने के कारण आहार भी ढूंढने को असमथ हो कर सर के तट पड़ा रहा।

फिर दूर से ही किसी मेंडक ने उसे देखा और पूछा। क्यों आप आहार नहीं ढूंढते ?

सांप ने कहा—भद्र आप जाओ भाग्यहीन के सम्बन्ध में प्रश्न से क्या ?

तब उत्सुक हुआ वह मेंडक बोला—अवश्य कहो ? सांप भी बोला—भद्र ! सरपुर में रहने वाले वेदपाठी विद्वान् कौंडिन्य के २० वर्ष सर्वगुणयुक्त पुत्र को निर्दय स्वभाव के कारण मैं ने काट लिया। उस सुशील नामक पुत्र को मरा देख कर मूर्च्छित हो कौंडिन्य भी पृथ्वी पर लेट गया। अनन्तर ब्रह्मपुर में रहने वाले उसके सब बन्धुजन वहां आकर बैठ गए। कहा भी है—

(३५) उत्सव में, संकट में, युद्ध में, अकाल में राज्य के बदलने पर, राजद्वार में और श्मशान में जो साथ देता है, वही सच्चीं बन्धु है॥

वहां कपिल नाम का स्नातक बोला—अरे कौन्डिया ! तू मूर्ख जिस कारण तू इस तरह रो रहा है। सुन—

(३६) सेना, बल और हाथी घोड़ों वाले वे सब राजा कहां गए। जिनके वियोग का गमद भूमि अब तक भी कायम है।

और भी—

(३७) शरीर नष्ट होने वाला है, सम्पत्तियां आपतियां का स्थान हैं, मेल वियोग के साथ है, पैदा होने वाले सब पदार्थ

नष्ट होने वाले हैं ॥

क्योंकि—

(३८) जवानी, रूप, जीवन, धन का सञ्चय होना, ऐश्वर्य और प्रिय के साथ रहना—यह सब अनित्य हैं, अतः पण्डित को इन में मोह नहीं करना चाहिए ॥

(३९) जैसे समुद्र में लकड़ी दूसरी लड़की से मिलती है और मिलकर अलग हो जाती है, ऐसे ही मनुष्य का मेल है ॥

(४०) जैसे कोई यात्री छाया का सहारा लेकर बैठता है। आराम करके फिर चल देते हैं, इसी प्रकार यह प्राणियों का मेल है ॥

और भी—

(४१) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पांच चीज़ों से बने शरीर के अपने तत्त्व में चले जाने पर और जीव के कर्मानुसार अपनी २ योनि को प्राप्त हो जाने पर रोने की क्या जरूरत है ॥

तब कौंडिन्य उठ कर बोला--इस घर रूपी नरक में अब रहना नहीं चाहिए, सो मैं बन ही में जाऊंगा।

कपिल फिर बोला--

(४२) रागियों को बन में भी दोष होते हैं, और घर में ही पांचों इन्द्रियों का निग्रह तप है। जो अच्छे काम में लगता है मौर जिस ने राग को जीत लिया है उस विरक्त के लिए घर ही तपोवन है।

क्योंकि—

(४३) जिस किसी भी आश्रम में रहने वाला व्यक्ति दुःखी रहता हुआ भी सब जीवों में समता रखा हुआ धर्म

क्योंकि

(४६) इस संसार में दुःख ही दिखाई है। इस से यह संसार दुःख स्वरूप है। दुःख दूर हो जाने के उपाय को ही सुख नाम दे दिया जाता है॥

कौंडिन्य बोला—ठीक है। फिर शोक से व्याकुल हुए उस ब्राह्मण ने मुझे शाप दिया कि—तू आज से लेकर मेंडकों की सवारी होगा।

कपिल बोला—तुम अब उपदेश को सहन नहीं करते। तुम्हारा हृदय शोक से व्याप्त है तो भी कर्तव्य काम सुनो—

(४७) सङ्ग सदा त्याग देना चाहिए परन्तु यदि छूट न सके तो वह सङ्ग सज्जनों से करना चाहिए। क्योंकि सज्जनों का सङ्ग ही दवाई है।

यह सुन कर उस कौंडिन्य ने कपिल के उपदेश रूप अमृत से शोक की अग्नि बुझा कर विधि के अनुसार दण्ड ग्रहण किया सन्यासी हो गया। इस लिए मैं ब्राह्मण के शाप से मेंडकों को अपने ऊपर चढ़ा कर ले जाने के लिए यहां बैठा हूँ। उस मेंडक ने जाकर जाल पाद नामक मेंडकों के राजा आकर उस सांप की पीठ पर चढ़ा। वह सांप उसे पीठ पर चढ़ा कर अद्भुत प्रकार की गति से घूमने लगा दूसरे दिन चलने में असमर्थ हुए उसे मेंडकों के राजा ने कहा— आज आप मन्द गति वाले क्यों हैं? सांप बोला—देव! भोजन न मिलने से मैं निर्बल हूँ।

मेंडकों का स्वामी बोला—मेरी आज्ञा से इन मेंडकों को

खा 'फिर यह आपकी बड़ी कृपा स्वीकार है' ऐसा कह कर धीरे धीरे मेंडकों को खा गया। इस लिए मेंडकों से खाली होते तालाब को देख कर मेंडकों का राजा भी उसने खा लिया। इस लिए मैं कहता हूँ— कन्धे पर भी शत्रु को चढ़ा ले— इत्यादि।

देव। अब पिछला हाल कहने से क्या लाभ? राजा हिरण्यक गर्भ सब प्रकार से सन्धि योग्य है। सो सन्धि की यह मेरी राय है। राजा बोला— यह आप का क्या विचार है? क्योंकि इसे तो हम ने पहले ही जीत लिया है। अत: अब फिर यदि यह हमारी सेवा करता हुआ रहे तो रहे, नही तो उस के साथ युद्ध ही करना चाहिए।

इतने में जम्बु द्वीप से आकर तोता बोला—देव! सिंहलद्वीप का सारस राजा अब जम्बुद्वीप को घेर कर पड़ा हुआ है।

राजा घबरा कर बोला—क्या कहा? तोते ने पहले कहा हुआ वचन फिर भी कहा। गीध ने अपने मन में कहा। वाह रे! सर्वज्ञ मन्त्री चकवे! वाह! तुम ने अच्छा किया। राजा क्रोध से बोला—तब तक युद्ध बन्द रहे, पहले जा कर ही उस की जड़ उखाड़ता हूँ। दूरदर्शी हंस कर बोला—

शरद ऋतु के मेघ की प्रकार व्यर्थ ही गम्भीर को गर्जन कभी नहीं करना चाहिए। क्योंकि बड़े लोग अक्सर अर्थ या अनर्थ को जाहर नहीं करते।

और भी—एक ही समय राजा बहुत से घात करने वाले शत्रुओं से न लड़े, क्योंकि भयंकर सांप भी बहुत से कीड़ों से ज़रूर मारा जाता है।

देव ! बिना सन्धि क्या आप यहां से जा सकते हैं ? क्योंकि यह हमारे पीछे क्रोध करेगा।

और भी—

(५०) जो अर्थ के असलीयत को न जान कर क्रोध ही के वश में हो जाता है, वह मूर्ख दुःखी होता है, एक ब्राह्मण नेवले से दुःखी हुआ।

राजा बोला—यह कैसे ?

दूरदर्शी कहता है—

ब्राह्मण और नेवले की कहानी

उज्जयिनी में माधव नाम का ब्राह्मण था। उसकी प्रसूता स्त्री बालक की रक्षा के लिए ब्राह्मण को बिठा कर स्नान करने के लिए गई। उसी समय उस ब्राह्मण को राजा के यहां से पार्वण श्राद्ध की वस्तुएं देने के लिए बुलावा आया। यह सुन कर ब्राह्मण ने स्वभाव की दरिद्रता के कारण सोचा—यदि शीघ्र न जाऊंगा तो कोई दूसरा सुन कर श्राद्ध की चीजें ले लेगा। क्योंकि—

(५१) लेना देना और कर्त्तव्य कर्म—इनके शीघ्र न करने से काल उनका रस पी जाता है, देरी करने से काम बिगड़ जाता है।

किन्तु बालक का यहां रक्षक नहीं है। तो क्या करूं ? अस्तु, चिरकाल से पुत्र समान पाले हुए इस नेवले को बालक की रक्षा में रख कर जाता हूँ। वैसा करके चला गया। तब इस नेवले को बालक के नजदीक आते हुए काले सांप को देख कर मार

कर क्रोध से टुकड़े टुकड़े कर खा लिया। तब वह खून से रंगे हुए मुख और पैरों वाला नेवला ब्राह्मण को आता देख शीघ्र समीप जा कर उस के चरणों में लोटने लगा। बाद में ब्राह्मण ने उसे इस प्रकार देख 'इस ने बालक को खाया है' ऐसा जान नेवले को मार डाला। इसके बाद जब समीप जा कर ब्राह्मण ने बालक को देखा, तब बालक को स्वस्थ और सांप को मरा हुआ पाया। बाद में उस उपकारी नेवले को देख ब्राह्मण बड़ा खिन्न हुआ। इस लिए मैं कहता हूँ—जो अर्थ तत्त्व को जान कर............इत्यादि।

और भी—

(५२) काम, क्रोध, मोह, लोभ, अभिमान और मद इनछ शत्रुओं को छोड़ना चाहिए। इनके छोड़ने से राजा सुखी होता है।

राजा बोला—मन्त्री क्या आप का यही निश्चय है?

मन्त्री बोला—हां ऐसा ही हो। क्योंकि—

(५३) श्रेष्ठ अर्थों का स्मरण करना, तर्क करना, ज्ञान का निश्चय, दृढ़ता और मन्त्र की रक्षा, ये मन्त्रियों का परम गुण हैं।

और भी—

(५४) मनुष्य कोई भी काम एक दम न करे। क्योंकि न विचारना भारी विपत्तियों का घर है। गुणों को चाहने वाला सपंत्ति या सोच समझ कर काम करने वाले मनुष्य को प्राप्त हो जाती है।

सो राजन्! यदि अब मेरी बात मानो तो सन्धि करके जाओ।

क्योंकि—

(५५) यद्यपि अभीष्ट काम को सफल करने के लिए चार उपाय बताये गए हैं, तथापि उनका फल तो गिनती मात्र ही है, क्योंकि असली सफलता तो सन्धि से ही प्राप्त होती है ॥

(५६) मूर्ख आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है और बुद्धिमान् उस से भी शीघ्र किया जा सकता है किन्तु जो व्यक्ति थोड़े से ज्ञान के कारण घमण्डी बन जाए उसे तो ब्राह्मण भी प्रसन्न नहीं कर सकता ॥

यह धर्मात्मा राजा और मन्त्री सर्वज्ञ विशेष कर सन्धि योग्य हैं। मैं ने मेघवर्ण के कहने से और उसके द्वारा किये गए कामों से पहले पता कर लिया था। क्योंकि—

(५७) गुणों को गुप्त रखने वाले मनुष्य कर्म से जाने जाते हैं। इस लिए मनुष्य गुप्त स्वभाव वालों के काम का पता फलों द्वारा लगाये ॥

राजा बोला—उत्तर प्रत्युत्तर को खत्म करो। जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसा करो। यह विचार करके कि जैसा उचित होगा, वैसा करेंगे। ऐसा कह महामन्त्री गीध दुर्ग के अन्दर गया। तब दूत बगुले ने आकर हिरण्य गर्भ को कहा—

राजन्! सन्धि करने के लिए महामन्त्री गीध हमारे पास आया है। राजहंस बोला—हे मन्त्री! वह फिर कोई चाल चलने आया होगा। सर्वज्ञ ने हंस कर कहा—वह शंका के योग्य नहीं है। वह तो उदारचित्त और दूरदर्शी है। या मन्द-बुद्धि वाले लोगों की यही दशा होती है कि कभी तो शंका नहीं करते और कभी प्रत्येक बात में शंका करते हैं।

जैसे कहा है—

(५८) दुष्ट से ठगे गये लोग सज्जनों पर भी विश्वास नहीं करते। दूध से जला हुआ बालक दही को भी फूकें मार कर खाता है॥

सो हे राजन्! उसकी पूजा के लिए यथाशक्ति रत्न और भेंट की सामग्री त्यार करो। ऐसा हो चुकने पर मन्त्री गीध को दुर्ग के द्वार से लाकर और उसका सत्कार करके चकवे ने उसे राजा के दर्शन कराये। और वह दिये गये आसन पर बैठ गया है। चकवा बोला—सब कुछ आपके आधीन है, इच्छानुसार इस राज्य का उपभोग करो।

राजहंस ने कहा—हां ऐसा ही हो।

दूरदर्शी ने कहा—ऐसा हो सही, अब बहुत प्रपंच आदि से कोई मतलब नहीं। अब सन्धि के लिए चलो। राजा चित्र वर्ण बड़ा प्रतापी है।

चकवा बोला—जिस प्रकार की सन्धि करनी हो, वह भी कहो।

गीध बोला—इन दोनों राजाओं की सत्यवचन को आगे रख कर कांचन नाम की सन्धि करादो।

सर्वाज्ञबोला—ऐसा ही सही।

तब राजहंस से वस्त्र आदि की भेंटों से पूजा हुआ वह दूरदर्शी मन्त्री प्रसन्नचित्त से चकवे को लेकर मोर राजा के पास गया। वहां चित्र वर्ण ने गीध के वचनों के अनुसार बहुत मान से सर्वज्ञ के साथ बात चीत करके और उस सन्धि को स्वीकार करके उसे राजहंस के पास लौटा दिया।

दूरदर्शीबोला--राजन् ! हमारा मनोरथ सफल हो गया लौटकर अपने स्थान विन्ध्याचल को चलो। तब सभी ने अपने स्थान पर पहुँच कर मनोवांछित फल पाया। इति

विष्णु शर्मा ने कहा—और क्या कहूँ ? वह बताओ।

राजपुत्रों ने कहा--आपकी कृपा से राजव्यवहार के अङ्ग को हम ने जान लिया। अब हम सुखी हैं।

विष्णु शर्मा बोले--यद्यपि यह बात ऐसी है तथापि यह कुछ और भी है—

(५६) जब तक महादेव जी हिमालय की पुत्री के साथ प्रेमपूर्वक रहें, जब तक लक्ष्मी श्री विष्णु भगवान् के हृदय में, बादल में बिजली की भांती, निवास करे। और जब तक जङ्गल की आग के बराबर यह मेरु पर्वत—जिसकी चिंगारों के तुल्य यह सूर्य है, रहे। तब तक नारायण पण्डित का रचा हुआ यह कथा संग्रह भी प्रचलित रहे॥

----

१ मित्र लाभ

अभ्यास — १

१. अनधिगतानि शास्त्राणि यैः। उन्मार्गे गच्छन्ति ये ते उद्विग्नं मनो यस्य स। बहुव्रीही। पण्डितानां सभाम्। नीति शास्त्रस्योपदेशेन तत्पुरुष।

२. नरपतिः नरपतिम्, मनः मनसम्, गुणी, गुणिनम् सभा सभाम्, विद्वान् विद्वांसम्, काञ्चनम् काञ्चनम्।

३. भूपितः+एकदा, नास्ति+अन्धः, कः+अर्थः भवेत्+वश्यः, राजा+उवाच, कः+चित्। नियम परीक्षा में नहीं हैं।

४. यौवन, नगर, शास्त्र, चक्षुस्, दान, मनस जन्मन्, नंपुसकलिंग संपत्ति स्त्री लिंग। वशं पुलिंग।

५. लट्। जनयति जनयतः जनयन्ति।
लोट—जनयतु जनयताम् जनयन्तु।
लट्—हन्ति हतः घ्नन्ति। लोट्—हन्तु हताम् घ्नन्तु।
लट्—भवति भवतः भवन्ति
लोट्—भवतु भवताम् भवन्तु।
लट्—करोति कुरुतः कुर्वन्ति
लोट करोतु कुरुताम् कुर्वन्तु

६. इस प्रश्न को पुस्तक से स्मरण करो।

अभ्यास

काक-कूर्म-मृग मूषिकानाम्

१. दीप्यते, श्रूयते, कथयते, स्तूयते, दृश्यते, भूयते, पठ्यते।
२. पठधातु शानच् प्र०। कृ धातु ण्यन्त क्तवतु प्र०। कथ धातु लोट् कर्मवाच्य।
ग्रह धातुण्यन्त तुमन्। कृ धातुण्यन्त तुमन्
३. अश्मन्, आकर, जाल, तण्डुल, पंकपुल्लिंग सुमन, नपुंसक लिंग।
४. पुरस्तात्—आगे पुरस्तात् वक्ष्यामि। आद्यः—पहला यस्याय आद्यः—श्लोकः। आशु—शीघ्र—आशुगच्छ। नाना—अनेक नाना जनाः सन्ति। वियति—आकाशमें वियति भानु रस्ति। निर्जने वने—सूने वन में निर्जने वने अस्मि। अद्य—आज—अवकाशी— अद्यऽस्ति।
५. प्रासादस्य पृष्टे, सुखेनोप विष्टानाम्, काकस्य कूर्मां द्वौनौं च। राज्ञः पुत्रैः कुमुदिन्याः नायकः, वृद्ध आसौ व्याघ्रः।
६. एकैकम्, एकश्चन्द्रः बृहस्पतिरिव।

अभ्यास—काक रचित मृग कथा—

१. मृगश्च काकश्च द्वन्द्व। हृष्टानि पुष्टानिचा—ङ्गानि यस्य व०व्री। बन्धुभिः हीनः तत्पु०। अज्ञात कुल शीले यस्य व० व्री।
मरीचयो माला यस्य तस्य बहु व्री। चित्राणि अङ्गानि यस्य व व्री।
२. आरूह्य, विहस्य, उपगम्य, अभिज्ञाय, निसृत्य
३. छेत्तुम, सोढ़म्, हन्तुमं, गन्तुम, स्थातुम, ज्ञातुम्।
४. निपुणाः मत्सपान् बध्नन्ति। मत्त दन्तिनः बध्नन्ति राहुः विधुं ग्रासति।

५. उक्तम्, गतः, युक्तम, हृतः, स्थितः, यातः पतितः ।

६. छेत्स्याते, करिष्यति गमिष्यति दास्यति, द्रक्ष्यति ।

अभ्यास जरद्गव गृध्र--

१. शावकैर्भयार्तैः ततस्तम्, तच्छ्रुत्वा, हतोऽस्मि चेद्वध्योऽयः, गृध्रो ब्रूते। अरावपि पूज्यः एवं नियम की आवश्यकता नहीं।

अस्मिन्तु, कीटोऽपि। नियम की आवश्यकता नहीं।

अभ्यास--कंकण लोभी पथिक---

१. कुशा हस्ते यस्य ब०व्री। अनेकानाम् गवां मानुषांणाश्च द्वन्द्व। गलिता नखा दन्ताश्च यस्य वहु व्रीहि। राज्ञः कुलम तत्पु०।
गगने विहरतीती ब०व्री। मूषिकानां राजातत्पु० धर्मश्चार्थश्च—कामश्च मोक्षश्च। द्वन्द्व।

२. शत्रन्त--जनयन्--पश्यन--ब्रुवन्,वदन् पटन्, पतन्।

३. दातव्यम्—कठितव्यम्—ग्रहीतव्यम्--कर्त्तव्यम्—भवितव्यम् गन्तव्यम्

४. कंकण, सन्देह, हस्तः दारा पुत्र पुल्लिंग, तपस्, शास्त्र

५. गतीः, गतेः दया दयायाः। साधून, साधोः। सरांसि सरसः। स्त्रियः स्त्रियाः नृपतीन, नृपते। नपुंसक घृत स्त्री०

६. धीयते, क्रियते स्थीयते, ईक्ष्यते, पठयते श्रूयते,।

अभ्यास—चूडांकर्ण हिरण्यक की कथा—

१. भक्षित, भक्षयित्वा। ताड़ित, ताड़यित्वा। खात खनित्वा। गृहित गृहीत्वा। मृत, मृत्वा त्यक्तः त्यक्तवा। स्थित, स्थित्वा।

२. व्याकरण से स्मरण करो।
अप्रसंगे, ऽवस्थितः—ब०व्री०। व्यथ या विरक्तः तत्पु०
चिरात् संचितम् तत्पु०।

३. सत्वोत्साहेन रहितः, शतया हीनः तत्पु०।
अर्थस्योष्मणा—तत्पु०। तृपया आर्तः तत्पु०। न जितानि इन्द्रियाणि येन स बहु व्रीही।

४. अवस्थाओं की आवश्यकता नहीं। इसकी उपपद विभक्तियाँ कण्ठस्थ करो।

५. ऋ, र ष के परे होने पर न को ण हो जाता है पदान्त में नहीं। नृणाम + नराणाम

६. द्वौ, द्वे, द्वे। त्रयः त्रीणि तिस्त्रः। चत्वारः चत्वारि चतस्त्रः

अभ्यास—संचय शील शृगालकी

१. ये व्याकरण की एक प्रकार की क्रियांएं हैं इन सब में ल्यप् प्रत्यय लगा है।

२. दीयते, हन्यते, पूज्यते, श्रूयते, जीयते जीव्यते, छिद्यते, स्थीयते।

३. मे तव्यम् प्राप्तव्यम् पतितव्यः हन्तव्यः कर्तव्यम्, मर्तव्यम्

४. उद्धृत्य, आलोच्य, उपसृत्य, विमुच्य, आनीय, परिज्ञाय, आच्छिद्य।

५. कोलाहल—शोर कोलाहलम् मा कुरु। सन्निधाने—समीप—मम सन्निधाने मातिष्ठ। आतिथ्यम् अतिथिसत्कार, अतिथिनाम् अतिथ्यम् कुरु। दुष्करम्, कठिन, पातकः—पाप, प्रत्यहम—हररोज इतस्ततः इधर उधर सत्वरम् जल्दी इनके स्वयं वाक्य बनाओ।

६. (क) वचन, तृण, उदक, मित्र, पात्र नपुसंक लिङ्ग। व्यवहार धर्म गेह पु०। करका भूमि स्त्री०।
(ख) मृगी, मारर्जारी, पूज्या, ब्रह्मचारिणी, नारी, काकी पत्नी, साध्वी, शृगाली।
उपविष्टः तथा आहतः में क्त प्रत्यय लगा है।

२. इसकी आवश्यकता नहीं।

३. शूकरः+हृष्टः। अचिन्तयत्+च। अहिः+एकम्। करोति+अरोगम् व्यसनेषु+आसक्तम् मयूराः चित्रिताः। कः=ईश्वरः।

४. संस्कृत में लिख कर गुरु जी से स्वयं शुद्ध कराओ।

५. इसके आय व्यय में कष्ट है अतः सुखकारी नहीं। रक्षा भी करनी कठिन है।

६. गमिष्यति, आगच्छत्। द्रक्ष्यति, अपश्यत्। मारिष्यति, अचिन्तयत्। छेत्स्यति, अच्छिनत्। यास्यति अयात्। स्पर्क्ष्यति, अस्पृशत्। लप्स्यते अलभत। दधाति, अदधात्।

अभ्यास सुहृद-भेद..........

अभ्यास— संजीवक पिंगलक की कथा

१. राजपुत्रा ऊचुः, उभयोरपि, तच्छुत्वा, चेष्टितान्येव एतज्ज्ञात्वा

२. निर्गतः उत्साहो यस्य ब० व्री०। खुरणाम् त्रयम् तत्पु०। हृष्टानि पुष्टानि चाङ्गानि चयस्य ब० व्री०। स्व भुजाभ्यां उपार्जितं यत् राज्यं तस्य सुखम् तत्पुरुष। पिपासया आकुलितः तत्पुरुष। करकटश्च दमनकश्च ताभ्याम् द्वन्द्व दरिद्रा क्रिया बहु० ब० लट् ल० प्र० पु०। जन धातु विधिलिङ् प्र० पु० एक वचन। वृध् धातु लङ् प्र० पु० ए० व० उद् उ० स्था लोट् म० पु० ए० व०

४. अचिरेण गमिष्यति। अधः गच्छ। क्षिप्रम् पठ। अहं चिराय तत्रातिष्ठम्। रहस्यं न वद। अलं विवादेन।

अभ्यास

१,२,३ ये प्रश्न स्वयं लिखकर अपने अध्यापक जी को
४ दिखाओ। जानाति, ब्रवीति, सेवते, याति, अस्ति, करोति हन्ति ददाति।

५ समुन्नतं लागूलं यस्य ब० व्री०। उन्नतौ चरणौ यस्य ब०व्री। विवृतं आसुयं येन स ब० व्री। प्रोत्सारितम् अर्धासनं येन, ब० व्री दुर्जनस्य चित्तस्य वृत्याः हरणे तत्पु०। उत्तम श्चाधमश्चतयोः द्वन्द्व।

कपूर पटक रजक की कथा।

१. वद्धः+तिष्ठति। कुक्करः ब्रूते। पापीयान्+त्वम् यत्+विपत्तौ। इति+उक्तवा।
२. अहश्च निशा च द्वन्द्व। आहारस्य दाने तत्पु० कुत्सितः भृत्यः ब व्री। कोपेन सह तत्पु०। निद्रायाः भंगः तत्पु०। दुष्टामति यस्य व.व्री०।
३. हृ धातु तुमन् प्र०। उपविश क्तः प्रत्यय। वच्+क्त्वा। विमृश धातु ल्यम् प्र०।
४. अध्यापक जी को लिखकर दिखाओ।

अभ्यास—दधिकरण विड़ाल की कथा।

१. प्रति+अहम्। अथ+एकदा। तत्+भयात् असौ+आह+दुर्वल—इति विक्रमात्+नैव।
२. महान् विक्रमोयस्य स व.व्री। अहः अहः प्रति अव्ययी

भाव। केसराणाम् अग्रम् तत् पुरुष। स्रस्य कन्दरे तत्पु०

३. लभ् धा० क्तप्र० । दृश् धातु क्त्वा । शी धा० शानच् प्र० लभ् धातु शानच् प्र० । गम् धा० क्त्वा प्र०

४. उत्तर लिखकर खुद अभ्यास करो।

अभ्यास— वानर घण्टा की कहानी

१. इत्युक्त्वा अवसरोऽयम् । तर्दा हमेनम् । फलान्याकीर्णानि । कश्चिच्चौर: ।

२. सरल ही हैं।

३. पलाय धातु शानच् प्र० । प्र० विशा धा० ल्यप् प्र० । प्राप् धा० क्त प्र० । खाद धा० क्त प्र० । आदा, धा० ल्यप् प्र० । पूज् धा क्त प्र० ।

४. कराला की कथा याद करो ;

अभ्यास—वायस दम्पत्योः कथा

१. तयोश्चापत्यानि । वायसो ब्रूते मयैतस्य । कस्मिंश्चित् । मृत्युरेव ।

२. जाया च पतिश्च द्वन्द्व । तस्मिन् कोटरे । अवस्थि तेन व० व्री । मदे उन्मत्तः यः स व० व्री । कनकस्य सूत्रम् तत्पु० ।

३. निवस् प्र० पु० ए० व० । ब्रू० लट् प्र० पु० ए० व० । त्यज्यताम्—त्यज् धातु । लोट् कर्मवाच्य । भक्ष धा० लट् प्र० पु० ए० व० कर्मवाच्य ।

४. यह उत्तर लिखकर दिखाओ।

अभ्यास—सिंह शशकयोः कथा—

१. कुर्वन्+अस्ति । एक+एकम् । समागतः+अस्मि । पशुभिः

+मिलिता । विहेन+उक्तम् ।

२. उत्तर सरल है । स्वयं लिखो ।

३. कृ धा० शतृ० प्र । धृ धाः क्तः प्र० । कृ धा कत्वा प्र० । दृश धा० तुमन् प्रत्यये । आगम् धा० ल्यप् प्र० ।

४. अद्य प्रभृति स पाठ्यनति । सत्वरमागच्छ । स पञ्चत्वं गतः ।

५. शिक्षा—प्रज्ञैव बलम् ।

अभ्यास--टिट्टिभ समुद्रयोः कथा ।

१. टिट्टिभोऽवदत, नन्विदम्, तान्यण्डानि अतोऽहम, तच्छक्ति ।

२. आसन्नः प्रसवोयस्या व० व्री । प्रमदाजने विश्वासः तत्पु० । अनुचित कार्यस्य आरम्भः तत्पु० । स्वजनस्य विरोधः तत्पु० । सृष्टयाः स्थितेः प्रलयस्य च हेतु, तत्पु० ।शोकेनार्ता

३. वद् धा० लङ् प्र० पु० ए० व० । सीद् धा० लट् प्र० पु० प्रच्छ धातु० लट्, प्र० पु० ए० व० । कथ् धातु लट् प्र० पु० ए० व० । निवस् धा० लट् प्र० पु० द्वि० व० ।

४. अन्तरम्:—फर्क, अनयोः किमन्तरम् । कृच्छ्रेण—कष्ट से कृच्छ्रेण कार्यमभवत् । पुरतः—आगे पुरतः किं भविष्यति द्रक्ष्यामि ।

५. विष्णु जी को इस कार्य के लिए लेजाकर अण्डे पुनः ले लिए ।

विग्रह । अभ्यास १

१. भवत् शब्द ५ मी व० व०, सरस् शब्द प्र० द्वि० ए० व०

अदस् प्र० ए० । मरुस्थल शब्द, ७वीं एक० ब० । राजन् पं० स० ए० व० । स्वामिन् द्वितीया० एक व० ।

२. सरल हैं ।

३. सन्ति+एव । राजा+उवाच । स्वभाव:+एव प्राक्+एव । आदौ+एव । दूरात्+एव । लिखकर स्मरण करो ।

अभ्यास २

१. सत्वरम्—शीघ्र, ७ सत्वरमागच्छ । दुःसहम्—दुःख से सहने योग्य, इदं कार्यं दुःसह वर्तते । मुधा—फजूल मुधा न वद । अचिरेण—शीघ्र—अचिरेणागच्छ । सर्वतः सभी ओर—ग्रामं सर्वतः जलं वर्तते । २—३—प्रश्न अनावश्यक है ।

४. मद्बलं तावत् पश्यत स्वामी । ततो राजा काकश्च स्वां प्रकृतिं जग्मतुः । गूढ़ा चारश्च यो जले थले च चरति । किन्तु देव स्वामी एव मूर्खाणाम् । त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं युज्यते किं पुनः द्वीपस्यै कस्य ।

५. जो बाहरी बातें न जाने—जैसे त्वं तु कूपमण्डूकोऽसि ।

खग वानरयोः कथा—

१. वर्षा श० स० ए० व० । पक्षिन् श० एक० व० । अस्मद् श० तृ० व० । धारासार श० तृ० व० । वृष्टि श० ५ वीं छ० एक व० । अणु शब्द एक व० ।

२. सरल ही है ।

३. सुखेन–सुख से, सुखेन गच्छ । एकदा—एकवार एकदा स तत्रगतः । विशाल—बड़ा एषविशालः वृक्षोऽस्ति । आरुह्य—चढ़ कर—वृक्षमारुह्य संस्थितः ।

४. कि शिक्षा ग्रहण करने योग्य को ही देनी चाहिए। अन्यथा हानि ही होती है।

५. मधुकरी, तरुणी, मातुली, वानरी, विदुषी, राज्ञी, महती।

अभ्यास–रजक गर्दभयोः कथा

१. पृच्छ लट् प्र० पु०। पूलङ् प्र० पु० ए० व०। ब्रू लट् प्र० ए० व०। अय् प्र० पु० ए० व०।

२. ततः+तेन। अथ+एकदा। यथा+इष्टम्। गर्दभः,+ अस्ति। लीलया+एव

३. चीत्कार के कारण।

४. तत् छ० ए०। चर्मन् तृ० या ए०। क्षेत्र सप्त० ए० व० (क्षेत्रपति) तृ ए० व०।

५. सुचिर—देरतक—सु सुचिरं तत्रातिष्ठत। दूरात्—दूर से दूरादेव पक्षिणः अपतन। सत्वरं—शीघ्र। सत्वरमागच्छ। उच्चै—ऊंचे से—उच्चैः पठ।

अभ्यास शशक गज यूथ कथा

१. वृष्टेः+अभावात्, अस्ति+अत्र यूथपतिः+आह, भवत+अन्ति कम्। सदा+एव उद्यतेषु+अपि-जिघ्रत +अपि।

२. कृ लट उ० पुं० व०। हन् लट् प्र० पु० ए० व०। ब्रू ल० प्र० पु० ए० व०। गम् लोट् म० पु० एक० ब०। विद्–धा लृ० प्र० पु० ए० व०।

३. यूथ पति श० द्वि० २. वचन। जीवन, ए० व०। जन्तु सप्त व०। गच्छत श० ७मी व० व०। स्पृशत श० प्र०

ए० व० ।

४. पश्चात्, समीप, हररोज, पास, वे समझी से, दूसरे दिन। वाक्य स्वयं रचो।

५. चान्द के नहाने से।

अभ्यास हंस मरण कथा

१. सूर्यस्य तेजसा, तस्य मुखम् मुखस्य व्यादानम् न सहित तत्पु० । हंसश्च काकश्च द्वन्द्व । ग्रीष्मस्य समयं, तत्पुरुष ।

२. साथ, थोड़ी देर बाद, न सहने वाला, ऊपर, बाण से।

३. कः+चित्। धनुः+काण्डम्। पान्थः+उत्थाय यावत्+ असौ, छाया+अपगता।

४. दुष्ट की सगति कभी नहीं करनी चाहिए।

अभ्यास वर्तक मरण कथा

१. काकश्च वर्तकश्च द्वन्द्व । समुद्रस्य तीरम् तत्पु० । दध्नः भाण्डम-तत्पु० । मन्दा गतिः, या तस्याः प्रसंगे तत्पु०।

२. वृक्ष, पक्षिन, पुं० तीर दीर्घ, भाण्डम् नपु० । भूमि, गति, स्त्री लि० ।

३. बर्तकश्चलितः, यावदसौ, ततस्तेन, अतोऽहम् विधायोर्ध्वम्

४. एक बार, रख कर, तब तक, यात्रा का प्रसंग वाक्य स्वयं रचो।

अभ्यास नीली वर्ण की कथा

१. अस्ति+अरण्ये, मृतः+इति, प्रणाम्य+ऊचुः, एकदा+ +एत्र, नगर+उपान्ते, ततः+उत्थातुम्।

२. नगरस्योपान्ते, व्याघ्रश्च सिंहाश्चतान् द्वन्द्व । वर्णमात्रेण विप्र+लब्धाः । सन्ध्याया समये जात्या स्वभावात् ।

३. पीछे, सवेरे, देखकर, आरम्भ कर, अधिकता, 'सपा हमेशा, वाक्य स्वयं रचो ।

४. आत्मन्, द्वि० ए० व० । स्वामिन् तृ ए० व० । अरण्य ७मी ए० व० । भगवती तृ० ए० व० विपएण श० द्वि० व० । नीति विद् प्र० व० पञ्चमी, द्वि० षष्ठी० ए० व० ।

५. पुस्तक से पढ़ो ।

वीरवर की कथा

१. समस्त पदों का स्वयं विग्रह करो और समास बताओ

२. द्वार ७मी १ व. । रात्रि ७मी. ए. व. । चतुर्थी ७मी । राजन् ३या ए., रुदन. १ वचन, छाया ७मी. एक वचन । भगवती ६ठी एक वचन । स्त्री २या १ वचन ।

३. दत्त, कृत, उक्त, गत, श्रुत । दत्तवत्, कृतवत्, उक्तवत् गतवत्, श्रुतवत् ।

४. शिरः+छेत्तुम्, कापि+अन्या शोक+आर्तया, न+एतत् राजा+आह, राज्ञः+लक्ष्मी, निः+पुत्रस्य,

५. चुरवाप, दयासहित, बाहर, देर तक, अब, जल्दी वाक्य स्वयम् ।

६. पठनेनालम्, पानायालम् ।

अभ्यास

नापित की कथा

१. स्मरिष्यति, हनिष्यति, भविष्यति, द्रक्ष्यति ।

२. चूड़ायांमाणिं, क्षीणानि पानितियस्य, यक्षाणामीश्वरेण,

धनस्यार्थी, सुवर्णस्य कलशः, निधेःप्राप्तिः, राज्ञःपुरुषैः।

३. धनार्थी, तृ. एव, महत् तृ. ए.। निधिप्राप्ति ष. ए.। भिक्षु छठी, पूर्वी ए आनीत तृ. ए.।

४. देर तक, आज, सवेरे, चुपचाप, अब तक, जीवन, हर रोज, ले कर।

५. क्षीणपापोऽसौ, यद्येश्वर, यावज्जीवम्, तच्च। प्राप्स्येयम्, अरण्ये, अहमप्येवम्।

अभ्यास

सन्धि

हंस कूर्म की कथा

१. मित्र, सरस्, वीर, काष्ठ, नपु, कूर्म, शत्रु, उपाय, विधिपु०।

२. हंसौ + आहतु। अथ + एकदा, धीवरैः + आगत्य, ततः + उक्तम्, कूर्म + आह, कच्छपः + वदति। यदि + अयम, मा + एवम्।

३. उषित, उषितवान्, पक्व, पक्ववान्, दग्ध, दग्धवान्, नीत-नीत, नीतवान्। श्रुत, श्रुतवान्।

४. चिरमत्रतिष्ठ, रामदासःतत्रगतः। अधुनात्रा गच्छ। प्रातःउत्तिष्ट, सुखेन पठ।

५. फुल्लानि उत्पलानि यत्र। संकटश्च विकटश्च नाम्नीययोः। धीवराणां। आलापाः, दृष्टः व्यति करो येन पदमूणां बलेन न प्राज्ञः।

६. अध्यापक जी को लिख कर दिखाओ।

अभ्यास

तीन मत्स्यों की कथा

१. सरस् ७मी ए. व.। नामन् ३या ए.। जाल पं. १ व.।
अस्मद् ३या ए. व.। इदम् ७मी ए. व.।

२. तावाहतुः। अस्मिन्नेव। नामैकः। तेनोक्तम्। मृतवदात्मानम्
यद्भावि।

३. पुराधातापि विस्मितः। अपरेणोक्तम्। यथाकार्यंकरणीयम्
यथाशक्ति पठ। उत्पन्नेविरोधे न कुशलम्।

४. बोलने से।

अभ्यास

बक नकुल की कथा

१. बकाः+निवसन्ति। नकुलैः+आगत्य। तत्र+अनेके।
सर्पः+तिष्ठति। विवरात्+आस्य।

२. स्वयं लिखो।

३. सरल ही है।

४. रहते हैं। खावें। कहा। ले कर। बिखेर दो। आकर,
देखना चाहिए। वृतान्त. चढ़ कर।

मुनि मूषिक की कथा

१ सन्धिच्छेद करो नियम की आवश्यकता नहीं।

२. मुनि ३या ए० व० । महर्षि छठी ए० व० । इदम् प्र० ए० व० । कुक्कर ५मी ए व० आत्मन् तृ० ए० । सर्व प्र० व० इदम् तृ० ए० व । क्रोड़ ७मी ए० व० ।

३. खादित खादितुम, वृद्ध वर्द्धितुम, धावित्त, धावितुम् भीत, भेतुम् । कृत, कर्तुम्, दृष्ट, द्रष्टुम् । उदित, वक्तुम्, स्थित स्थातुम. श्रुत श्रोतुम् ।

४. यह प्रश्न अनावश्यक है ।

५. स्वयं संस्कृत में लिखो ।

अभ्यास—बक और कुलीरक की कथा

१, दर्शयति, स्थापयति, गमयति, श्रावयति, नाययति हारयति ।

२. तत्र+एकः, मत्स्याः, ऊचुः । एक+एकशः समय उचितम्, इति+आलोच्य । हतः+अस्मि

३. समासों का स्वयं अभ्यास करो ।

४. दृश्यते, स्थीयते, गम्यते, श्रूयते, क्रीयते ।

५. संस्कृत में उत्तर लिखकर शुद्ध करो ।

भग्न भाण्ड द्विज की कथा

१. सक्तुभिः पूर्ण शरावः । सक्तूनां रक्षार्थम् । सक्तूनां क्षाथम् । विवाहा नां चतुष्टयम्, कोपेना कुलः । न आगतम् ।
शराव एकः । यद्येवम । कोपकुलोऽहम् शरावश्चूर्णितः ।

३. सुप्तवान् स्वप्तव्य, चिन्तित, चिन्तयितव्य कृत कर्तव्य क्षिप्त

क्षिप्तव्य दत्त, दातव्य।

४. प्राप्स्यति, क्रेष्यति, करिष्यति, ताड़यिष्यति, दास्यति, स्वप्स्यति।

५. अपने शब्दों में लिखो।

अभ्यास—सुन्दोपसुन्द की कथा

१. महान् उदार:। सुन्द: उपसुन्दश्च नाम्नो ययोतौ। चन्द्र शेखरे यस्य, विचारे मूदः, रूप लावण्ये च मुग्धः धर्म मनुगच्छति। द्विजानां सेवया।

२. महत् तृ० ए० ब०। इस प्रकार बताइये।

३. पहले, पहले वहां ठीक आपस में एक साथ।

४. अलं पठनेन, मया सह आगच्छ।

५. अपकार, अप्रिय, अनुत्साह, दुर्जन सन्धिच्छेद शत्रु, दुर्लभ।

अभ्यास— तीन धूर्तों की कथा

१, संन्धि च्छेद करो—स्वयं अभ्यास करो सरल प्रश्न है।

२, प्रस्तुतं, यज्ञं, येन, धूर्तानां त्रयाणां, मत्या: प्रकर्ष: क्रोशस्यान्तरेण, दोलाय मानामतिर्यस्य, स्वमते:विभ्रमः

३, ल्यप् प्रत्यय, शतृ प्र० कर्मवाच्य, ल्य प्‌ कर्मवाच्य, ल्य प्र० शानच्।

४, छल से

———

चित्र कर्ण ऊँट की कथा

१, त्रयः	तिस्रः २	त्रीणि
त्रीन्	तिसृभिः	,,
त्रिभिः	तिसृभ्यः २	त्रिभिः
त्रिभ्यः	तिसृणां	त्रिभ्यः
,,	तिसृषु	त्रयाणां
	त्रिषु	त्रिषु

२, भ्रमत् तृ व० ब० स्वामिन् षष्टि ए० कर्मन् ७ मी ए० सर्व तृ० व ०। अदस् —प्र० ए०। दान ७ वीं व०। अस्मद् तृ व०।

३. सार्थात् भ्रष्टः। शरीरस्य वैक्लव्यात् वृष्टेः कारणात्। कण्टकं भूनक्ति। क्षुधया आर्ता सिंहस्यान्तिकम्। जीवतस्योपायः। शरणे आगतः

४. सेवका स्त्रयः । तैभ्रमद्भिः । व्यग्रा बभूवुः किन्त्वस्माभिः।

५ बेखटके रहने का दान, समूह, मस्त, पागल, शीघ्रता भूलती है। भूखा।

६ कथा स्वयं लिखो।

अभ्यास—मन्द विसर्प की कथा

१. जीर्ण+उद्याने, सर्पः+आह, मूढः+असि, पञ्च+इन्द्रिय

इन्द्रियाणाम् निग्रहः, महत्+औषधम् न कुत्सितम्।

दया+ऊर्मिः, सर्पः तम अग्नौ+आगत्य

२ संजातं, कौतुकम् , यस्मै, ब्रह्मपुरे, वसन्तिति, राज्ञः द्वारे,

३. अगम, विपद्, अपायः, वियोगः, अरण्य, असौम्या, कृतघ्नः, अनित्यः

४. पतित, स्थित, कथित, उक्त, त्यक्त, खादित उदित ।

५. दूर से, भंग होने वाला, अनवसर क्रम से, आज, कहां ।

अभ्यास—ब्रह्मण और नकुल की कथा।

१. मैंने सोचा, आता है, लेगा, पिएगा, उसने खाया, हम दो ने देखा। कहता हूँ। वहः करें।

२. न क्रियमाणः, नञ तत्पु० बालकस्य रक्षायाम तत्पु० कृष्ण सर्पःकर्मधा०, रक्तेन विलिप्तं मुखं पादौ च यस्य ब० व्री०। चिरकालात् पालितम् तस्य चरणयोः।

३. राजन् सन्धि अश्विन्, चन्द्रमस् पु० कर्मन् न पु०। संपद (स्त्री०)
राजा राज्ञः सन्धिः सन्धीन्, मन्त्री—मन्त्रिणाम् चन्द्रमा—चन्द्रमस्सु। कर्म कर्माणि सम्पद् सम्पत्सु

४. यथार्थता को जाने बिना शीघ्रता से कोई कार्य नहीं करना चाहिए नहीं तो पीछे दुःख होता है।

५.

पु०	स्त्री०	
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
चतुरः	,,	,,

पु०	स्त्री०	
चतुर्भिः	चतसृभिः	शेष पुं० वत्
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	
,,	,,	
चतुर्णाम्	चतसृणाम्	
चतुर्षु	चतसृषु	

नोटः—पृष्ठ १३५ तीसरी लाईन से (धर्म के आगे) का आचरण करे। धर्म करने में लिङ्ग का कारण नहीं।

देखो—

यम, नियम, रूप, पुण्य, तीर्थ वाली, सत्य, रूप, जल वाली शील, रूप लहर वाली, इस आत्मा रूपी नदी में स्नान करो। हे पाण्डु पुत्र युधिष्ठर, केवल जल से ही आत्मा शुद्ध नहीं होती।

और विशेषकर—

४५) जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था, व्याधि और पीड़ा चार उपाय बताये गए हैं. तथापि उनका फल तो गिनती मात्र ही है, क्योंकि असली सफलता तो सन्धि से ही प्राप्त होती है ॥

Printed by Ram Labhaya Sethi
at the Co-operative Press, Ambala City
and published by
Prof. Sant Lal Goomer, Prop. Krishna Book Depot,
Ambala City.